राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय
मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-४, अंक-३ लखनऊ दिसम्बर २०१७ विक्रमी सं. २०७४ युगाब्द ५११८ पृष्ठ-३२ निःशुल्क

प्रधानमंत्री मोदी की 'मन की बात': हमें बहादुर नागरिकों, पुलिसकर्मियों, एवं सुरक्षाकर्मियों पर गर्व है!

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने २६ नवम्बर को 'मन की बात' के माध्यम से देश को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि छोटे-छोटे बच्चों को भी देश की समस्याएं पता हैं और उन्हें भी देश की चिंता है। उन्होंने याद दिलाते हुए बताया कि २६/११ को संविधान दिवस है, तो वहीं इसी दिन मुंबई पर हमला हुआ था। देश कैसे भूल सकता हैं कि ९ साल पहले २६/११ को आतंकवादियों ने मुंबई पर हमला बोल दिया था।

देश उन बहादुर नागरिकों, पुलिसकर्मियों एवं सुरक्षाकर्मियों का स्मरण करता है, उनको नमन करता है जिन्होंने अपनी जान गंवाई, यह देश कभी उनके बलिदान को नहीं भूल सकता।

पीएम मोदी ने कहा कि आज आतंकवाद ने भयंकर रूप ले लिया है। आतंकवाद ने मानवता को चुनौती दी है और भारत ४० साल से इसके खिलाफ लड़ रहा है। उन्होंने अपील की कि दुनिया मिलकर आतंकवाद का खात्मा करे। पीएम मोदी ने बताया कि ४ दिसम्बर को हम सब नौ-सेना दिवस मनाएंगे। भारतीय

नौ-सेना, हमारे समुद्र-तटों की रक्षा और सुरक्षा प्रदान करती है। मैं नौ-सेना से जुड़े सभी लोगों का अभिनंदन करता हूं। इस साल सिंतबर में रोहिंग्या मामले में हमारी नौसेना ने बांग्लादेश में सहायता पहुंचाई थी।

उन्होंने कहा कि मुझे यह देख कर काफी खुशी है कि हमारे किसान भाई मृदा स्वास्थ्य कार्ड में दी गई सलाह पर अमल करने के लिए आगे आए हैं और जैसे-जैसे परिणाम मिल रहे हैं, उनका उत्साह भी बढ़ता जा रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि किसान तो धरती का पुत्र है, किसान धरती-मां को बीमार कैसे देख सकता है? समय की मांग है, इस मां-बेटे के संबंधों को फिर से एक बार जागृत करने की।

गुजरात में लोग 'मन की बात' चाय के साथ सुन रहे थे। रविवार को चुनावी राज्य गुजरात में भाजपा नेताओं ने जनता के साथ चाय पीते हुए रेडियो पर मोदी के 'मन की बात' सुनी। राज्य की १८२ विधानसभा सीटों के ५० हजार १२८ मतदान केंद्रों पर 'मन की बात-चाय के साथ' कार्यक्रम हुआ। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह अहमदाबाद के दरियापुर में, पीयूष गोयल पोरबंदर, धर्मेंद्र प्रधान सूरत की लिम्बायत सीट, स्मृति ईरानी जूनागढ़, वित्त मंत्री अरुण जेटली ने सूरत के अदाजन क्षेत्र में 'मन की बात' सुनी। साथ ही उमा भारती, ज्वेल ओरांव, पुरुषोत्तम रुपाला, राज्य भाजपा अध्यक्ष जीतू वाघाणी, मुख्यमंत्री विजय रुपानी और गुजरात के कई मंत्री और विधायक-सांसदों ने विभिन्न क्षेत्रों में उपस्थित रहकर 'मन की बात' सुनी। ■

स्वदेशी क्रूज मिसाइल 'निर्भय' का हुआ सफल परीक्षण

बालेश्वर, ओडिशा। भारत ने स्वदेश निर्मित और लंबी दूरी की सब-सॉनिक क्रूज मिसाइल 'निर्भय' का ७ नवम्बर को सफल परीक्षण किया। यह मिसाइल ३०० किलोग्राम तक के आयुध ले जाने में सक्षम है। ओडिशा तट पर चांदीपुर से मिसाइल का परीक्षण किया गया। यह स्वदेश निर्मित मिसाइल प्रणाली का प्रयोग के तौर पर किया गया पांचवां परीक्षण है।

रक्षा वैज्ञानिकों को इस बार बिना किसी कमी के परीक्षण की आशा थी। मिसाइल के पहले किए गए चार परीक्षणों में से केवल २०१३ में किया गया परीक्षण ही सफल रहा था। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के सूत्रों ने बताया कि अत्याधुनिक क्रूज मिसाइल को यहां चांदीपुर में एकीकृत परीक्षण रेंज (आईटीआर) के लॉन्च कॉम्प्लैक्स-३ से विशेष रूप से डिजाइन किए गए लॉन्चर से सुबह करीब ११ बज कर करीब २० मिनट पर प्रक्षेपित किया गया।

डीआरडीओ के एक वैज्ञानिक ने मिसाइल के

प्रक्षेपण के तुरंत बाद कहा कि परीक्षण की सभी शुरुआती प्रक्रिया सफल रहीं। उन्होंने बताया कि विस्तृत आकलन के लिए ट्रैकिंग प्रणाली से डेटा हासिल किया जा रहा है। अडवांस्ड सिस्टम्स लैबरेटरी (एएसएल) द्वारा विकसित ठोस रॉकेट मोटर बूस्टर से संचालित इस मिसाइल की परिचालनगत रेंज १००० किलोमीटर है।

दी गयी जानकारी के अनुसार यह मिसाइल छह मीटर लंबी, ०.५२ मीटर चौड़ी है और इसके पंख २.७ मीटर तक फैले हैं। यह २०० से ३०० किलोग्राम तक के आयुध ले जा सकती है।

निर्भय का पहला परीक्षण १२ मार्च २०१३ को किया गया था और उस समय मिसाइल के एक हिस्से में खराबी आने के कारण उसने बीच रास्ते में ही काम करना बंद कर दिया था। दूसरा परीक्षण १७ अक्तूबर २०१४ को किया गया जो सफल रहा था। १६ अक्तूबर २०१५ को किए गए अगले परीक्षण में मिसाइल १२८ किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद अपने रास्ते से भटक गई थी। मिसाइल का अन्तिम परीक्षण २१ दिसंबर २०१६ को किया गया था और उस समय भी यह अपने निर्धारित रास्ते से भटक गई थी। ये सभी परीक्षण चांदीपुर से किए गए। ■

उत्तर प्रदेश निकाय चुनावों में भाजपा का जलवा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश निकाय चुनावों में पूरे प्रदेश में भाजपा का कमल पूरे जोर-शोर से खिला. इसका लाभ उसको गुजरात के विधानसभा चुनाव में भी मिलेगा. इसका कारण यह है कि यूपी और बिहार से बड़ी संख्या में लोग गुजरात में बसे हुए हैं. यूपी के निकाय चुनाव में जहां भाजपा ने विधानसभा वाली लहर कायम रखते हुए १६ में से १४ मेयर के पद जीते हैं, तो वहीं सपा और कांग्रेस की हालत और पतली हो गई है. बीएसपी ने वापसी करते हुए मेयर के दो पद जीते हैं. लेकिन सबसे खराब हालत कांग्रेस की रही. वह राहुल गांधी के गढ़ अमेठी में भी जीत के लिए तरस गई.

चुनाव परिणाम एक नजर में

महापौर की कुल सीटें- १६

भाजपा- १४ बीएसपी- २
कांग्रेस-० सपा-०

पार्षद की कुल सीटें- १२९९

भाजपा-५९६ सपा-२०२ बीएसपी-१४७
कांग्रेस-११० अन्य- २४४

पालिका अध्यक्ष की कुल सीटें-१९८

भाजपा-७० सपा-४५ बसपा- २९
कांग्रेस-९ अन्य- ४५

पालिका सदस्य की कुल सीटें- ५२६१

भाजपा- ९२१ सपा-४७७ कांग्रेस- १५७
बसपा- २६६ अन्य-३४४४

पंचायत अध्यक्ष की कुल सीटें- ४३८

भाजपा-१०० सपा-८३ बसपा-४५
कांग्रेस-१७ अन्य-१९३

पंचायत सदस्य की कुल सीटें -५४३४

भाजपा- ६६६ सपा-४५३ बसपा-२१७
कांग्रेस-१२६ अन्य- ३९७२ ■

अच्छे दिनों पर मुहर, नवंबर में आईं ३ राहत भरी खबरें

नई दिल्ली। नोटबंदी और जी.एस.टी. जैसे फैसलों को लेकर कड़ी आलोचना का सामना कर रही मोदी सरकार के लिए पिछला महीना राहत भरा सिद्ध हुआ है। इस समय में अर्थव्यवस्था को लेकर ३ ऐसी राहत भरी खबरें आई जिन्होंने मोदी सरकार को ताकत देने का काम किया है। पहले ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में जहां भारत को पहली बार टॉप १०० में जगह मिली, वहीं दूसरी तरफ रेटिंग एजेंसी मूडीज ने भी भारत की रेटिंग बढ़ा दी। इसी तरह गत दिवस जीडीपी ग्रोथ के मोर्चे पर भी सरकार को राहत मिली है।

वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट के अनुसार ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में भारत की रैकिंग में ३० पायदान का सुधार हुआ है। इस मामले में भारत पहली बार टॉप १०० में शामिल हो गया है। इस रिपोर्ट में भारत में होने वाले सुधारों की प्रशंसा की गई है।

ग्लोबल रेटिंग एजेंसी मूडीज ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर अपना भरोसा जताया है। मूडीज ने लगभग १३ साल बाद भारत की रेटिंग 'बीएए३' से बढ़ाकर 'बीएए२' कर दी है। मूडीज ने कहा कि भारत की रेटिंग अपग्रेड होने का कारण वहां देश में हो रहे आर्थिक सुधार हैं। जैसे-जैसे वक्त बीतता जाएगा, भारत की उन्नति में वृद्धि होगी।

जीडीपी दर सुधरी

वित्त वर्ष २०१७-१८ की दूसरी तिमाही में जीडीपी ने रफ्तार पकड़ी है। इस दौरान जीडीपी विकास दर ६.३ फीसदी रही। पिछली तिमाही के मुकाबले इस बार जीडीपी की गति ०.६ फीसदी बढ़ी है। इन आंकड़ों ने मोदी सरकार को सबसे ज्यादा राहत दी है। ■

कार्टून

जैसा देश वैसा वेष

-- मनोज कुरील

पुस्तक समीक्षा

मनभावन कहानी संग्रह

'मन का मनका फेर' कथाकार नीतू सिंह रेणुका का दूसरा कहानी संग्रह है। अपने पहले संग्रह की तरह यह संकलन भी उनकी चुनी हुई विशिष्ट कहानियों को स्वयं में समेटे हुए है।

संग्रह की प्रत्येक कहानी जनजीवन से इतने गहरे तक जुड़ी हुई है कि एक बार पढ़ना प्रारम्भ करने के बाद आप उसे एक ही बार में अन्त तक पढ़े बिना रह ही नहीं सकते। यही उनकी कलम की विशेषता है।

यों तो संग्रह की सभी कहानियाँ अपने आप में विशिष्ट हैं, लेकिन मुख्य रूप से 'स्वाभिमान की चोरी', 'विष', 'मन का मनका फेर', 'वो साड़ी' और 'दाल बराबर' अधिक आकर्षक हैं।

संग्रह की छपाई उत्तम और मुखपृष्ठ आकर्षक है। प्रूफ की गलतियाँ प्रायः नहीं हैं। पृष्ठ संख्या को देखते हुए मूल्य सामान्य पाठक की पहुँच में है। कुल मिलाकर यह संग्रह अपने उद्देश्य में सफल रहा है।

-- विजय कुमार सिंघल

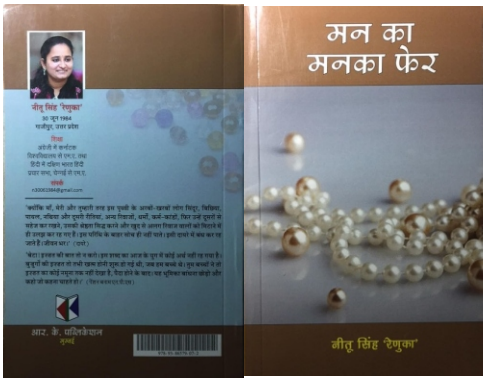

कहानी-संग्रह : मन का मनका फेर
लेखिका : नीतू सिंह 'रेणुका'
प्रकाशक : आर.के. पब्लिकेशन, मुम्बई
पृष्ठ संख्या : १७८, मूल्य : रु. २५०

सुभाषित

कुग्रामवासः कुलहीन सेवा, कुभोजनं क्रोधमुखी च भार्या।
पुत्रश्च मूर्खो विधवा च कन्या, बिनाऽग्निना षट् प्रदहन्ति कायम्।।

(चाणक्य नीति)

अर्थ- असभ्य गाँव में रहना, नीच व्यक्ति की सेवा करना, गलत भोजन, सदा क्रोध करने वाली स्त्री, मूर्ख पुत्र और विधवा कन्या- ये छः बिना अग्नि के शरीर को जला देते हैं।

पद्यार्थ- बुरे गाँव बीच वास नरक समान मान,
मद्यमाँस आदि खाना पतन की खाई है।
काल के समान क्रोधमुखी घरनी को जान,
कुलहीन मनुज की सेवा दुखदाई है।
मूरख हो पूत, बेटी विधवा बन बैठी हो,
उसके दुखों की थाह काऊ ने न पाई है।
इतने कहे जो सभी एक साथ आयें दुख,
आग बिन काया तिल-तिल सूख जाई है।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

जन भावनाओं का अनादर

लोकतांत्रिक व्यवस्था में विभिन्न स्तरों के चुनाव इसलिए कराये जाते हैं कि जनता को अपनी पसन्द के प्रतिनिधियों और सरकार को चुनने का अवसर मिले। इन चुनावों में सभी राजनैतिक दलों को अपने प्रत्याशी उतारने और उनके लिए खुलकर प्रचार करने का अधिकार होता है। जनता को भी यह अधिकार होता है कि वह किसी प्रलोभन या भय में आये बिना स्वतंत्र रूप से अपने मत का उपयोग करे।

हमारे देश में इस कार्य की व्यवस्था के लिए चुनाव आयोग जैसी स्वतंत्र संस्था है जो किसी सरकार के प्रति उत्तरदायी न होकर केवल कार्यपालिका और देश की जनता के प्रति उत्तरदायी है। सौभाग्य से अभी तक चुनाव आयोग ने अपने इस दायित्व को भलीप्रकार निभाया है और उस पर कोई ऐसा गम्भीर आरोप नहीं लगा है कि उसने सत्तारूढ़ या विपक्षी दलों के बीच किसी प्रकार का भेदभाव किया हो। यह भारतीय लोकतंत्र की महानता ही कही जाएगी।

तकनीकी विकास के साथ-साथ भारत में मतदान पद्धति में भी विकास हुआ है। पहले सारा मतदान बैलेट पेपरों द्वारा किया जाता था, जिसमें भारी मात्रा में कागज और स्याही का विनाश होता था और खर्च बहुत अधिक आता था। आजकल मतदान प्रायः इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों के माध्यम से किया जाता है, जिसमें थोड़ी सी बैटरी के अलावा कोई सामग्री खर्च नहीं होती। इतना ही नहीं, अधिकतर वोटिंग मशीनों के साथ एक छोटा सा प्रिंटर भी लगा रहता है, जिस पर एक पर्ची पर यह छापकर दिखाया जाता है कि वोट किसको दिया गया है, ताकि मतदाता संतुष्ट हो जाये।

इतनी पारदर्शी व्यवस्था के होते हुए भी यदि कोई विपक्षी दल चुनावा परिणामों को यह कहकर अस्वीकार कर देता है कि मशीनों में गड़बड़ी की गयी है, तो उसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। वोटिंग मशीनों में गड़बड़ी की आशंका पहले भी जतायी गयी थी और चुनाव आयोग ने विशेषज्ञों के साथ अच्छी प्रकार जाँच करके यह घोषित किया था कि इन मशीनों में गड़बड़ी करने की कोई संभावना नहीं है। इतना ही नहीं उसने सभी दलों और व्यक्तियों को खुला आमंत्रण भी दिया था कि वे मशीनों में गड़बड़ी करके दिखायें। इसके उत्तर में सभी दल चुप्पी साध गये और जो एक-दो आये भी वे कुछ करके नहीं दिखा सके।

इतने पर भी वोटिंग मशीनों को चुनावी पराजय का दोष देना मूर्खता और बेईमानी ही कही जाएगी। दुर्भाग्य से उ.प्र. के निकाय चुनावों में बुरी तरह पराजित होने के बाद कई विपक्षी दल यही कर रहे हैं और उपहास के पात्र बन रहे हैं। उनको वोटिंग मशीनों को कोसने के बजाय जनभावनाओं का सम्मान करना चाहिए और अपनी कमियों को दूर करना चाहिए, ताकि अगली बार जनता उन्हें मत दे सके। ■

आपके पत्र

बहुत सुन्दर अंक, हार्दिक शुभकामनाएँ। **-- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा**

सभी विधाओं और लेखकों की ज्ञानवर्द्धक व मनभावन रचनाओं को समेटे हुए बहुत सुंदर अंक के लिए बधाई. **-- लीला तिवानी**

अतीव सुसज्जित अंक है, बहुत बहुत धन्यवाद मेरी गजल को स्थान मिला, लेखनी प्रोत्साहित हुई। साथी मित्रों को हार्दिक बधाई! **-- महातम मिश्र**

हमेशा की तरह बहुत सुदर अंक के लिए ढेर सारी बधाई! **-- डॉ डी एम मिश्र**

मेरे संस्मरण को स्थान देने के लिए धन्यवाद। सदा की तरह पत्रिका अनेक रोचक लेखों से पूरित है। डॉ विवेक आर्य का लेख एक बार फिर बहुत सटीक रहा। स्वच्छता को लेकर जितना प्रचार किया जाए थोड़ा है। श्रीमती नीलम महेंद्र और सुरेश हिंदुस्तानी जी को साधुवाद। व्रत आदि का महत्त्व कितना हो जीवन में इस पर श्री जय प्रकाश ने समुचित विचार प्रकट किये हैं। त्योहारों का दिखावा हिन्दू धर्म की दूषित छवि प्रस्तुत करता है और उसे उपहास का पात्र बनाता है। **-- कादम्बरी मेहरा**

धन्यवाद। -- **उपासना पाण्डेय, प्रदीप कुमार तिवारी, अनिल सोनी, लाल बिहारी लाल गुप्ता, जय प्रकाश भाटिया, आशीष कुमार त्रिवेदी, प्रीती श्रीवास्तव, डॉ विवेक आर्य, विनय कुमार तिवारी, विजयता सूरी, राजीव चौधरी, डॉ जेन्नी शबनम, अजेया पारीक**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

शासन करने की कला

अनिल कुमार सिंह

कुछ जवाहर लाल नेहरू की बेटी होने और कुछ दबंग महिला होने के कारण इंदिरा गाँधी भारत के भोले-भाले नागरिकों द्वारा लगभग देवी सी पूजी गयीं। जनता उनसे अपार प्रेम करती थी, और १९७७ जैसा इंदिरा-विरोधी माहौल न बने होने की दशा में उनके चुनाव जीतने की क्षमता असंदिग्ध थी, पर शासन करने की उनकी क्षमता निस्सन्देह संदिग्ध कही जायेगी। हालांकि चुनाव जीतने के बाद शासन करने की उनकी क्षमता सिर्फ तीन साल की थी, जिसे उन्होंने दो बार सिद्ध किया।

१९७१ में गरीबी हटाओ के नारे के साथ सत्ता में आने के कुछ ही महीनों में बांग्लादेश की लड़ाई ने इंदिरा गाँधी को लगभग देवी से सम्पूर्ण देवी बना दिया, पर जल्द ही देश में असंतोष बढ़ने लगा, और १९७४ बीतते-बीतते परिस्थिति नियंत्रण से बाहर हो गयी, और जल्द ही देश में इमर्जेंसी लगानी पड़ी।

इसी तरह १९८० में मिली जबरदस्त जीत के बाद १९८३ आते-आते फिर से परिस्थिति हाथों से छूटने लगी। पंजाब में उग्रवादी बेलगाम हो गये, नेल्ली (असम) में भीषण नरसंहार हुआ, और आंध्र में निहायत बेशर्मी के साथ पूर्ण बहुमत रखने वाली रामाराव सरकार बर्खास्त कर दी गयी। जल्द ही ऑपरेशन ब्लूस्टार की नौबत आ गयी जो अन्ततोगत्त्वा उनकी मृत्यु का कारण बना। अक्टूबर'८४ में अपनी मृत्यु से ठीक पहले वह अपनी लोकप्रियता के निम्नतम बिंदु पर थीं, और अधिकांश राजनीतिक पंडितों की राय है कि १९८५ का चुनाव निकालना उनके लिए असम्भाव्य (improbable) रहा होता।

ये उदाहरण इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि लोकप्रियता की लहर पर सवार होकर जबरदस्त बहुमत से सत्ता में आने के बाद शासन चलाने की श्रीमती गाँधी की क्षमता मात्र तीन सालों की थी, जिसके बाद हालात इतने बिगड़ जाते थे कि उन्हें सँभालने के लिए असाधारण फैसले (इमरजेंसी, ब्लूस्टार आदि) करने पड़ते थे।

लोकप्रियता और उसके बल पर बार-बार चुनाव जीतने की क्षमता के मामले में मोदी ने इंदिरा गाँधी के आस-पास भी कहीं होने का आभास भी नहीं दिया है, पर शासन को सफलतापूर्वक सँभालने के मामले में वह श्रीमती गाँधी से निश्चित रूप से आगे निकल गये हैं। उन्हें केंद्र की सत्ता में आये साढ़े तीन साल हो गये हैं, और देश में उनके खिलाफ कोई बड़ा असंतोष नहीं सुलग रहा है। इस तरह के सभी सर्वेक्षण उन्हें अब भी देश का सबसे भरोसेमंद नेता बताते हैं। ■

सैक्युलरवादी और आर्य संवाद

डॉ विवेक आर्य

आर्य- 'अरे भाई सुनो! कल शाम को मेन बाजार से काँवड़ यात्रा निकालते हुए शिवभक्तों पर पथराव हुआ!'

सैक्युलर- 'अरे! ये तो बेचारे मुस्लिम भाइयों को जानबूझकर फंसाया जा रहा है।'

आर्य- 'महाशय! मैंने कब ये बोला कि मुस्लिमों ने ये पथराव किया है? मैंने तो किसी का नाम नहीं लिया। केवल यही बोला कि पथराव हुआ है।'

सैक्युलर- 'कुछ भी हो जानबूझकर मुस्लिम भाइयों को फँसाया जाता है।'

आर्य- 'लेकिन भाईसाहब! हमने कब बोला कि मुस्लिमों ने पथराव किया है? आप बार-बार मुस्लिमों का नाम क्यों ले रहे हैं? यानी कि आप भी दिल से मानते हैं कि ये पथराव मुस्लिम समुदाय के लोग ही करते हैं?'

सैक्युलर- 'नहीं मेरा मतलब है कि कोई भी छोटी मोटी झड़प हो उसमें मुस्लिमों को ही दोष दिया जाता है'

आर्य- 'लेकिन ये दोष तो आप स्वयं ही दे रहे हो हमने तो केवल इतना ही बोला कि पथराव हुआ। और आप कूद पड़े मुस्लिम समुदाय की वकालत करने। केवल इतना बता दो कि शिव भक्तों पर जिन्होंने पत्थर मारे उनपर कारवाई होनी चाहिए कि नहीं?'

सैक्युलर- 'हाँ हाँ! बिलकुल होनी चाहिए। लेकिन किसी को किसी मजहब के आधार पर ऐसे ही सजा नहीं होनी चाहिए।'

आर्य- 'तो भाई इसमें मजहब को क्यों बीच में ला रहे हो? मैंने तो यही बोला कि शिव भक्तों की काँवड़ यात्रा पर कुछ लोगों ने पत्थर मारे और उनपर कारवाई होनी चाहिए। इसमें क्या गलत है?'

सैक्युलर- 'पता है! तुम जैसे लोग ही देश में दंगे करवाते हो और नफरत फैलाते हो!'

आर्य- 'अजीब व्यक्ति हो आप भी! अरे मैं तो केवल ये बोल रहा हूँ कि शिव भक्तों पर जो पथराव हुआ उन दोषियों पर कारवाई होनी चाहिए। बस इतनी सी बात है। इसमें नफरत फैलाने और दंगा करवाने वाली बात कहाँ से और कैसे आ गई?'

सैक्युलर- 'तुम लोग ऐसे ही करते हो। बेचारे अल्पसंख्यकों को झूठे मामलों में फँसाकर उनके खिलाफ नफरत उगलते हो।'

आर्य- 'अरे हद है यार! बात को कहाँ से कहाँ पहुँचा रहे हो? हम इतना कह रहे हैं जिसने जो अपराध किया है उसे उसकी सजा मिले। अब यदि पथराव करने वाले मुस्लिम समुदाय से हैं तो क्या हम उनके द्वारा किए अपराध को छुपा दें या खारिज कर दें? और किसी को अपराध की सजा देना कहाँ से नफरत फैलाना हो गया?'

सैक्युलर- 'देखो आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता।'

आर्य- 'बिल्कुल सही कहा जी आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, लेकिन मजहब होता है। एक शांतिप्रिय मजहब!'

सैक्युलर- 'क्या मतलब है आपका?'

आर्य-'आतंकवाद केवल हाथ में बंदूक उठाकर लोगों को मारने का नाम ही नहीं है, बल्कि अपने मजहब से अलग सोच रखने वाले लोगों को हर तरह से प्रताड़ित करने का प्रयास करना, उनके धार्मिक कार्यक्रमों में उपद्रव करना, पत्थर मारना, उनकी लड़कियों से छेड़छाड़ करना, अपने जैसे लोगों की भीड़ के द्वारा दंगे करके उनके घरों को आग लगाना, उनकी जमीनों पर अवैध कब्जा करना, बेवजह उनसे नफरत करना, उनके पूजा स्थलों पर हमले करना, उनकी औरतों पर नजर रखना आदि ये सब आतंकवाद ही है और इन अमानवीय कृत्यों में जो लिप्त है वो आतंकवादी ही है।'

सैक्युलर- 'कोई भी धर्म हमें आपस में लड़ना नहीं सिखाता।'

आर्य-'मजहब ही है सिखाता आपस में बैर रखना। परन्तु धर्म नहीं सिखाता। क्योंकि धर्म तो सत्यभाषण, परोपकार, सेवा, दान, तप, विद्या आदि को बोला जाता है। तो धर्म कैसे फूट डाल सकता है? मजहब ही कहता है कि मेरे पैगंबर को न मानने वालों को जीने का अधिकार नही है।' ■

सहिष्णुता

डॉ अ. कीर्तिवर्धन

सहिष्णुता यानी सहनशीलता या सहन करने की शक्ति जो प्रत्येक व्यक्ति, समाज या राष्ट्र में अलग होती है और अलग अलग सन्दर्भों में अलग। सहिष्णुता का सम्बन्ध मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक अथवा जातिवादी सन्दर्भों में भी लिया जा सकता है।

यूँ तो सनातन संस्कृति तथा भारत सदैव ही सहिष्णु रहे हैं परन्तु वर्तमान संदर्भों में सहिष्णुता का मतलब हिन्दू-मुस्लिम विवाद के सन्दर्भों में ज्यादा प्रचलित है। सहिष्णुता धर्म और राजनीति पर केंद्रित होकर अपना मूल अर्थ त्याग चुकी है। सामान्यतः धर्म का उद्देश्य समग्र मानव जीवन के प्रति आध्यात्मिक विकास एवं आस्था का दृष्टिकोण विकसित करना है जो मनुष्य को मानवता तथा नैतिकता के पालन को प्रेरित करता है। धर्म हमें सहनशील तथा क्षमाशील यानी सहिष्णु होना सिखाता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सहिष्णु होना मानव कल्याण का मूल स्रोत है।

क्या है धर्म, अध्यात्म क्या है, कहाँ जड़ें इसकी गहरी ?
विश्व खड़ा है जिस नींव पर, नींव सहिष्णुता पर ठहरी।

वर्तमान में सहिष्णुता के सन्दर्भ बदल गये हैं। राष्ट्रीय एकता का मूल स्वरुप धर्म से ही उदित हुआ है। धर्म कामना करता है कल्याण की और राष्ट्र कल्पना में भी नागरिकों के कल्याण की भावना ही सर्वोपरि होती है। चूँकि राष्ट्र में विभिन्न धर्मावलम्बी रहते हैं और उनकी धार्मिक सहिष्णुता भी भिन्न है, तब राष्ट्र के सम्मुख विकास कार्य चुनौती बनता है। खास तौर से तब जब कोई धर्म या उसके अनुयायी अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ माने और सहिष्णु होने मापदंड स्वयं ही निर्धारित करें। उदाहरणार्थ कुछ गायें को मारना अथवा मांस खाना अपना धर्म अथवा अधिकार या कहें परम्परा मानते हैं और दूसरा वर्ग गायों को माँ मानकर उसकी रक्षा हेतु गलत सही तरीके से तत्पर रहे। यहां दोनों ही पक्ष एक दूसरे प्रति असहिष्णु कहे जायेंगे।

सहिष्णुता और असहिष्णुता के बीच बहुत बारीक और करीबी अंतर है। जब हम चर्चा करते हैं तो हो सकता है कि आप हमारे विचारों से सहमत न हों मगर आप सहिष्णु हों यानी असहमत होते हुए भी सहन-शीलता बनी रहे। कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जो सहमत हैं अथवा नहीं मगर अपनी तीखी प्रतिक्रिया द्वारा किसी बात से कोई बात निकालकर असहिष्णु हो जाएँ।

प्रश्न यह है कि किसी व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र को कब तक कितना और क्यों सहिष्णु बने रहना चाहिए? कोई व्यक्ति, समाज राष्ट्र जब हमारे अथवा राष्ट्र हितों के विरुद्ध साजिश करे, तो क्या हम सहिष्णु बने रहें? कोई धर्म या उसके अनुयायी योजनाबद्ध तरीके से राष्ट्रीय एकता अखंडता, सामजिक सद्भाव को चुनौती दे और योजनाबद्ध तरीके से दूसरे धर्म के अनुयायियों को खत्म करने का खेल खेले, तो क्या हम सहिष्णु बने रहें? कोई हमारे घर परिवार अथवा राष्ट्रीय सीमाओं पर अतिक्रमण करे, तो क्या हमें दुष्टों से निपटने के लिए असहिष्णु नहीं होना चाहिए?

हमारा मानना है कि सहिष्णुता का अर्थ दूसरे के विचारों को ध्यानपूर्वक सुनकर उचित को सम्मान देना। परन्तु सम्मान देते समय स्वयं, समाज व राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखना ही सहिष्णुता कहलायेगा।

प्राचीन काल से कहा गया है कि शान्ति की स्थापना के लिए युद्ध के लिए तत्पर रहना होता है। कालांतर से इतिहास के पन्ने पलटिये और देखिये कि भारत ने कभी साम्राज्य विस्तार का प्रयास नहीं किया। अपनी सहिष्णुता की नीति कारण सदैव खंडित भी होता रहा और आक्रान्ताओं का गुलाम बनता रहा। विभिन्न

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

विश्व बैंक रिपोर्ट एक ठंडी हवा का झोंका बनकर आई है

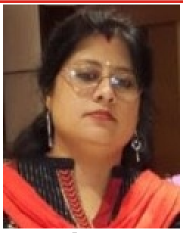

डॉ नीलम महेन्द्र

जब नोटबंदी और जीएसटी को देश की घटती जीडीपी और सुस्त होती अर्थव्यवस्था का कारण बताते हुए सरकार लम्बे अरसे से लगातार अपने विरोधियों के निशाने पर हो और ८ नवंबर को विपक्ष द्वारा काला दिवस मनाने की घोषणा की गई हो, ऐसे में कारोबारी सुगमता पर विश्व बैंक की हालिया रिपोर्ट सरकार के लिए एक ठंडी हवा का झोंका बनकर आई है।

लेकिन जिस प्रकार कांग्रेस इस रिपोर्ट को ही फिक्स्ड कहते हुए अपनी हताशा जाहिर कर रही है वो निश्चित ही अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। उसकी इस प्रकार की नकारात्मक रणनीति के परिणामस्वरूप आज न सिर्फ कांग्रेस खुद ही अपने पतन का कारण बन रही है, बल्कि देशवासियों को पार्टी के रूप में कोई विकल्प और देश के लोकतंत्र को एक मजबूत विपक्ष भी नहीं दे पा रही है।

सरकार के विरोधियों को उनका जवाब शायद वर्ल्ड बैंक की 'ईज आफ डूइंग बिजनेस' रैंकिंग की ताजा रिपोर्ट में मिल गया होगा जिसमें इस बार भारत ने अभूतपूर्व ३० अंकों की उछाल दर्ज की है। यह सरकार की आर्थिक नीतियों का परिणाम ही है कि १९० देशों की इस सूची में भारत २०१४ में १४२ वें पायदान पर था, २०१७ में सुधार करते हुए १३० वें स्थान पर आया और अब पहली बार वह इस सूची में १०० वें रैंक पर है। अगर अपने पड़ोसी देशों की बात करें तो महज ०.४० अंकों के सुधार के साथ चीन ७८ वें पायदान पर है, पाकिस्तान १४७ और बांग्लादेश १७७ पर। सरकार का लक्ष्य २०१९ में ६० और २०२० तक ३० वें पायदान पर आना है। प्रधानमंत्री का कहना है कि 'सुधार, प्रदर्शन और रूपांतरण के मंत्र की मार्गदर्शिका के अनुसार हम अपनी रैंकिंग में और सुधार के लिए और अधिक आर्थिक वृद्धि को पाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'

रिपोर्ट की सबसे खास बात यह है कि भारत को इस साल सबसे अधिक सुधार करने वाले दुनिया के टॉप टेन देशों में शामिल किया गया है और बुनियादी ढांचे में सुधार करने के मामले में यह शीर्ष पर है। भारत के लिए निसंदेह यह गर्व की बात है कि इस प्रतिष्ठित सूची में वह दक्षिण एशिया और ब्रिक्स समूह का एकमात्र देश है। २००३ में जब यह रिपोर्ट जारी की गई थी, तब इसमें ५ मुद्दों के आधार पर १३३ देशों की अर्थव्यवस्था को शामिल किया था, लेकिन इस साल ११ बिन्दुओं के आधार पर १९० देशों की अर्थव्यवस्था में यह रैंकिंग की गई है। चूंकि विश्व बैंक की यह रिपोर्ट हर साल १ जून तक के प्रदर्शन पर आधारित होती है, इसलिए इस साल एक जुलाई से लागू किए गए जीएसटी और उसके प्रभाव को इसमें शामिल नहीं किया गया है।

वर्ल्ड बैंक के साउथ एशिया के उपाध्यक्ष डिक्सन का कहना है कि यह रिपोर्ट संकेत देती है कि भारत के दरवाजे कारोबार के लिए खुले हैं और अब यह विश्व स्तर पर व्यापार करने के लिए पसंदीदा स्थान के रूप में कड़ी टक्कर दे रहा है। मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान मोदी ने गुजरात को व्यापार की दृष्टि से 'गेटवे आफ इंडिया' बना दिया था। देश के लगभग सभी बड़े औद्योगिक घराने अन्य राज्यों की अपेक्षा गुजरात को उसकी आर्थिक नीतियों के कारण निवेश के लिए सर्वश्रेष्ठ राज्य मानते थे।

विश्व बैंक की यह ताजा रिपोर्ट इस बात का सुबूत है कि अपनी नई आर्थिक नीतियों के सहारे भारत आज व्यापार और निवेश की दृष्टि से दुनिया की नजरों में पहले के मुकाबले कहीं अधिक आकर्षक और उपयोगी सिद्ध हो रहा है। आने वाले समय में शायद भारत विदेशी निवेश की दृष्टि से 'गेटवे आफ द वर्ल्ड' बन जाए। दिल्ली और मुंबई के कार्पोरेट जगत से मिली जानकारी के आधार पर तैयार की गयी इस रिपोर्ट के अनुसार जहाँ पहले नया व्यवसाय शुरू करने के लिए व्यक्ति को बैंक से लोन लेने से लेकर विभिन्न कानूनी प्रक्रिया का पालन करते हुए महीनों पसीना बहाने के साथ-साथ अपनी मेहनत की कमाई भी भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ानी पड़ती थी, वहीं आज अधिकतर प्रक्रिया आनलाईन करके लालफीताशाही पर भी लगाम लगाने की काफी हद तक सफल कोशिश की गई है। कर्ज लेना आसान बनाकर न सिर्फ देश में 'स्किल इंडिया और मेक इन इंडिया' के द्वारा उद्यमिता को बढ़ावा दिया गया बल्कि विदेशी निवेश को भी आकर्षित किया गया।

देश में अब तक छोटे निवेशकों के हितों को अनदेखा किया जाता था लेकिन अब सेबी द्वारा छोटे निवेश में सुरक्षा देने के लिए कई कदम उठाए गए जिनसे भारत ने इस क्षेत्र में नौ पायदान ऊपर आते हुए चौथी रैंकिंग हासिल की। टैक्स सुधारों के परिणामस्वरूप पहले की १७२ रैंकिंग के मुकाबले इस बार ५३ अंकों की उछाल के साथ भारत ११९ वें स्थान पर है। हालांकि आयात-निर्यात जैसे क्षेत्र में भारत सरकार को अभी और काम करना है लेकिन दस में से आठ क्षेत्रों में सुधार के साथ यह कहा जा सकता है कि विरोध करने वाले जो भी कहें, देश प्रगति की राह पर चल पड़ा है। ■

मूत्र विसर्जन में रुकावट और उसका समाधान

विजय कुमार सिंघल

मेरे कनाडा वाले एक मित्र को अपने पेट की सोनोग्राफी (अल्ट्रासाउंड) कराने के लिए रेडियोलॉजिस्ट की सलाह पर अपना मूत्र काफी देर तक रोकना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि उनका मूत्र एकदम रुक गया और सात घंटों तक नहीं हुआ। इसी बीच उनको असहनीय दर्द, जलन और बेचैनी का भी सामना करना पड़ा। वे ऐलोपैथिक उपचार लेना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने मुझे सन्देश भेजा। इसके उत्तर में मैंने उनको निम्नलिखित सलाह दी-

१. अपने पेडू (नाभि से नीचे पेट का आधा भाग) पर ठंडे पानी से भीगी हुई तौलिया पाँच मिनट के लिए रखिए। थोड़ी देर बाद आपको पेशाब आ जाएगा।

३. मूत्र निकालने के लिए बिल्कुल जोर मत लगाइए। अपने आप निकलने दीजिए।

४. हर घंटे पर एक गिलास गुनगुना जल पीजिए।

५. यदि खीरा उपलब्ध हो तो उसका जूस बीच बीच में ले सकते हैं।

६. दोबारा एक घंटे बाद पट्टी रख सकते हैं। पट्टी १० मिनट तक रख सकते हैं पर ठंडी रहनी चाहिए। अच्छा हो कि दोबारा ठंडे पानी से तर कर लें।

७. पट्टी हटाने के बाद शरीर में गर्मी लाना जरूरी है। इसके लिए कुछ व्यायाम करें।

उन्होंने इस सलाह का पालन किया और यह बताते हुए मुझे प्रसन्नता है कि उनको तत्काल लाभ हुआ। मूत्र निकलने लगा। शुरू में बूँद-बूँद ही निकला। फिर धीरे धीरे सामान्य हो गया।

मैंने उनको यह भी बता दिया था कि पूरी तरह सामान्य होने में दो-तीन दिन लग सकते हैं। मैंने उनसे निवेदन किया था कि सामान्य होने के बाद अपना अनुभव समूह में सबके साथ साझा करें। परन्तु वे बडे साहित्यकार हैं, अतः व्यस्तता में भूल गये।

मैं सभी सज्जनों से निवेदन करता हूँ कि यदि कभी सोनोग्राफी करानी हो, तो पहले यह पता कर लें कि उनकी बारी किस समय आएगी। उससे लगभग ४५ मिनट पहले उनको मूत्र विसर्जन कर आना चाहिए और फिर यथेष्ट जल पीना चाहिए। इससे सोनोग्राफी के समय तक उनको पर्याप्त मूत्र बन जाएगा और अधिक देर रोकना भी नहीं पड़ेगा।

वास्तव में मूत्र सम्बंधी विकारों जैसे मूत्रनली में जलन या सूजन या दर्द होना, मूत्र विसर्जन में रुकावट, मूत्राशय का आकार बढ़ना आदि तथा गुर्दे सम्बंधी रोगों जैसे गुर्दे में दर्द या पथरी होना, गुर्दे खराब होना आदि का प्रमुख कारण पानी कम पीना, मूत्र विसर्जन में जोर लगाना और/या मूत्र को बहुत देर तक रोकना होता है। यदि हम इन तीन गलतियों से बचे रहें, तो ये विकार होने का कोई प्रश्न ही नहीं है।

मैंने कई सज्जनों को यह सलाह देकर उनकी मूत्र सम्बंधी शिकायतों को सरलता से ठीक कर दिया है। यहाँ तक कि एक मित्र के मूत्र में मवाद आने की शिकायत भी केवल अधिक मात्रा में पानी पीकर एक महीने में ही दूर हो गयी और वे पहले से बहुत अधिक स्वस्थ हो गये। ■

दीपक बन जाऊँ या फिर मैं दीपक की बाती बन जाऊँ
दीपक बाती क्या बनना है दिपती लौ घृत की बन जाऊँ
दीपक बाती घृत युत लौ से अन्तर्मन की ज्योति जलाकर
मन-मन्दिर में बैठा सोचूँ पूजा की थाली बन जाऊँ
पूजा की थाली की शोभा अक्षत चन्दन सुमन सुगन्धित
खुशबू चाह रही है मैं भी शीतल चन्दन-सी बन जाऊँ
शीतल चन्दन की खुशबू में रंगों का इक इन्द्रधनुष है
इन्द्रधनुष की है अभिलाषा
तान मैं सरगम की बन जाऊँ
सरगम के इन 'शान्त' सुरों में
मिश्रित रागों का गुंजन है
तान कहे मैं भी कान्हा के
अधरों की वंशी बन जाऊँ

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

यूँ जरूरत तो हमारी भी किसी से कम नहीं
साथ लेकिन हम हवाओं के बहें तो हम नहीं
नफरतों की लाख दीवारें उठाए ये जहां
कर सके तुमको जुदा हमसे किसी में दम नहीं
जिस तरफ भी देखिये गुलजार है सारी धरा
अब चले आओ सनम इनकार का मौसम नहीं
रोकिये बढ़ता हुआ ये नफरतों का जलजला
चाहिये घर में किसी के अब कहीं मातम नहीं
धर्म का दीपक जले बस रोशनी के वास्ते
मजहबों के नाम पर फैले जहां में तम नहीं
चाहता हूँ होंठ पर मुस्कान आँखों में चमक
काश चेहरे पर किसी के
भी दिखे अब गम नहीं
हाथ बच्चों के किताबें
हों बड़ों के काम हों
काश हाथों में रहे
पत्थर नहीं अब बम नहीं

-- सतीश बंसल

वसुंधरा करे पुकार, मीत जागते रहो
कि लौट जाए ना बहार, मीत जागते रहो
उमड़ रहे हैं उपवनों में, कंटकों के काफिले
करें न कलियों पर प्रहार, मीत जागते रहो
समंदरों की सैर को सँवर रहीं सुनामियाँ
निगल न जाए तट को ज्वार, मीत जागते रहो
छलों-बलों को छोड़के, रखो दिलों को जोड़के
न टूट जाएँ नेह-तार, मीत जागते रहो
गला ही घोंटते रहे, जो वोट करके वायदे
करें न चोट बार-बार, मीत जागते रहो
तरक्कियों के दर कई, अखंड हो जो एकता
न खंड-खंड हों विचार,
मीत जागते रहो
प्रलोभ-ज्वाल देश को,
न लील जाए 'कल्पना'
जगो, उठो, तजो खुमार,
मीत जागते रहो

-- कल्पना रामानी

है जमाने को खबर हम भी हुनरदारों में हैं
क्यों बतायें हम उन्हें हम भी गजलकारों में है
धन नहीं, दौलत नहीं, ताकत नहीं उतनी मगर
आजमा कर देख तू हम भी मददगारों में हैं
आँख दे दी किन्तु तूने रोशनी दी ही नहीं
हम भी हैं बंदे तेरे हम भी तलबगारों में हैं
कत्ल कल्लू का हुआ जब, मूकदर्शक हम भी थे
हमको क्यों माफी मिले, हम भी गुनहगारों में हैं
ये थकी हारी हमारी जिंदगी किस काम की
लोग कवि शाइर कहें पर हम भी बंजारों में हैं
उसने चाहा ही नहीं इतनी सी केवल बात है
दिल लगाता फिर समझता हम भी दिलदारों में हैं
एक मुद्दत से किसी की याद में हम जल रहे
पास मत आना हमारे
हम भी अंगारों में हैं
वो पता ढूँढे हमारा
पैन में, आधार में
या खुदा हम तो गजल
के चंद अशआरों में हैं

-- डॉ डी एम मिश्र

अम्बार बमों के लगाने लगा है आदमी
डंका युद्ध का बजाने लगा है आदमी
तबाही के सिवा कुछ नहीं जिस मुकाम पर
रास्ते उस तरफ बनाने लगा है आदमी
कभी अल्लाह तो कभी ईश्वर के नाम पर
सियासत अपनी चमकाने लगा है आदमी
जमाने में बढ़ गई है भूख इस कदर
बेबस आदमी को खाने लगा है आदमी
जानवरों से तो आदमी बेखौफ है मगर
खौफ अपनी जात से खाने लगा है आदमी
छीनकर मजलूम बेसहारों का हक ताले
तिजोरियों पर लगाने लगा है आदमी
बुलंदियां आसमां की छूकर भी आज
कदमों पे ही रुक जाने लगा है आदमी
'दर्द' सब कुछ बन गया है आदमी मगर
आदमी बनने से कतराने लगा है आदमी

-- अशोक दर्द

दोस्ती यारी निभाकर चल दिए
बेवफा मुझको बताकर चल दिए
मुफलिसी का दौर भी अच्छा ही था
दोस्त आये, आजमाकर चल दिए
जो मिरी कश्ती के खेवनहार थे
बीच धारे में वो लाकर चल दिए
मानते थे जिनको अपनी जिंदगी
बज्म में नजरें झुकाकर चल दिए
दिल नहीं लगता इबादत में मगर
मन्दिरों में सर झुकाकर चल दिए
याद उनकी अब सहादत है कहाँ
देश पे जो जा लुटाकर चल दिए
धर्म कदमों में तू जिनके था बिछा
दिल भरा ठोकर लगाकर चल दिए

-- धर्म पाण्डेय

हम तो सच को ढूँढ रहे हैं यारों में
यार उसे लेकर बैठे बाजारों में
ये माना अखबार पढ़ा है तुमने पर
क्या सब सच ही छपता अखबारों में?
फूलों की खुशबू फूलों में पाओगे
बेमतलब ही तुम उलझे हो खारों में
अपना ही किरदार भुलाये बैठे हम
इतना खोये औरों के किरदारों में
जाने क्यों नौका खुद पर इतराती है
सारी ताकत होती है पतवारों में
लोग जगे जब से रखवाली करने को
तब से कितनी चिंता पहरेदारों में
दीवारों के कान कभी क्या दिखते हैं?
पर होते हैं कान सभी दीवारों में

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

बुजुर्गों की तेरे हाथों से ना तौहीन हो जाए
तेरी बातों से कोई दोस्त ना गमगीन हो जाए
मिल जाए अगर इसमें किसी मजलूम का आँसू
घड़ी में दरिया मीठे पानी का नमकीन हो जाए
उदासी में किसी की घोल दें थोड़ी सी खुशियां तो
दिन अपना भी आज का ये बेहतरीन हो जाए
कत्ल मेरा मेरे कातिल तू एहतियात से करना
कहीं ना खून से लथपथ तेरी आस्तीन हो जाए
कड़वा है जायके में बहुत है फायदेमंद लेकिन
सच कहने का, सुनने का
जो तू शौकीन हो जाए
बचा सकती नहीं ताकत
कोई फिर उस हुकूमत को
जहां हक माँगना भी
जुर्म इक संगीन हो जाए

-- भरत मल्होत्रा

हम अपने दुश्मनों को भी, गले हँसकर लगाते हैं
हुनर दुनियाँ में जीने का, चलो तुमको सिखाते हैं
जो कायल हो तबस्सुम के, हमारे जान लो इतना
दहकती आग दिल में है, जिसे लब पर सजाते हैं
जमाने को अंधेरों का खजाना बाँटनेवालों
वो दीपक हैं कि सूरज को, नयी राहें दिखाते हैं
खड़ी करते दिलों के बीच, जो दीवार नफरत की
मगर हम प्यार की बारूद से, उसको गिराते हैं
जरा उनकी शराफत का तमाशा, देख लो यारों
कि मेरे आँसुओं से दीप, आँगन में जलाते हैं
जमाने की नजर में वो, गिराना चाहते हमको
ये आलम है कि वो, हमसे नहीं नजरें मिलाते हैं
दगाबाजों की बस्ती में, वफा का खून होता है
जमाना जानता है हम
वफादारी निभाते हैं
'शरद' हैरान है कि क्या
करे अब सामने उनके
उन्हें जितना मनाता हूँ
वो उतना रूठ जाते हैं

-- शरद सुनेरी

(दूसरी और अंतिम किस्त)

टाई और धोती

नीतू सिंह

सुप्रिया ने बिंदी का पत्ता वापस पत्तों में खोंसते हुए सोचा कि हो न हो पापा ने जो अपनी बिटिया के लिए सरकारी दामाद ढूँढने का मापदंड बनाया था वह तोड़ दिया है। तभी तो आज एक प्राइवेट कंपनी का इंजीनियर आ रहा है। आखिर हम दो ही चीजों में सरकारी चीज पसंद करते हैं, नौकरी में और दामाद में। काश स्कूलों, अस्पतालों, संस्थानों, संगठनों में भी सरकारी चीजें इतनी ही आकर्षक होतीं।

ड्राअर को लगभग पूरा बाहर खींचते हुए उस पर झुकी हुई सुप्रिया आई लाइनर खोज रही थी कि किसी ने पीछे से उसका क्लिप खोल दिया। सुप्रिया ने चौंककर शीशे में देखा तो प्रीती थी। 'आजकल खुले बालों का फैशन है। तू क्लिप क्यों लगा रही है पागल?'

ये प्रीती है। जरूर मम्मी ने बुलाया होगा। प्रीती का रिश्ता पहली दफा में ही तय हो गया था। कभी पूछा ही नहीं कि कैसे तय हुआ? क्या-क्या बातें हुईं? कुछ डिमांड थीं क्या? कैसे हैं ससुराल वाले? अब पूछने का बहुत मन हो रहा है। लेकिन अब तो बहुत देर हो गई है। लड़के वाले आते ही होंगे।

इतना तो पता है कि प्रीती पढ़ाई बीच में ही छोड़कर कॉन्सटेबल हो गई। शादी के बाद ससुराल के पास वाले थाने में ही पोस्टिंग हो गई। प्रीती टचअप कर रही थी और सुप्रिया सोच रही थी कि ये अब थाने में कम घर पर ज्यादा रहती है और आदर्श बहुओं में टॉप पर आती है, क्योंकि सैलरी भी लाती है और घर भी संभाल लेती है। शायद साइन करने थाने चली भी जाती है या पता नहीं। खैर।

'ये क्या बिंदी लगाई है? लड़के वाले माइक्रोस्कोप से भी देखेंगे तो नहीं दिखेगी। और कोई बिंदी नहीं है क्या?' सुप्रिया ने अच्छी बच्ची की तरह ड्राअर खोल दिया। ड्राअर के एक किनारे करीने से लगाई बिंदियों के सारे पत्तों को अँगूठे और तर्जनी के बीच उठाकर प्रीती ने बिस्तर पर बिखेर दिया। सुप्रिया शीशे में उसे बिंदी चुनते हुए देखती रही। तभी मम्मी ने एंट्री ली।

'बेटा बहुत समय से आई हो। जरा सुप्रिया को तैयार कर दो। लड़के वाले आ चुके हैं। इसे नाश्ता ले जाने के लिए भेजो। नहीं तो ठंडा हो जाएगा।'

'बस हो गई आंटी जी। रेडी ही है।'

प्रीती ने एक ए.डी. जड़ी मेंहदी बिंदी निकालकर सुप्रिया के माथे के बीचोंबीच चिपका दी। इस बार सुप्रिया ने मुँह खोल ही दिया।

'अरे यह तो मेहरूनी नहीं है।'

'कॉन्ट्रेस्ट कलर लगा। देख तुझे कितना सूट कर रहा है।'

मम्मी ने सुप्रिया को लंबा-सा बड़ा ट्रे पकड़ाया तो उसने देखा इस बार समोसे के साथ दो-तीन प्रकार के नमकीन और रखे गए हैं। जैसे पिछली बार वालों को यह सब नहीं खिलाया था इसलिए नाराज हो गए थे।

'हाँ। अबकी अच्छी लग रही है।'

सुप्रिया ने सोचा कि पिछली बार कोई और थी क्या और इस बार मैं नहीं कोई और ही पकड़ लाए हैं क्या? या शायद कोई और ही हूँ। ये मुँह सिली हुई मैं तो नहीं हो सकती। खैर। सुप्रिया ने फिर से स्लो मोशन में कदम बढ़ाया। फिर सबको नाश्ता देकर अपनी पिछली मुद्रा में सिर झुकाकर बैठ गई। दाएं हाथ की मुठ्ठी बाईं हथेली में लपेट टेबल का कोना घूरने लगी।

फिर उन्हीं सवालों का दौर शुरू हुआ।

'क्या-क्या पढ़ी हो बेटा?'

सिर झुकाए हुए ही सुप्रिया ने जवाब दिया- 'एम. एससी एकोनोमिक्स और बैंकिंग से एम.बी.ए.।'

'अच्छा। बैंक में हो तो कंप्यूटर भी चला लेती होगी। मेरी गिन्नी तो हमेशा कंप्यूटर पर ही लगी रहती है।'

सुप्रिया ने पहली बार महसूस किया कि कमरे में शायद कोई और लड़की भी थी, जिसकी बात हो रही थी। मगर वह कैसे समझाए कि कंप्यूटर पर लगे रहने के कई कारण हो सकते हैं। जैसे वह दिनभर ऑफिस के कंप्यूटर पर और बगल वाली पान की दुकान वाले चुन्नूलाल फिल्में देखने के लिए कंप्यूटर पर। इसका कंप्यूटर की निपुणता से कोई लेना-देना नहीं है। खैर! उसने कोई जवाब देना जरूरी नहीं समझा। वैसे भी सवाल करने के बाद जब अपनी बेटी की तारीफ में लग गईं, तो फिर जवाब की अपेक्षा भी खत्म हो गई।

'स्कूटी वगैरह चला लेती हो? अगर घर का सामान वगैरह लाना हो?' इसमें कोई शक नहीं था। खुशी से हामी भरी। सुप्रिया को खुशी हुई कि उसका हुनर कहीं तो काम आ रहा है। पहले कम्प्यूटर और अब स्कूटी की बात हो रही है। मगर ये खुशी अगले ही सवालों के साथ गायब हो गई।

सुप्रिया ने महसूस किया कि अगला सवाल पूछने से पहले उसकी होनेवाली सासु माँ की नजरों ने उसे अच्छे से स्कैन किया है। 'साड़ी पहन लेती हो?'

सुप्रिया थोड़ी सकपका गई क्योंकि इस बार लहजा थोड़ा आदेशात्मक था और 'बेटा'-'बेटी' जैसे मुलायम शब्दों का भी लोप हो चुका था। दूसरी बात यह भी थी कि सुप्रिया को सच में ठीक से साड़ी पहननी नहीं आती थी। अबतक कई प्रोग्रामों में उसने साड़ी पहनी तो थी मगर पार्लरवाली की कृपा से ही।

उसने दिल की धड़कनों पर काबू रखकर एक सेकेंड के लिए दिमाग पर जोर लगाया। यदि तगड़ी कोचिंग से वह आईबीपीएस की परीक्षा पास कर सकती है तो क्या पार्लरवाली की थोड़ी सी कोचिंग से साड़ी पहननी नहीं आ सकती। भले ही उसमें एक महीने की सैलरी लग जाए, मगर अब वह सीखेगी जरूर।

सुप्रिया ने झुके हुए सिर को हिलाकर हामी भरी।

'खाना बनाना? एक परिवार का खाना बना लेती हो?'

सुप्रिया की नजरों के सामने अपने किचन की वह दुर्दशा घूम गई, जो उसने अपने एकाध प्रयासों के दौरान किए थे। फलस्वरूप मम्मी ने उसके लिए किचन निषेध क्षेत्र घोषित कर दिया था। उसने एक और सैलरी को मन ही मन तिलांजलि देते हुए फिर हामी भरी।

'खैर आजकल तो बहुत कुछ यूट्यूब से भी सीख लेते हैं। वैसे पूजा-पाठ करती हो?'

इसके लिए सैलरी की जरूरत नहीं है। दो-चार आरतियाँ तो उसने इक्जाम की तैयारी के दौरान ही याद कर लीं थीं। इक्जाम की तैयारी के दौरान? और नहीं तो क्या, इक्जाम सिर्फ अपने टैलेंट से थोड़े न क्लीयर होते हैं। थोड़ा तो लक भी साथ देना चाहिए। उसके लिए कुछ पूजा-पाठ भी जरूरी है।

इस बार सुप्रिया ने हवा में माथा दाएं-बाएं लहरा-लहरा के हामी भरी ताकि कोई शक न रह जाए।

उन माताश्री ने पीठ वापस सोफे पर टिकाते हुए लंबी साँस ली। जैसे माताश्री का काम समाप्त हो गया हो। फिर शुरु हुआ पिताश्री का काम जो पैंतीस लाख के आस-पास आकर सिमट गया।

सुप्रिया को हैरानी हुई कि उसने तो अपनी दो सैलरियों के बल पर हामी भरी है। भला पापा ने किस बल पर हामी भरी। दहेज के लिए पैसे उन्होंने कभी बटोरे नहीं और कोई लंबी-चौड़ी जायदाद उनके लिए छोड़ नहीं गया है। उसने हैरानी से अपने पिता की ओर देखा और फिर पथराई आँखें टेबल पर पड़ी जूठी प्लेटों पर टिका दी।

'अच्छा तो अब चला जाए। हमारे पंडित जी जैसी तारीख-दिन-मुहूर्त बताएँगे, हम आपको सूचित कर देंगे।'

लड़के के पिताश्री ने जैसे ही अपने सिंगल सीटर सोफा के दोनों हाथों पर अपने हाथ रखकर अपना शरीर उठाना चाहा कि सुप्रिया ने स्पष्ट शब्दों में दृढ़ता के साथ कहा- 'मुझे कुछ पूछना है...!'

लड़के के पिताश्री वापस सोफे में धंसकर अपनी अर्धांगिनी को देखने लगे और अर्धांगिनी हैरत से उनको। सुप्रिया की मम्मी ने भी उसके पापा से आँखों ही आँखों में कहा कि हो गया बंटाधार।

बैठक में कुछ क्षणों तक सन्नाटा छाया रहा। यह वाक्य बोलकर सुप्रिया के दिमाग में भी कुछ पल के लिए सन्नाटा छाया रहा। फिर उसके दिमाग में अपनी माँ की बातें गूँजने लगीं। 'बड़ों के बीच में नहीं बोलते', 'तुम्हें अपने से बड़े का लिहाज करना चाहिए'।

इसलिए सुप्रिया लड़के की तरफ मुड़ गई और अपना वाक्य पूरा किया '...आपसे।'

अबतक दर-ओ-दीवार ताकता हुआ लड़का

(शेष पृष्ठ ११ पर)

इतिहास का मजाक न बनाएं

देवेन्द्र राज सुथार

संचार क्रांति के इस युग में इसमें कोई संदेह नहीं कि सिनेमा समाज का दर्पण है। उदाहरण के लिए अभी हाल ही में रिलीज हुई दंगल, सुल्तान में जहाँ एक ओर हरियाणा की सामाजिक संरचना को बहुत ही सूक्ष्म तरीके से बड़े परदे पर उकेरा गया तो वहीं पिंक, पार्च्ड जैसी फिल्मों में महिलाओं के प्रति हो रहे लैंगिक भेदभाव का मार्मिक अंकन किया गया। यदि बात संजय लीला भंसाली की जाये तो हम पाते हैं कि ये बालीवुड के सफल निर्देशक हैं। इन्होंने हम दिल दे चुके सनम, देवदास, ब्लैक, गोलियों की रासलीला रामलीला, बाजीराव मस्तानी जैसी सफल फिल्मों का निर्देशन किया है। हालाँकि देवदास, बाजीराव मस्तानी में इनके ऊपर इतिहास से छेड़छाड़ करने के आरोप पहले भी लगे हैं और अब अपनी आगामी फिल्म पद्मावती को लेकर आजकल ये विवादों में हैं। विवाद की मुख्य वजह यह बताई जा रही है कि इन्होंने रानी पद्मावती के आदर्श राजपूत नारी के व्यक्तित्व को परिवर्तित कर फिल्म में उनके आदर्श चरित्र से विचलन दिखाया है।

राजपूत समाज और राज परिवार की क्षत्राणियों का कहना है कि फिल्म में रानी पद्मावती को अलाउद्दीन खिलजी के सपने में दिखाया गया है, सोलह हजार रानियों के साथ जौहर करने वाली रानी को नर्तकी के तौर पर पेश कर उनके सतीत्व का अपमान किया गया है। साथ ही राजपूती पोशाक का गलत रुप दिखाया गया है। इन सभी वजहों को लेकर राजपूत समाज के लोगों में फिल्म को लेकर काफी आक्रोश देखने को मिल रहा है। राजस्थान सहित देश के कई राज्यों में फिल्म का विरोध प्रदर्शन भी शुरू हो गया है। उल्लेखनीय है कि फिल्म पद्मावती को सेंसर बोर्ड ने रिलीज करने की अनुमति नहीं दी है। इसके अलावा राजपूत समाज ने फिल्म रिलीज होने से पहले स्क्रीनिंग पर दिखाने की मांग की है। वहीं फिल्मकार संजय लीला भंसाली ने एक वीडियो के माध्यम से फिल्म में किसी की भावनाएं आहत होने से साफ इंकार किया है। दरअसल, यह भी सच है कि विवादों में रहने वाली फिल्में बॉक्स ऑफिस पर हिट हो जाती है। जिन्हें विदेशों में भी भारी संख्या में देखा और पसंद किया जाता है। इन सबसे बैगेरत कुछ उड़ंत लोगों का गिरोह सडकों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन के लिए हर समय उतावला दिखता है।

अब जहां तक रानी पद्मावती की कहानी की बात है, तो उसे जानने के लिए हमारे पास ऐतिहासिक स्रोत तो है ही। साथ ही मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' जैसा प्रामाणिक साहित्यिक स्रोत भी है। यदि इतिहास पर गौर करें तो हम पाते हैं कि रानी पद्मावती सिंहल द्वीप के राजा गंधर्वसेन और रानी चम्पावती की पुत्री थी। रानी पद्मिनी बचपन से ही बहुत सुंदर थी। बेटी के बड़ी होने पर उसके पिता ने रिवाज के अनुसार उसका स्वयंवर आयोजित किया। इस स्वयंवर में उसने सभी हिन्दू राजाओं और राजपूतों को बुलाया। चित्तौड़गढ़ के राजा रतन सिंह भी स्वयंवर में गए थे। राजा रतन सिंह (भीमसिंह) ने स्वयंवर जीता और पद्मिनी से विवाह किया। विवाह के बाद पद्मिनी के साथ चित्तौड़ लौट गए। एक अच्छे शासक और पति होने के अलावा रतन सिंह कला संरक्षक भी थे। उनके दरबार में कई प्रतिभाशाली लोग थे, जिनमें से राघव चेतन संगीतकार भी एक था। राघव चेतन एक जादूगर भी हैं, इस बारे में लोगों को पता नहीं था। वह अपनी प्रतिभा का उपयोग शत्रु को मार गिराने में करता था। कहा जाता है कि एक दिन राघव चेतन का बुरी आत्माओं को बुलाने का काम चल रहा था और वह रंगे हाथों पकड़ा गया। इस बात का पता चलते ही रावल रतन सिंह ने उसे अपने राज्य से निकाल दिया। इसके कारण राघव चेतन रतन सिंह का शत्रु बन गया। अपने अपमान का बदला लेने के लिए राघव चेतन दिल्ली चला गया। उस समय दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी था। राघव चेतन ने सुल्तान से रानी पद्मिनी की सुन्दरता का बखान किया, जिसे सुनकर खिलजी के भीतर रानी पद्मिनी से मिलने की इच्छा जगी।

राघव चेतन से तारीफ सुनने के बाद बेचैन सुल्तान खिलजी रानी पद्मिनी की एक झलक पाने को बेताब था। चित्तौड़गढ़ किले की घेरेबंदी के बाद खिलजी ने राजा रतन सिंह को यह संदेशा भेजा कि वह रानी पद्मिनी को अपनी बहन समान मानता है और उससे मिलना चाहता है। लेकिन रानी तैयार नहीं थी। रानी ने एक शर्त रखी। रानी पद्मिनी ने कहा कि वह अलाउदीन को पानी में परछाईं में अपना चेहरा दिखाएंगी।

जब अलाउदीन को ये खबर पता चली कि रानी पद्मिनी उससे मिलने को तैयार हो गई है वह अपने कुछ सैनिकों के किले में गया। रानी पद्मिनी की सुंदरता को पानी में परछाईं के रूप में देखने के बाद अलाउदीन खिलजी ने रानी पद्मिनी को अपना बनाने की ठान ली। वापस अपने शिविर में लौटते वक्त अलाउदीन खिलजी के साथ रतन सिंह भी थे। इस दौरान खिलजी के सैनिकों ने आदेश पाकर और मौका देखकर रतन सिंह को बंदी बना लिया। रतन सिंह की रिहाई की शर्त थी पद्मिनी। गोरा और बादल की बहादुरी और चालाकी से राजा रतन सिंह को खिलजी की कैद से मुक्त करवाया गया।

अपने को अपमानित महसूस करते हुए सुल्तान ने गुस्से में आकर अपनी सेना को चित्तौड़गढ़ किले पर आक्रमण करने का आदेश दिया। रतन सिंह की सेना खिलजी की सेना के समक्ष बहुत छोटी थी, किन्तु राजपूतों ने बहादुरी से अपने प्राणों की अंतिम साँस तक खिलजी के लड़ाकों का सामना किया और खुद रतन सिंह भी बहादुरी से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। यह सूचना पाकर रानी पद्मिनी (पद्मावती) ने चित्तौड़ की औरतों से कहा कि अब हमारे पास दो विकल्प हैं। या तो हम जौहर कर लें या फिर विजयी सेना के समक्ष अपना निरादर सहें। सभी महिलाओं की एक ही राय थी। एक विशाल चिता जलाई गई और रानी पद्मिनी के बाद चित्तौड़ की सारी औरतें उसमें कूद गईं और इस प्रकार दुश्मन बाहर खड़े देखते रह गए। जिन महिलाओं ने जौहर किया उनकी याद आज भी लोकगीतों में जीवित है, जिसमें उनके कार्य का गौरव बखान किया जाता है।

यदि हम साहित्यिक स्रोत जायसी के पद्मावत का अध्ययन करें तो भी हमें उपयुक्त जानकारी ही प्राप्त होती है। जायसी ने एकमात्र परिवर्तन किया है रत्नसेन की मृत्यु को लेकर। जायसी के अनुसार रत्नसेन अलाउद्दीन से युद्ध करते हुए नहीं बल्कि देवपाल से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त होते हैं। जायसी ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि जायसी अलाउद्दीन के हाथों रत्नसेन को मरने नहीं देना चाहते थे। ऐसा करने का अर्थ खलनायक के हाथों नायक की मौत दिखाना होता। इसलिए जायसी ने देवपाल की कल्पना की है। वैसे भी पद्मावत इतिहास नहीं, साहित्य है और साहित्य का निर्माण तथ्यों से नहीं, कल्पनाओं से होता है।

साहित्य की तरह फिल्में भी समाज का आईना होती हैं। जिस प्रकार साहित्यकार ऐतिहासिक रचना में कुछ नवीन मौलिकताएं लाता है, उसी प्रकार फिल्म निर्देशक भी अपनी फिल्मों में कुछ नया दिखाना चाहता है। जैसे निराला ने 'राम की शक्ति पूजा' में नवीन कल्पनाओं का समावेश किया है और खुद जायसी ने भी पद्मावत में अपने सांस्कृतिक समन्वय को स्थापित करते हुए मौलिकता दिखाई है। ध्यातव्य है कि साहित्यकारों की ये नवीन कल्पनायें देश, काल और परिस्थिति के अनुकूल होती हैं और समाज के हित में होती हैं। साहित्यकारों से सीख लेते हुए फिल्म निर्देशकों को भी इतिहास और अपनी कल्पना का समन्वय करते समय ध्यान रखना चाहिए कि उनकी नवीन कल्पनाएँ समाज के हित में हों, न कि समाज में नफरत व अलगाव की भावना फैलाने के लिए।

संजय लीला भंसाली को भी यदि इतिहास का उपयोग करके फिल्में बनानी हैं तो उनको चाहिए कि इसमें सकारात्मक दृष्टिकोण से कल्पनाओं को जोड़ना चाहिए। ऐसी कल्पनायें जो मानव सभ्यता के लिए विकास का प्रतिमान स्थापित करें। जयशंकर प्रसाद की तरह तात्कालिक समस्याओं का समाधान इतिहास के सहारे जनता के सामने प्रस्तुत करें। फिल्म निर्देशकों की कल्पनायें ऐसी होनी चाहिए जो समस्याओं का समाधान कर सकें, 'पद्मावती' फिल्म में की गयी फूहड़ कल्पनाओं की तरह न हों, जो समाज के सामने एक नई समस्या खड़ी कर दे। ■

जिंदगी पढ़ रही हूं तुम्हें/किताबों की तरह...
हर दिन एक नया पन्ना/कभी चुनौतियों से भरा
तो कभी सरलता से जीवन पथ पर/आगे बढ़ जाना
कभी देती है तू/उम्मीदों से भरा आसरा
एक बेहतर अध्याय/कुछ अच्छा होने करने की आशा
कभी आँखों में आंसुओं की नमी
जो जीवन पर्यन्त
अंतिम पन्नें तक पलकों को
भिगोए रखती है
जिंदगी पढ़ रही हूं तुम्हें
किताबों की तरह...

-- बबली सिन्हा

ये जो तुम अपने/पौरुष की शान में रहते हो
और गली गली भेड़ियों की भाँति/घूमते फिरते हो कि
कहीं कोई मिल जाये/बच्ची हो या बूढ़ी
उसी पर अपने पौरुष का रौब दिखाकर
अपना मुँह काला किये फिरते हो
और हाँ घूमोगे भी क्यों नहीं
तुम्हें तो वो आजादी ही मिली है
क्योंकि कानून का सहारा लो तो
नाबालिग घोषित हो जाते हो
खुद को मजबूत बनाकर लड़ो तो
खुद समाज की नजरों में/गलत साबित हो जाते हैं
फिर तो तुम आसानी से/रेप पर रेप करते फिरोगे
धिक्कार है ऐसे पौरुष का
लानत है तुम्हारे पुरुष होने पर!

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

कहते हैं खंडहर को, बरसात ने मारा
अब इसको सम्हालो, काम ये तुम्हारा
वो भूल जाते हैं, जिम्मेदारियां अपनी
सारी लोहें चुरा ली, बनकर के नकारा
टपकी जब एक बूंद, तो छाया गया नहीं
गिरता गया महल,
सम्हाला गया नहीं
कोठी बनाके अपनी,
अब रहने लगे हुजूर
कहें खंडहर सम्हालो,
यही नसीब है तुम्हारा!

-- प्रदीप कुमार तिवारी

एक दरवाजा बंद हो जाए/तुम्हारी कामयाबी का और
खिड़की भी न खुले कोई/तो यूँ ही कैद न रहो कमरे में
या तो तोड़ दो बंद दरवाजा/पहुँचो अपनी मंजिल तक
या कर दो छेद दीवारों में
लोग तो आसमान में भी
सुराख की बात करते हैं
अपनी मंजिल तक पहुँचो
कैसे भी कुछ भी करके
और करना क्या है? परिश्रम!
कर्मवीर बनो शिखर छुओ

-- नवीन कुमार जैन

अजीब ये दुनिया/अजीब ये सिलसिला
क्यों लड़ते हैं लोग/क्या मिलता है इन्हें
बीज बोते हैं ये/तो पौधें उगेंगे ही
काँटा बोयेंगे ये/तो काँटा चुभेगा ही
क्यों नही सोचते लोग कि/उपर वाला भी देख रहा है
क्यों सताते हैं दुसरे को/क्या मिलता है इन्हें
एक बार भी प्रभु का नाम नही आता
और गालियाँ सैकड़ों याद हैं इन्हें
यही है इनकी कहानी
पछताएँगे ये एक दिन
जब दुनिया से विदा होंगे
मिलकर रहना सीखो यारो
एकता में ही बल है!

-- बिजया लक्ष्मी

हमने भी उन चेहरे में सुकून ढूंढ़ लिया
जिनका बचपन न जाने कहाँ खो गया है
रोज उस मासूम को संघर्ष करते देखती हूँ
किस्मत रूठी सी है उसकी
कूड़े-कचरे में क्या ढूंढ़ रहा है
क्या ख्वाब होंगे उसकी आँखों में
खुद के लिए क्या सोच रहा होगा
पेट के लिए रोटी की तलब है उसे
हर रोज देखे हैं मैंने ऐसे ही मासूम
जिनकी जिन्दगी में गरीबी और लाचारी है
कहने को तो लोगों के पास दया का भंडार है
मगर ये सब झूठी शान है
क्यूँ नहीं दिखते लोगों को चेहरे उदास
अगर हम इन मासूम बच्चों को मुस्कुराहट दें
इन बच्चों के चेहरे पर जो मुस्कान नजर आयेगी
हमारे मन को सुकून दे जायेगी

-- उपासना पाण्डेय (आकांक्षा)

रह गए रीते संबंध सभी, वो पहले सा आभास कहाँ
अपनत्व लिए संबंध नहीं, वो स्नेह भरा मधुमास कहाँ
रहते हैं सब अपने-अपने, ना एक दूजे से लगाव रहा
इच्छाओं का मानव बोझ लिये, बस रुपए पीछे भाग रहा
है होड़ शिखर तक जाने की, चुने राह बडी सुगम सरल
रोटी मेहनत की हजम नहीं, कर्म बुरे करता पल-पल
मन के अँदर है द्वेष भरा, करता बाहर मीठी बतियाँ
मानव का यही अब रूप बना, छल से रंगी पड़ी दुनिया
संयम ना रहा किसी में, सब आपाधापी में शामिल हैं
बचा नहीं ईमान और धर्म कहीं
रिश्ते छलते यहाँ पल-पल हैं
कोई करता नहीं मनुहार यहाँ
सब कुछ देखो है सिमट सा गया
क्या देश ये क्या घर का अँगना
हिस्सों में कई देखो बँट सा गया
हो सबमें एक अपनासा पन
पुनरू भाव जनित करना होगा
रख ईर्ष्या-द्वेष को परे कहीं,
मन प्रेम-भाव भरना होगा

-- लक्ष्मी थपलियाल

कल रात तू मेरे सपने में आई थी
कुछ देर मुझे देख मुस्कुराई थी
मैंने बहुत की थी कोशिश/कि छू के देखूँ तुझको
पर छू सकूं इससे पहले ही/तेरी आँख भर आयी थी
क्या वजह थी उन आंसुओं की
ये बात न मेरी समझ आयी थी
क्या वो रिश्तों की थी मर्यादा
या किसी को दिया वचन
पर तू चाहकर भी
मेरे नजदीक न हो पाई थी
पर शायद तू भी नहीं रह सकती/बिना मिले मुझसे
तभी हकीकत में सम्भव नहीं/तो सपने में ही आयी थी
हाँ, कल रात तू मेरे सपने में आई थी

-- महेश कुमार माटा

विसर्जित कर आई हूँ
वो मोह जिससे बेहद प्रेम से तुमसे जोड़ा था
वो माया जो तुम्हारी अनुभूति क्षण क्षण कराती थीं
वो लालसा तुम्हारे प्रेम की
वो आदत तुम्हारे प्रतीक्षा की
वो खेल बिन बात रूठ जाने का
वो कोशिश तुम्हें मानने की
वो हठ तुम्हें खुश देखने की
वो सपने तुम्हें महान देखने की
वो क्रोध कुंठा तुम्हारे तिरस्कार से मिली
वो दिन रात अंतर्द्वन्द्व को विसर्जित कर आई हूँ
हाँ वह खींच तान के रिश्ते को मैंने ही
शायद मैंने ही दोनों छोरों से पकड़ कर रखा था
उसे विसर्जित कर आई हूँ

-- अर्पणा संत सिंह

चंद स्वर्ण सिक्के जो शायद
धरोहर हो हमारे पूर्वजों की
सोचता हूँ अगर ये कभी
संग्रहीत करने के बदले
गरीब मजलूमों पर
व्यय कर दिए गए होते
भारत कभी सोने का चिड़िया था
यह इतिहास नहीं होता,
वर्तमान में हकीकत होती!

-- अमित कु अम्बष्ट 'आमिली'

तेरी पायल की रुनझुन से/घर मेरा डोले
तेरी एक किलकारी पे/पापा है बोले
जब से तुम आई जिंदगी में मेरे
खुशियों की वर्षा होती है साँझ सबेरे
तुम से ही शुरू होती है
खुशियों की क्यारी
तुम ही तुम ही बस तुम ही तो
अपने पापा की दुलारी
मेरी प्यारी बिटिया रानी

-- रवि प्रभात

डिजिटल प्रेम

'विधि, प्रसून जी इसी बार पुस्तक मेले में दिल्ली आएंगे! तुम आ रही हो ना मिलने?' रिसीवर पकडे जड़ सी हो गयी विधि! यह संध्या को क्या प्रसून ने सब कुछ बतला दिया? 'बोलो विधि? तुम आ रही हो ना?' संध्या शायद फोन पर ही उसकी मनोस्थिति ताड़ चुकी थी!

खुद को संभालते हुए विधि ने अनमने भाव से धीमे से उत्तर दिया, 'नहीं! अभी तो मुझे न्यू जर्सी जाना है! पता नहीं कब वापिस आऊं! अगले साल पक्का!'

विधि उधेड़बुन में थी कैसे पता करे कि संध्या और प्रसून जी के बीच उसे लेकर चल क्या रहा है? प्रसून से विधि ने कई बार कुरेद कर पूछा भी था कि वो संध्या को कितना जानते हैं, उनके कैसे सम्बन्ध है वगैरह! कई बार तो प्रसून टाल गए जवाब और दिया भी तो सिर्फ यह, 'मेरी फेसबुक फ्रेंड है बस!'

कुछ समय से संध्या प्रसून को लेकर उसे छेड़ने लगी थी! संध्या ने ही उनसे मित्रता करवाई थी यह कह कर 'बहुत बड़े लेखक हैं! विदेश में रहकर अपने साहित्य के लिए कितना काम कर रहे हैं! उन्हें कब कब, किन पुरस्कारों से नवाजा गया बताया था! विधि को प्रसून की कहानियां पढ़वाई! सब बातें याद करके विधि का मन विचलित सा था! मयंक (पति) की याद आने लगी थी! मयंक ने हमेशा उसे विषम परिस्थिति से उबारा है। क्या हुआ जो थोड़ी कहा-सुनी हो गयी! उसे तो समझदारी दिखानी चाहिए थी, यूं जरा सी बात पर घर छोड़कर नहीं आना चाहिए था!

गेट खटखटाने की आवाज ने उसकी तन्द्रा तोड़ी! जाकर देखा तो कोरियर था उसके नाम का!

'आकाशगंगा' मेलबर्न से प्रकाशित एकमात्र हिंदी वार्षिक पत्रिका जिसके संपादक प्रसून शर्मा थे!

दोपहर का समय उसका खाली ही जाता था सो पत्रिका खोल पन्ने पलटने लगी और सबसे पहले प्रसून की कहानी निकाल ली! जैसे जैसे पढ़ती जा रही थी उसके चेहरे पर अपमान, क्षुब्धता के भाव आते जा रहे थे। कई बार चोर नजरों से द्वार की ओर देखा, कोई देख तो नहीं रहा? वैसे कोई देखता भी तो सिवाय उसके समझता कौन कि उसके मन में प्राश्चित के, दुःख के कैसे बवंडर उठ रहे हैं? प्रसून ने बस उसका नाम बदल कर 'डिजिटल प्रेम कथा' शीर्षक से अपने और विधि के बीच हुए वार्तालाप को थोड़े काल्पनिक अश्लील वाक्यों के साथ जरूरत से ज्यादा चटपटा बनाकर परोसा था!

जड़ हुई विधि एक वर्ष पहले के अतीत में चली गयी जब मयंक से उसका अलगाव हुआ था और वो नई नई फेसबुक से जुडी थी तो एक साहित्यिक ग्रुप के जज प्रसून शर्मा थे! उसकी रचनाओं को दाद देते-देते कब उसके मित्र बने, कब मित्र से और ज्यादा नजदीकी बने और उनमें घनिष्टता बढ़ती गयी फिर फोन नंबर के आदान-प्रदान के बाद व्हाट्सएप पर वार्तालाप और अंत में कॉल! लेकिन विधि ने कभी मर्यादा भंग नहीं की थी! उन्होंने बताया तो था कि वो उसे जल्दी ही सरप्राइज देंगे लेकिन इतना ओछा सरप्राइज? उफ! औरत के अकेलेपन का फायदा उठाने में यह डिजिटल मित्र भी कितनी शातिरता से खेल गए उसकी भावनाओं से? एक बार मन में आया अभी कॉल करके फटकार लगाऊं, फिर लगा अबकी बार कहीं आवाज ही रिकॉर्ड ना कर लें! जल्दी से फोन और फेसबुक दोनों से उन्हें ब्लॉक किया! आज पति से अलगाव खटक रहा था और वह चल पड़ी उनके पास!

-- पूर्णिमा शर्मा

सबसे सुन्दर दृश्य

बहुत दिनों से फोटोग्राफर के मन में बस एक ही धुन सवार थी। वह अपने कैमरे में सबसे सुन्दर दृश्य उतारना चाहता था। यूँ तो उसने कई रमणीय दृश्यों को अपने कैमरे में बन्द कर रखा था। फिर भी उसका मन और सुन्दर दृश्य की खोज में व्याकुल था। अपनी इस खोज के लिए इस बार उसने बनारस के एक प्रसिद्ध मन्दिर को चुना। सुबह होते ही सीढ़ियों पर जाकर खड़ा हो गया। दर्शनों के लिए भक्तगण आते रहे और उसकी निगाहें प्रत्येक को तोलती रहीं।

पर ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा था वह निराश होता जा रहा था। तभी वहां एक अधेड़ उम्र के सज्जन सफेद कुर्ता और धोती पहने हुए कार से उतरे। चेहरे से सौम्यता झलक रही थी। साफ-सुथरे कपड़ों को देखकर फोटोग्राफर ने उनकी सादगी और सज्जनता का अनुमान लगाया। उनके पीछे एक बूढ़ा प्रसाद की थाली संभाले चल रहा था। देखने में वह उनका नौकर लग रहा था।

करीब पांच-छः मिनट वह देवप्रतिमा के सामने स्तुति करते रहे। फिर एक-एक कर प्रसाद बांटने लगे। सहसा उनकी दृष्टि एक मैले-कुचौले कपड़ों में लिपटे एक भिखारी पर पड़ी, जो याचना भरी दृष्टि से हाथ उनकी ओर बढ़ाये हुए था। उसे देखते ही उनका हाथ ऊपर ही रुक गया और घृणा भरी दृष्टि से उसको देखते हुए प्रसाद उसके हाथ में डाल दिया तथा स्वयं राम-राम करते हुए अपनी कार की ओर बढ़ गये।

एक बार फिर फोटोग्राफर का मन निराशा से घिर गया। तभी उसे सड़क पर भीड़ दिखायी दी। वह तुरन्त वहां जा पहुंचा। उसने देखा कि एक आठ-दस बरस के बच्चे का एक्सीडेण्ट उन्हीं सज्जन की कार से हो गया है। बच्चे के दोनों पैर कुचल गए हैं। वह सड़क के बीचोंबीच पड़ा है। कोई उसे उठाने वाला नहीं है, बल्कि सभी तमाशा देख रहे हैं।

तभी भीड़ को चीरता हुआ वही भिखारी आया और उस बच्चे को उठाकर सभी तमाशा देखने वालों से कहा- 'शर्म की बात है तुम लोगों के लिए जो खड़े-खड़े तमाशा देख रहे हो? बच्चे के मरने-जीने की कोई परवाह नहीं। तुम लोगों में दया नाम की कोई चीज है। जो मनुष्य होकर भी मनुष्य की सेवा करना नहीं जानते?

'तुम इसके कौन हो? जो इसकी मदद कर बेवजह संकट में पड़ना चाहते हो?' भीड़ में से किसी ने कहा।

भिखारी बोला- 'मैं एक इंसान हूं और यह भी एक इंसान है। मनुष्य की सेवा करना ही मनुष्य का धर्म एवं मानवता है।'

तभी फाटोग्राफर ने मन में विचार किया कि इससे सुन्दर और रमणीय दृश्य कौन होगा और उसने अपने कैमरे को ठीक कर उस दृश्य को सदैव के लिए अपने कैमरे में बन्द कर लिया।

-- शशांक मिश्र भारती

सिफारिश

गाँव के ही दबंग टपल्लू से बचनराम का खेत की मेड़ को लेकर विवाद क्या हुआ, बेचारे बचनराम को हवालात की हवा खानी पड़ गई। वैसे थानेदार साहब ने बचनराम पर दया दिखाते हुए, दो हजार की दक्षिणा मांगी थी और मामला गाँव में ही सुलटा देने को कहा, पर बचनराम पर तो नोन तक खरीदने के लिए दस रूपये जेब में न थे, इसीलिए वो दो हजार की रकम कहाँ से देता। इसीलिए अब वो हवालात में बंद था।

बचनराम हवालात में बैठा-बैठा सोच रहा था, काश वह टपल्लू से कुछ न कहता, फिर चाहे उसका आधा खेत ही वो टपल्लू क्यों न जोत लेता। तभी उसे कल वाली बात याद आ गई। गाँव में विधायक जी चुनाव प्रचार के लिए आये थे, उससे भी बात की थी विधायक जी ने और एक कार्ड भी दिया था, यह कहते हुए जब भी कोर्ट कचहरी, थाने-वाने का लफड़ा बने बेहिचक रात के बारह बजे मुझे फोन करना, उसी वक्त मदद को हाजिर हो जाऊंगा पर बस कृपा दृष्टि बनाये रखना ।

बचनराम ने अपने फटे कुर्ते की जेब टटोली तो कार्ड मिल गया। कार्ड दिखाते हुए बचनराम थानेदार साहब से गिड़गिड़ाया। थानेदार जी ने कार्ड बचनराम के हाथ से छीन लिया और एकांत में चले गये। 'हैलो सर, नमस्ते! सर ! एक मुर्गा है बचनराम नाम है उसका। आपका कार्ड दिखा रहा है। क्या करूं उसका?'

'छोड़ दो चार-छः डंडे जमा के... वोट बैंक है।'

कुछ देर बाद बचनराम अपनी पींठ सहलाते हुए बाहर आ गया। पर वह खुश था कि विधायक जी की सिफारिश ने उन्हें हवालात से आजाद करा दिया। पींठ लाल तो टपल्लू से झगड़ा करने के कारण हुई है।

-- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

(चौथी और अंतिम किस्त)

शान्ति

मनमोहन भाटिया

वृन्दा ने शान्ति के गालों पर हल्की चपत लगाकर कहा, 'पागल क्यों बन रही है, मुझसे कह क्या चाहती है?'

'दीदी मेरे बेटे की शादी है। मैं उसको आशीर्वाद देना चाहती हूं। एक खुशी का मौका है, मैं भी नाचना चाहती हूं, जश्न मनाना चाहती हूं, मुझे सब रोक रहे है।'

वृन्दा ने हैरानी से शान्ति के माता पिता से पूछा, 'आप इसको पुत्र विवाह से क्यों दूर रख रहे हैं?'

रोते-रोते शान्ति के पिता ने कहा, 'मैं क्यों रोकूंगा इसको? इसके पुत्र विवाह की खबर हमें मालूम थी, हमने इससे यह बात इसलिए छुपाई कि इसकी ससुराल ने सारे संबंध तोड रखे हैं। पति ने त्याग रखा है, बच्चे इसको पहचानते नहीं। क्या करेगी विवाह में जाकर। दो दिन पहले हमारे घर रिश्तेदार आए और इसके सामने विवाह की बात की। यह पागल ससुराल अपने पति और पुत्र से मिलने चली गई। पति ने दुत्कार दिया और बच्चे पहचानते नहीं। ससुराल वालों ने धक्के मारकर बाहर कर दिया, तभी से पगला गई है।'

'मैं पागल नहीं हूं, दीदी, दुनिया पागल है। मैं जानती हूं, दीदी आप मेरी सहायता जरूर करेंगी। मुझे अपने बच्चे से मिलना है।'

'हां मैं तुझे लेकर जाऊंगी, लेकिन एक शर्त पर, तू पगलाएगी नहीं।' वृन्दा की बात सुनकर विमल हैरान हो गया कि वृन्दा ने क्या सोच समझकर शान्ति से वायदा किया।

'हां, हां दीदी, आप जैसा कहेंगी, मैं वैसा ही करूंगी।' शान्ति खुशियों से झूमने लगी।

नर्सिंगहोम से बाहर आकर विमल ने वृन्दा से कहा, 'यह क्या वायदा शान्ति से किया तुमने?'

'काम मुश्किल जरूर है लेकिन असंभव नहीं है। हमें इसके पति से मिलना होगा। एक असहाय महिला को पल भर की झूठी खुशी ही सही, पूरा संसार पा लेगी वह। वह पागल नहीं है। स्वार्थ के कारण पागल घोषित की हुई है। शरीर से लाचार चुप करके सब दुख सहती रही। एक छोटे बच्चे की तरह अपनी जिद पूरी करना चाहती है, तो क्या बुराई है, कोई नही?' यह सोचकर अगली सुबह विमल, वृन्दा शान्ति की ससुराल पहुंचे।

विवाह के शुभ उत्सव पर सभी परिवार जन विवाह संबंधित कार्यों में व्यस्त थे। शान्ति के पति घर पर नहीं थे, इस कारण लगभग दो घंटे उन दोनों को इंतजार करना पडा। इंतजार के बाद जब शान्ति के पति से मुलाकात हुई तो उलटे वह बिगड़कर बोला। 'क्या अंटशंट बक रहो हो। शक्ल से तो पढ़े-लिखे सभ्य लगते हो, लेकिन शान्ति तो पागल है, तुम दोनों तो महापागल हो। निकल जाओ, अभी यहां से। मुझे कोई बात नहीं करनी तुम दोनों से। मंगल कार्यों में विघ्न डालने वालों की कोई कमी नहीं होती। किसी की खुशियां बरदाश्त नहीं कर सकता कोई।' इतना कहकर शान्ति के पति ने क्रोधित होकर कहा, 'फौरन निकल जाओ वरना पुलिस को बुलाना पड़ेगा।'

जितना क्रोध शान्ति के पति को था, उतने ही शान्त विमल, वृन्दा थे। विमल ने आराम से अपनी जेब से मोबाइल फोन निकालकर शान्ति के पति की ओर बढ़ाया। 'यह लीजिए फोन, बडे शौक से पुलिस को बुलाईये।'

'पुरानी कहावत है, क्रोध में मति मारी जाती है। झट से १०० नम्बर डायल कर शान्ति के पति ने पुलिस को बुलाया। थोडी देर बाद पीसीआर की वैन ने दस्तक दी। पुलिस के सामने उसने विमल, वृन्दा को बहुत बुरा भला कहा। झगडे में पुलिस का काम सिर्फ अपना उल्लू सीधा करना होता है, अतः दोनों को थाने चलने को कहा, तब विमल ने कहा, 'आप एक तरफा बात सुन रहे हैं। मैं चुप हूं, इसका यह अर्थ नहीं कि मैं दोषी हूं। जो दोषी है वोही हो-हल्ला मचा रहा है। मैं थाने चलने को तैयार हूं, वहां रिपोर्ट लिखवानी है कि एक पत्नी के होते हुए इन जनाब ने दूसरी शादी की। अभी तक पहली पत्नी से तलाक भी नहीं हुआ है, उसको घर से बेघर किया है, उसी के बेटे की शादी है, जिसमें मां को शामिल नहीं करने के लिए आपको बुलवाया है। चलो थाने, बंद कीजिए इन महाशय को लॉकअप में।'

विमल ने सारा किस्सा पुलिस के सामने बयान किया। इतना सुनते ही पुलिस को मसाला मिल गया और शान्ति के पति को घेरना शुरू किया, तो वह पुलिस से सौदेबाजी करने लगा। विवाह के शुभ अवसर पर झगड़ा। पुलिस थाने की नौबत से निपटाने के लिए वहां मौजूद रिश्तेदार बीच-बचाव में कूदे। विमल का एक ही लक्ष्य था कि शान्ति विवाह में सम्मिलित होकर अपने पुत्र को एक बार गले लगाकर आशीर्वाद दे।

अपनी इज्जत बचाने, कोर्ट थाने के चक्कर से बचने के लिए शान्ति के पति ने विमल की बात मानकर शान्ति को विवाह में शामिल होने की अनुमति दे दी। पुलिस के जाने के बाद शान्ति ने विवाह के समारोह में प्रवेश किया।

शान्ति आज कितनी खुश थी, यह सिर्फ शान्ति ही जानती थी। उसकी खुशी का अंदाजा विमल, वृन्दा को था। एक मरियल से शरीर में विशेष उत्साह का संचार हुआ। नाचती गाती शान्ति ने विवाह में पुत्र, पुत्रवधु को गले लगाकर आर्शिवाद दिया। वृन्दा के पैर छूकर रो पड़ी। पैरों से लिपटकर बस यही कहती रही, 'दीदी मेरा सपना आपने पूरा किया है, मैं आपकी ऋणी हूं।' वृन्दा ने बहुत मुश्किल से अपने पैरों से शान्ति को अलग किया। उसके माथे को चूमती हुई बोली, 'पगली, आज मैं तुझको सबके सामने पहली बार कहूंगी पागल, तू पागल ही है। तुझको विवाह में शामिल होना था, हुई। इसमें ऋण कैसा। शायद मैने अपना कर्तव्य पूरा किया है।'

शान्ति के मुख पर लालिमा थी। कोई कारण नहीं जान सका। रात को बिस्तर पर सोने के लिए लेटी और शान्त हो गई। पूरी जिन्दगी दुखों में काटती रही। लोगों की गालियां सुनी। एक सुख पाकर शान्त हो गई। सारा मुहल्ला जो उस पर थूकता था। रोते-रोते शवयात्रा में सम्मिलित थे। एक पागल के शान्त होने पर सभी छोटे, बडे रोए जा रहे थे। उसके शान्त होने पर ही उसका दुख समझ सके। पति और पुत्र ने अपना कर्तव्य अंतिम संस्कार करके निभाया। जो उसके घर से बचकर निकलते थे, आज रुक-रुककर घर के दरवाजे पर टकटकी लगाए हुए थे, शायद शान्ति घर से बाहर निकल आए। (समाप्त)

(पृष्ठ ७ का शेष)

कहानी- टाई और धोती

सचेत हो गया। अब तक की मुद्रा से लग ही नहीं रहा था कि इस शादी से उसका कुछ लेना-देना है। मगर अब वह संतुलित हो सुप्रिया की ओर देखने लगा। तभी उसकी माँ ने खीसें निपोरते हुए बात सँभाल ली।

'हाँ, हाँ, क्यों नहीं? अरे मेरा लड़का इंजीनियर है। पढ़ा-लिखा है, बिल्डिंगें बनाता है। तुम्हारे किसी भी सवाल का जवाब दे सकता है। पूछो-पूछो।'

सुप्रिया को मन ही मन आश्चर्य हुआ- 'बिल्डिंगें बनाता है? मगर जहाँ तक सुप्रिया ने बायोडाटा में पढ़ा था वह आर एंड डी डिपार्टमेंट में है। क्या रिसर्च वालों से बिल्डिंगें भी बनवाते हैं? खैर! प्राइवेट कंपनी है, कुछ भी करा सकती है।

लड़के की माँ ने सुप्रिया की पापा की ओर देखकर बेतहाशा मुस्कुराते हुए कहा- 'आज-कल के बच्चे हैं न। इनकी अपनी ही जरूरतें होती हैं। हे हे हे...।'

जरूर सुप्रिया के पापा ने मन ही मन कहा होगा कि 'वह तो मैडम आपको जल्द पता लग जाएगा। जरा मेरी बेटी को मुँह खोलने तो दो।'

माताश्री की हँसी पूरी होते-होते सुप्रिया ने मिसाइल दाग दिया। 'क्या आपको टाई और धोती बाँधनी आती है?'

लड़का थोड़ा सकपकाया फिर संतुलित होकर जवाब दिया। 'वेल (खराश लेते हुए) टाई तो मैं सीख रहा हूँ मगर धोती? मतलब धोती का क्या यूज?'

'वेल... आप ये दोनों चीजें यूटूब से सीख सकते हैं, क्योंकि मेरे ऑफिस का कोई फैमिली फंक्शन होगा तो आप टाई में अच्छे लगेंगे और जब मैं कोई पूजा-पाठ करूँगी तब क्या आप पैंट में अच्छे लगेंगे? पहनने को तो आप कुर्ता-पजामा भी पहन सकते हैं। मगर जब मैं साड़ी पहनकर पारंपरिक वेशभूषा पहनूँगी, तो आपको भी तो धोती ही पहननी चाहिए।'

फिर क्या हुआ? इस कहानी में कुछ हो सकता है क्या? खासकर ऐसी मुँहफट लड़की का? (समाप्त)

बालीवुड में भांड भरे हैं, नीयत सबकी काली है
इतिहासों को बदल रहे, संजय लीला भंसाली है
चालीस युद्ध जीतने वाले को ना वीर बताया था
संजय तुमने बाजीराव को बस आशिक दर्शाया था
सहनशीलता की संजय हर बात पुरानी छोड़ चुके
क्षात्र धर्म की खातिर हम कितनी मस्तानी छोड़ चुके
अपराध जघन्य है तेरा, दोषी ब लीवुड सारा है
इसलिए राजपूतों ने सेट पर जाकर मारा है
संजय तुमको मर्द मानता, जो अजमेर भी जाते तुम
दरगाह वाले हाजी का भी नरसंहार दिखाते तुम
सच्चा कलमकार हूँ संजय, दर्पण तुम्हें दिखाता हूँ
जौहर पद्मा रानी का, तुमको आज बताता हूँ
सुन्दर रूप देख रानी का बैर लिया था खिलजी ने
चित्तौड़ दुर्ग का कोना कोना घेर लिया था खिलजी ने
माँस नोचते गिद्धों से, लड़ते वो शाकाहारी थे
मुट्ठी भर थे राजपूत, लेकिन मुगलो पर भारी थे
राजपूतों की देख वीरता, खिलजी उस दिन काँप गया
लड़कर जीत नहीं सकता वो, ये सच्चाई भांप गया
राजा रतन सिंह से बोला, राजा इतना काम करो
हिंसा में नुकसान सभी का अभी युद्ध विराम करो
पैगाम हमारा जाकर रानी पद्मावती को बतला दो
चेहरा विश्व सुंदरी का बस दर्पण में ही दिखला दो
राजा ने रानी से बोला रानी मान गयी थी जी
चित्तौड़ नहीं ढहने दूंगी ये रानी ठान गयी थी जी
अगले दिन चित्तौड़ में खिलजी सेनापति के संग आया
समकक्ष रूप चंद्रमा सा पद्मावती ने दिखलाया
रूप देखकर रानी का खिलजी घायल सा लगता था
दुष्ट दरिंदा पापी वो पागल पागल सा लगता था
रतन सिंह थे भोले राजा उस खिलजी से छले गए
कैद किया खिलजी ने उनको जेलखाने में चले गए
खिलजी ने सन्देश दिया चित्तौड़ की शान बक्श दूंगा
मेरी रानी बन जाओ, राजा की जान बक्श दूंगा
रानी ने सन्देश लिखा, मैं तन मन अर्पण करती हूँ
संग में नौ सौ दासी है और स्वयं समर्पण करती हूँ
सभी पालकी में रानी ने बस सेना ही बिठाई थी
सारी पालकी उस दुर्गा ने खिलजी को भिजवाई थी
सेना भेजकर रानी ने जय क्षात्र बोल दिया
अग्नि कुंड तैयार किया था और साका भी खोल दिया
मिली सूचना सारे सैनिक, मौत के घाट उतार दिए
और दुष्ट खिलजी ने राजा रतन सिंह भी मार दिए
मानो अग्नि कुंड की अग्नि उस दिन पानी पानी थी
सोलह हजार नारियों के
संग जलती पद्मा रानी थी
सच्चाई को दिखलाओ,
हम सभी सत्य स्वीकारेंगे
बलिदान को बदनाम किया
तो तेरा शीश उतारेंगे

-- गौरव चौहान

दीप बहुत-से जला चुकी हूं, हुआ न दूर अंधेरा
जीवन बीत रहा है निशिदिन, करके तेरा-मेरा
कृपादृष्टि जब हो तेरी तब, तू-ही-तू दिख जाए
मन के दीप जला दे भगवन, जग रोशन हो जाए
कभी न आई पास तुम्हारे, भटकी द्वारे-द्वारे
सबकी आस लगाई पल-पल, अब तो नयना हारे
अश्रुकणों को तेल बना जो, किरणों को फैलाए
मन के दीप जला दे भगवन, जग रोशन हो जाए
आने को है अंतिम क्षण, पर मैं तैयार कहां हूं
तनिक समय दे चरणोदक से, मैं चुपचाप नहा लूं
राह कौन-सी आऊं जिससे, तू मुझको मिल जाए?
मन के दीप जला दे भगवन, जग रोशन हो जाए
नहीं बुद्धि है, बल भी कम है, साधन भी सीमित हैं
चारों ओर अंधेरा छाया,
उज्ज्वलता परिमित है
तू प्रकाश के सुमन खिला
दे, क्षीण वदन मुस्काए
मन के दीप जला दे भगवन
जग रोशन हो जाए

-- लीला तिवानी

रात गहरी औ आसमां में छाये सितारे
ख्वाहिशों की तरह बस तुम चले आना
खयालों में औ चांद कर जायें इशारे
दुआ की तरह बस तुम चले आना
सूनी फिजा औ मदहोश हवायें पुकारे
धड़कनों की तरह बस तुम चले आना
गरजे बादल औ बिखरती जायें बूंदें
बहते अश्क की तरह बस तुम चले आना
सांसो की डोर औ हदों से टकराये नजारे
तन्हाई की तरह बस तुम चले आना
हर्फों के साज औ दिल हो जाये बेजार
अहसास की तरह
बस तुम चले आना
खामोश वफा औ
फासले कराये एतबार
जिंदगी की तरह
बस तुम चले आना

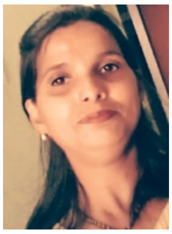

-- नंदिता तनूजा 'रुह'

दर्द मुस्काने लगा, मातमों का राज है
है तिमिर की वंदना अब रो रहा उजियार है
अब व्यथा नगमे सुनाती पीर का संसार है
सत्य बौना हो गया, घुट रही आवाज है
वक्त, लगता हो महाजन किश्त भरवा रहा
जिन्दगी है कर्ज जैसे बाजियां हरवा रहा
मूल तो ठहरा वहीं पर, बढ़ रहा पर ब्याज है
त्रासदी का दौर है यह
सांस घुटती जा रही
बस्तियां आतंकमय हैं
चीख बढ़ती जा रही
दुर्दिनों का तांडव है,
कोढ़ में अब खाज है

-- प्रो. शरद नारायण खरे

कर्म अपणे न कर अर्जुन नहीं कर्म से गिरणा सै।
जिसनै लिया जन्म धरती पै, एक दिन उसनै मरणा सै।
कर्म से योग, योग से विद्या, विद्या से विद्वान होवै
तप से ध्यान, ध्यान से समाधि, फेर सत्-असत् का ज्ञान होवै
यज्ञ से दान, दान से भावै, भावै में भगवान होवै
कर्म से नीच, कर्म से मध्यम, कर्म से ही महान होवै।
कर्म करे बिन इस दुनिया में नहीं किसी नै सरणा सै।1।
के लेकें आया था तू, के लेकें जाणां
किसके खोण का डर लागै के चावै तू पाणां
समय का दरिया बहता जा, ना फेर हाथ में आणां
कर्म करे बिन धर्म की हाणी, ना चाहिए पापा कमाणां
जब लड़ना ऐ सै धर्म तेरा, फेर कोणसे पाप तै डरणा सै।2।
क्षत्री का हो धर्म लड़ाई जब लग छाती धड़कै
अस्त्र शस्त्र डालै दिए क्यूं मोह माया में पड़कै
दुनिया ताने मारैगी रोवैगा भीतर बड़कै
या वीरां की मौत मिलै पा राज करैगा लड़कै
बोला आले तीर चलगें ना जख्म तेरा फेर भरणा सै।3।
अस्त्र-शस्त्र काट सकै ना ना अग्नि तै भी जल्या करै
वायू तै भी सुक्खै कोन्या, ना जल के अन्दर गल्या करै
यश-किर्ती परोपकार मोक्ष सब धर्म वृक्ष के फल्या करै
जीणां मरणां उस हर के हाथ में ना टाले से टल्या करै
हो ज्या तू शरणागत मेरै जे भवैसागर पै तरणा सै।4।
सूर्य चन्द्र की प्रभा सूं वेदां में ओंकार मैं
गृहस्ती का मनै धर्म कहं अतिथी का सत्कार मैं
जड़ चेतन कै अन्दर सूं सब जगह कै बहार मैं
बणकै काल संहारकर्ता सब का पालनहार मैं
संदीप कोहाड़ हसनगढ़ आले अब तैं फसला करणां सै।5।

-- संदीप कोहाड़

कल तक माता के आँचल में, बैठ सभी सुख पाते थे
भूखे नंगे लावारिस भी, जीवन जीने आते थे
कभी वृक्ष रूपी हड्डी को काटा, काम किया अपना
अपने सपनों के चक्कर में, जला दिया माँ का सपना
किन्तु आज कुहरे में लिपटी, दिल्ली आहें भरती है
अपने ही बच्चों के कारण, दिल्ली जीती-मरती है
माता यमुना के पानी में, कालिय गरल मिलाया था
निर्मल करने हेतु कन्हैया, बाल रूप धर आया था
कालिय नाग बने लाखों जन, जल को दूषित करते हैं
आते नहीं कन्हैया, कालिय नाग प्रदूषण भरते हैं
निर्मल करने के ठेके में, केवल जेबें भरती हैं
और गंदगी में यमुना माँ, दिल्ली जीती-मरती है
धनपशु होकर फैक्टरियों में, ईंधन झोके जाते हैं
लात मारकर सकल सुरक्षा, नियम तोड़ इठलाते हैं
रक्ष्य कवच ओजोन पर्त नित छिन्न-भिन्न होती जाती
पराबैंगनी किरणें तन को, नोच नोचकर झुलसाती
दिल्ली का अम्बर रोता है, रोती प्यारी धरती है
जहरीली गैसों में घुटकर, दिल्ली जीती-मरती है
बुर्ज खड़े नालों के ऊपर, बही झोपड़ी नालों में
पर्यावरण सचेतक हैं सब, सिंह शशक की खालों में
जलसों औ त्यौहारों में जो, धूम-धड़ाके होते हैं
वायु, भूमि, जल, ध्वन्य रसायन में जीवन को खोते हैं
कभी गर्जती थी दिल्ली, अब आँसू बनकर झरती है
भींगी बिल्ली के जैसे ही, दिल्ली जीती-मरती है

-- अवधेश कुमार 'अवध'

शान्तिदूत

(अठारहवीं कड़ी)

विजय कुमार सिंघल

उसी रात्रि को अपने कक्ष में अपने पलंग पर लेटे हुए कृष्ण बहुत गहरे विचारों में डूबे हुए थे। उनके मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार बहुत तेजी से आ-जा रहे थे।

अब जबकि दोनों पक्षों की ओर से दूतों का आवागमन हो चुका है और युद्ध रोकने की सभी संभावनायें समाप्त हो गयी हैं, तब युद्ध अपरिहार्य हो गया है और दोनों पक्ष मानसिक-शारीरिक हर दृष्टि से युद्ध के लिए तैयार हो चुके हैं। अगर यह युद्ध हुआ, जैसी कि संभावना है, तो उसमें बहुत भयंकर विनाश होगा। भगवान वेद व्यास ने इस विनाश का जो चित्र खींचा था, वह अतिरंजित नहीं है। जन-धन की हानि तो हर युद्ध में होती ही है, लेकिन यह युद्ध जो हमारे सिर पर आ गया है, दो सेनाओं के बीच का साधारण युद्ध नहीं है। यह एक महायुद्ध है, जिसमें सम्पूर्ण आर्यावर्त और उसके आस-पास के कई देशों की सेनाएं और योद्धा आपस में भिड़ने के लिए तैयार हो रहे हैं।

इस महायुद्ध किंवा विश्वयुद्ध में विनाश ही नहीं महाविनाश होगा। दोनों ओर के योद्धा अत्यन्त विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हैं। कई अस्त्र-शस्त्र तो ऐसे हैं, जो पल भर में सहस्रों सैनिकों का संहार कर सकते हैं। यों तो मानव के विरुद्ध युद्ध में ऐसे दैवीय अस्त्रों का प्रयोग करना वर्जित है, लेकिन युद्ध की विभीषिका और उत्तेजना में सारे नियम रखे रह जाते हैं। पराजित होने वाला पक्ष हताशा में कोई भी संहारक अस्त्र चला सकता है और सम्पूर्ण विश्व के अस्तित्व को संकट में डाल सकता है।

इस युद्ध के कारण जल-थल-नभ सहित सम्पूर्ण वायुमंडल का प्रदूषित होना अपरिहार्य है। यह प्रदूषण दीर्काल तक बना रह सकता है और पेड़-पौधों, जीव-जन्तु ही नहीं स्वयं मानव का अस्तित्व समाप्त होने का कारण बन सकता है। भगवान वेदव्यास ने इन सभी संभावनाओं का आकलन कर लिया होगा, तभी तो वे युद्ध को रोकने के लिए इतनी भाग-दौड़ कर रहे थे। साधारण युद्धों में ऐसी चिन्ता नहीं की जातीं। युद्ध पहले भी हुए हैं, परन्तु पहले कभी भगवान् वेदव्यास जैसे महर्षि ने उनको रोकने के लिए इतना प्रयास नहीं किया।

कृष्ण सोच रहे थे कि इस महायुद्ध में मेरी भूमिका क्या होगी? निस्संदेह मुझे पांडवों ने अपने पक्ष में कर लिया है और यदि युद्ध हुआ तो मैं उनकी सहायता करने के लिए वचनबद्ध हो गया हूँ, इसलिए सहायता करूँगा ही, भले ही मैंने स्वयं अस्त्र-शस्त्र न उठाने की घोषणा कर रखी है। क्या इस युद्ध में मेरी भूमिका एक साधारण योद्धा या सलाहकार की बनकर ही रह जायेगी? क्या इतना ही मेरे लिए पर्याप्त होगा? क्या मुझे इस महाविनाश का मूकदर्शक बने रहना उचित होगा? इस महायुद्ध के बाद इतिहास मुझे किस रूप में याद करेगा?

कहीं इतिहासकार इस सर्वनाशी महायुद्ध का सारा दोष मेरे ऊपर तो नहीं डाल देंगे? कहीं वे यह तो नहीं कहेंगे कि कृष्ण ने समर्थ होते हुए भी युद्ध को रोकने का प्रयास नहीं किया? इतना ही नहीं कोई इतिहासकार तो यह भी कह सकता है कि अपने स्वार्थ के लिए कृष्ण ने ही सगे चचेरे भाइयों को आपस में लड़वाकर मरवा दिया। उनके पास ऐसा कहने का पर्याप्त कारण भी होगा। मेरी सारी सेना एक पक्ष में है और मैं स्वयं दूसरे पक्ष में हूँ, अतः उनका यह मानना निराधार नहीं कहा जाएगा कि कृष्ण ने ही दोनों पक्षों को सहायता देकर युद्ध करने के लिए उकसाया था।

यद्यपि मैं जानता हूँ कि इसमें लेशमात्र भी सत्य नहीं है। मैं कभी नहीं चाहता कि ऐसा युद्ध हो, लेकिन इतिहासकारों का मुँह कौन बन्द कर सकता है? निन्दा करने वालों ने तो भगवान श्रीराम के पावन चरित्र पर भी अनुचित आक्षेप किये हैं। मेरे बारे में भी इस प्रकार की झूठी कहानियाँ प्रचलित हो जायें, तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। इस प्रकार की निन्दा से बचने के लिए ही नहीं, वरन् एक समर्थ और सम्मानित व्यक्ति के रूप में भी मुझे युद्ध रोकने के लिए प्रयास अवश्य करना चाहिए। कम से कम कोई यह तो नहीं कह पायेगा कि कृष्ण ने युद्ध रोकने का प्रयत्न नहीं किया। अन्य सम्भव आक्षेपों के लिए मैं कुछ कर भी नहीं सकता। लेकिन जितना प्रयास मैं कर सकता हूँ, उतना तो मुझे करना ही चाहिए।

लेकिन मेरे प्रयास करने से क्या युद्ध रुक जायेगा? जिस प्रयास में भगवान वेदव्यास जैसी महान् विभूतियां असफल हो गयीं, उसमें मेरे सफल होने की सम्भावना कितनी है? भगवान वेदव्यास तो कौरवों-पांडवों के पूर्वज भी हैं। उन्हीं के अंश से नियोग से कौरवों-पांडवों के पिताओं की उत्पत्ति हुई थी। वे पितामह के रूप में कुरुवंश में सम्मानित भी हैं। कुरुओं में श्रेष्ठ भीष्म भी उनका बहुत सम्मान करते हैं। परन्तु दुर्योधन ने उनकी बात भी नहीं सुनी और पांडवों को उनका अधिकार देकर युद्ध रोकने से स्पष्ट अस्वीकार कर दिया। जिस दुर्योधन ने भगवान वेदव्यास की बात भी नहीं सुनी, वह मेरी क्या सुनेगा? मैं तो उनका एक साधारण सा सम्बंधी हूँ, वह भी पांडवों के पक्ष का। इस स्थिति में मेरी बात वह क्यों सुनेगा? अगर मैं कोई प्रयास करूँ भी तो उस प्रयास का असफल होना लगभग निश्चित है।

लेकिन क्या असफलता के डर से मुझे प्रयास करना ही नहीं चाहिए? अगर मैं असफल हो भी गया, तो क्या मेरा सम्मान कम हो जाएगा? मनुष्य अपने कार्यों में सफल भी होता है और असफल भी। इससे क्या अन्तर पड़ता है? उत्तम श्रेणी के मनुष्यों को प्रयास तो करना ही चाहिए। भले ही लोग मुझे जीवित भगवान कहते और मानते हैं, लेकिन मैं जानता हूँ कि मैं भी अन्य मानवों की तरह एक मानव हूँ। यद्यपि मुझे अपने जीवन में बहुत सी उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं, जो अन्य मनुष्यों के लिए दुर्लभ हैं। लेकिन मेरा मूल्यांकन केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों के कारण नहीं बल्कि समाज पर उनके प्रभाव के अनुसार किया जाएगा। इसलिए चाहे मेरा प्रयास सफल हो या असफल, मुझे युद्ध रोकने का प्रयास अवश्य करना चाहिए।

युद्ध का विषय किसी एक पक्ष पर निर्भर नहीं है। यह दो पक्षों का विषय है। अगर केवल एक पक्ष को इसके लिए तैयार करना होता, तो मैं सरलता से पांडवों को युद्ध से विरत रहने के लिए सहमत कर लेता। युधिष्ठिर आदि सभी पांडव मेरे ऊपर बहुत विश्वास करते हैं। अगर मैं उनसे कह दूँ कि आप युद्ध करना छोड़कर और राज्य की इच्छा त्यागकर वन में ही भटकते रहिए, तो वे निश्चित ही इसके लिए भी तैयार हो जायेंगे। वे मेरे ऊपर इतना विश्वास करते हैं। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि ऐसा करना पांडवों के साथ घोर अन्याय होगा। वे बचपन से ही अन्याय और अभावों का सामना करते रहे हैं। मैं स्वयं उनके ऊपर एक और अन्याय नहीं थोप सकता। अब उनके साथ किये गये सभी अन्यायों को समाप्त किया जाना चाहिए।

पांडवों को युद्ध से विरत करना दुर्योधन की अनीति को बढ़ावा देने के तुल्य होगा। मैं यह अपराध नहीं कर सकता। इसलिए यदि युद्ध को रोकना है, तो मुझे दूसरे पक्ष को तैयार करना पड़ेगा कि वे पांडवों को उनका अधिकार दे दें और पूरे देश को विनाश से बचायें। यदि मैं उनको सहमत करने में असफल भी रहता हूँ, तो भी मुझे कोई ग्लानि नहीं होगी, वरन् मुझे संतोष ही रहेगा कि इस महाविनाशकारी युद्ध को रोकने का मैंने अपनी सामर्थ्यभर पूरा प्रयास किया।

अब प्रश्न उठता है कि यदि दुर्योधन पांडवों को इन्द्रप्रस्थ देने के लिए तैयार हो जाता है, जिसकी संभावना बहुत ही कम है, तो क्या होगा? फिर तो पांडव इन्द्रप्रस्थ में जाकर अपना राजकाज संभाल लेंगे। परन्तु क्या द्रोपदी इससे संतुष्ट हो जाएगी? कौरवों की राजसभा में उसका जो घोर अपमान हुआ था, क्या वह उसे भूल जाएगी? उसने अपने बालों को खुला रखने की प्रतिज्ञा की है, जब तक कि दुःशासन के रक्त से उनको न धो लिया जाए। उसकी इस प्रतिज्ञा का क्या होगा? द्रोपदी मुझे अपना बड़ा भाई मानती है। सुभद्रा और द्रोपदी मेरे लिए एक समान हैं। द्रोपदी के अपमान का मुझे भी बहुत दुःख है, लेकिन यदि बिना युद्ध के ही पांडवों को उनका अधिकार मिल जाता है, तो मैं द्रोपदी को उसका अपमान भूलकर दुर्योधन और दुःशासन को क्षमा कर देने के लिए सहमत कर लूँगा। वह अपने बड़े भाई की इतनी बात अवश्य मान जाएगी।

(अगले अंक में जारी)

जीएसटी में सुधार

जवाहर लाल सिंह

गुवाहटी में हुई दो दिवसीय जीएसटी काउंसिल की बैठक में कुल २११ वस्तुओं की जीएसटी दरों में बदलाव किया गया है. वित्त मंत्री अरुण जेटली ने जीएसटी काउंसिल की बैठक के बाद बताया कि १७८ वस्तुओं पर जीएसटी दर घटाकर १८ प्रतिशत कर दिया गया है. जीएसटी की नई दरें १५ नवंबर से लागू हो गईं. २८ प्रतिशत वाले स्लैब में अब २२८ नहीं सिर्फ ५० वस्तुएं ही रह गई हैं. इसमें पान मसाला, सॉफ्ट ड्रिंक, तंबाकू, सिगरेट, सीमेंट, पेंट, एयर कंडीशनर, परफ्यूम, वैक्यूम क्लीनर, फ्रिज, वॉशिंग मशीन, कार, दोपहिया वाहन और विमान इस स्लैब में रहेंगे.

अनेक चीजों पर जीएसटी अब २८ प्रतिशत की जगह १८ प्रतिशत लगेगा। इसीतरह अन्य अनेक वस्तुओं पर १८ के बजाय केवल १२ फीसदी जीएसटी लगेगा और अनेक वस्तुओं पर १८ के बजाए सिर्फ ५ फीसदी जीएसटी लगेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि जीएसटी परिषद की सिफारिशों से जनता को आगे फायदा होगा और टैक्स व्यवस्था को मजबूती मिलेगी. पीएम मोदी ने कहा कि जनता की भागीदारी सरकार के कामकाज के तौर तरीकों का मूल है और सरकार के सभी फैसले 'लोगों के अनुकूल' और 'लोगों के लिए' हैं. ये सिफारिशें जीएसटी पर अनेक पक्षकारों से हमें लगातार मिल रहे फीडबैक पर आधारित हैं.' उन्होंने जोर देकर कहा कि सरकार देश के आर्थिक एकीकरण के लिए 'अथक' प्रयास कर रही है.

अब टीकाकारों का मानना है कि जीएसटी की भी नोटबंदी जैसी गत बन रही है. नोटबंदी में जिस तरह से रोजरोज रद्दोबदल करने पड़े थे उसी तरह से जीएसटी में भी शुरू हो गए. नोटबंदी में जैसी बार-बार बदनामी हुई थी वैसी अब जीएसटी में होने लगी. अलबत्ता सरकार का पूरा अमला प्रचार करने में लगाया गया है कि जीएसटी की वसूली के रेट कम करने को जनता के लिए बड़ी राहत के तौर पर प्रचारित किया जाए. टीवी पैनल की चर्चाओं में यह बात खासतौर पर चलवाई जा रही है कि इससे गुजरात के व्यापारियों की नाराजगी कम हागी. इस तरह से आरोप की शक्ल में इस प्रचार पर जोर है कि गुजरात चुनाव के मददेनजर यह फैसला किया गया है.

पहला सवाल यह कि क्या वाकई यह टैक्स गब्बर सिंह जैसा था जिसे अब कम भयावह बनाने का ऐलान हुआ है. अगर ऐसा है तो यह सवाल सबसे पहले कौंधेगा कि यह भारी भरकम टैक्स लगाया किसने था? जब लगाया गया था तब तर्क दिया गया था कि सरकार को देश के हित में बहुत सी योजनाएं चलानी पड़ती हैं. उसके लिए पैसे की जरूरत पड़ती है सो ऐशोआराम की चीजों पर ज्यादा टैक्स तो लगाना ही पड़ेगा. सो नया सवाल यह पैदा हुआ है कि ऐशोआराम की चीजों पर टैक्स घटाने से अब देश हित की योजनाएं चलाने में कमी नहीं आ जाएगी क्या? गौरतलब है कि खासतौर पर ऐशोआराम की चीजों पर टैक्स वसूली के रेट घटाने से सरकार के खजाने में बीस हजार करोड़ रुपए कम पहुंचेंगे.

नोटबंदी से मची भारी अफरातफरी और भारी घाटे का काम साबित होने के बाद जीएसटी से भी चारों तरफ परेशानियों का अंबार खड़ा होता जा रहा था. व्यापारी और उपभोक्ता दोनों परेशान हैं. हालांकि व्यापारी टैक्स के रेट से परेशान नहीं थे क्योंकि उन्हें टैक्स अपने पास से नहीं बल्कि नागरिकों से उगाही कर जमा करना था. व्यापारी लोग टैक्स भरने की समय खपाऊ और हिसाब बनाने की खर्चीली प्रक्रिया से परेशान हैं. सो उनके लिए भी सरकार ने टैक्स के कागज तैयार करने का बोझ कुछ कम कर दिया. क्या इसे पहले नहीं सोचा जा सकता था?

इस तरह सरकार खुद को नौसिखिया साबित करवा रही है. बिल्कुल उसी तरह जिस तरह नोटबंदी में साबित हुई थी. जानकार लोग नफे नुकसान का हिसाब भी बैठा रहे हैं. व्यापारी और नागरिक बेजा तरीके से खा न पाएं उससे सरकार को जितना पैसा बच सकता है उससे कई गुना उस चोरी न हो पाने का इंतजाम करने में खिन्न होकर बर्बाद तो नहीं हो रहा है? केंद्र और राज्य सरकारें अपने पास संसाधनों का रोना रोती रहती हैं. वे तरह तरह के जो टैक्स वसूलती थीं उसकी जगह एक ही टैक्स की व्यवस्था बनाने पर रजामंदी बनाई गई थी. यह रजामंदी इस आश्वासन पर बनी थी कि राज्यों को नई व्यवस्था से अगर कोई घाटा हुआ तो केंद्र सरकार उसकी भरपाई का इंतजाम करेगी.

वैसे तो राज्य सरकारें बिल्कुल भी जोखिम उठाने को राजी नहीं होतीं लेकिन राजनीतिक परिदृश्य ऐसा है कि ज्यादातर राज्यों में भी भाजपा की ही सरकारें काबिज हैं. सो राज्य सरकारों की तरफ से केंद्र की इच्छा, मंशा या योजना पर नानुकुर करने का कोई सवाल ही नहीं उठता लेकिन राज्यों के संसाधनों में कमी को आखिरकार उन्हें ही झेलना पड़ता है. वे किस तरह से झेलेंगी यह भी आने वाले दिनों में पता चलेगा. जीएसटी से नया हाहाकार न मचने लगे इसे दोनों प्रकार की सरकारों को सोचकर रखना पड़ेगा.

सरकार के तरफदार विशेषज्ञों की सबसे दिलचस्प थ्योरी यह है कि जीएसटी की कंपलायंस यानी इसके मुताबिक टैक्स जमा होने में दिक्कत आ रही थी. उनका तर्क है कि ऐशोआराम की चीजों पर टैक्स कम होने से टैक्स जमा करने वालों की संख्या बढ़ जाएगी. इस तरह से उन्होंने दिलासा दिलाना शुरू किया है कि बदले ऐलान से सरकार के खजाने को २० हजार करोड़ से कम का ही नुकसान होगा. ऐसा तर्क देने वाले क्या उस समय यह तर्क नहीं दे सकते थे जब २८ फीसदी टैक्स वाली स्लैब बनाई गई थी.

इतना तो साफ है कि केन्द्र सरकार ने जीएसटी लागू करने में आवश्यक सावधानी नहीं बरती. पर्याप्त होमवर्क नहीं किया. यहां के बहुस्तरीय बाजार और सामान के उपभोग, उपयोग की प्रवृत्ति और प्रणाली का गंभीर अध्ययन नहीं किया. एक सही उद्देश्य मगर गलत चिंतन. दिल्ली से दौलताबाद वाली स्थिति इसी से पैदा हुई है. गुजरात चुनाव न होता तो यह विसंगत बनी रहती. उत्साह के साथ विवेक जरूरी होता है.

'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' का भी जोर शोर से प्रचार किया गया. अब दिन प्रतिदिन होने वाली तब्दीलियों से क्या परेशानियाँ कम होंगीं या जटिल होती जायेंगी. संकेत साफ है कि गुजरात चुनाव में जनता के गुस्से को भांपते हुए यह निर्णय लिया गया जिसे प्रधान मंत्री अपने भाषणों में करते रहे हैं और राहुल गाँधी उन पर इसी मुद्दे पर हमला करते रहे हैं. चाहे जो हो प्रधान मंत्री को कोई भी फैसला हड़बड़ी में नहीं करनी चाहिए और उनके सलाहकारों को भी समझ-बूझकर ही निर्णय करना चाहिए. तभी होगा सबका साथ और सबका विकास का सपना साकार! ■

भाजपा क्यों लगने दे, यह कलंक?

डॉ वेदप्रताप वैदिक

उत्तरी दिल्ली और पूर्वी दिल्ली का नगर निगमों पर भाजपा का कब्जा है। ये दोनों निगम ऐसे भयंकर काम करने जा रहे हैं, जिन्हें गुरु गोलवलकर या दीनदयाल उपाध्याय देख लेते तो अपना माथा कूट लेते। इन दोनों निगमों के दिल्ली में १७०० स्कूल हैं। इन स्कूलों की नर्सरी और पहली कक्षा के बच्चों को अब हर विषय अंग्रेजी माध्यम से पढ़ना होगा। यह अनिवार्य होगा। धीरे-धीरे सभी कक्षाओं में अंग्रेजी माध्यम अनिवार्य करने की कोशिश की जाएगी।

गजब की मूर्खता है, यह! अभी तक तो देश में झगड़ा यह था कि बच्चों को अंग्रेजी एक विषय के तौर पर पढ़ाई जाए या नहीं? अब होनेवाला यह है कि सारे विषय अंग्रेजी माध्यम से ही पढ़ाए जाएं। यह विचार जिस दिमाग में उपजा है, उसका ठस्स होना, उसका गुलाम होना, उसका नकलची होना अपरंपार है। उनका यह विचार बाल-शिक्षा के समस्त सिद्धांतों के विरुद्ध है।

मैंने आज तक किसी भी बाल-शिक्षा विशेषज्ञ को इतना मूर्खतापूर्ण विचार प्रस्तुत करते हुए नहीं पाया। बल्कि उल्टा ही पाया है। दुनिया के श्रेष्ठतम शिक्षाविदों (शेष पृष्ठ १८ पर)

अपने हालात देखे हंसी आ गई
ये कहां से कहां जिंदगी आ गई
एक नजर उनकी आज हमपे पड़ी
कि नजर में हमारी नमी आ गई
दिल रोता रहा मन के वीराने में
क्या मोहब्बत में मेरी कमी आ गई
मेंरे कदम दिल की दुनिया में थे
उन कदमों तले फिर जमीं आ गई
आपकी बात सुनके रहा न गया
कि बात होठों पे मेरे तभी आ गई
'जानिब' ये उदासी सही जाए न
काश कोई कहे के खुशी आ गई

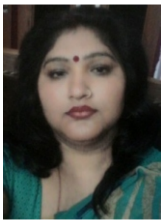

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

लय अगर है तो क्या बहर न हुई
तुम न आए तो क्या सहर न हुई
ऊँची लहरें क्या सिर्फ लहरें हैं
एक नन्ही लहर लहर न हुई?
क्या जहर को ही बस जहर मानें
तल्ख जो है जबाँ, जहर न हुई?
सो के गर उट्ठा कोई बारह बजे
क्या सहर है ये, दोपहर न हुई
भटकनों में अजल से है इन्सान
आज तक भी कहीं ठहर न हुई
पैसे वाले तो पा गए नदियाँ
निर्धनों को तो इक नहर न हुई
गाँव में जा के रो रहा डॉक्टर
हाय पोस्टिंग किसी शहर न हुई
लम्बी बहरों में क्यों लिखे 'चन्द्रेश'
मुख्तसर बहर क्या बहर न हुई

-- चन्द्रकांता सिवाल 'चन्द्रेश'

गैर पर करना भरोसा छोड़िये
साथ अपनों का न रहना छोड़िये
नेक नीयतें आपकी सबके लिए
दोस्त से चुगली लगाना छोड़िये
रूप तेरा तो निखरता ही रहे
पर कभी पार्लर न जाना छोड़िये
यार की हर बात को माना करे
फालतू तकरार करना छोड़िये
जन्म माँ ने जब दिया था आपको
दर्द उसको आज देना छोड़िये

-- डॉ मधु त्रिवेदी

शीत शीघ्र आ रही, पास है बुला रही
गर्म वस्त्र धूप में, मात है सुखा रही
बर्फ की चोटियाँ, खूब कँपकँपा रही
मंद सी ठिरी पवन
आज सनसना रही
बूँद ओस की यहाँ
घास में समा रही
भोर देर से उगे
रात जल्द छा रही

-- डॉ सोनिया गुप्ता

संग बिताया जमाना हमसे भूला न जायेगा
किये वादे जो तुमने हमसे कौन निभायेगा
मैने गलियां करी गुलजार तुम्हारी रो रोकर
यही सोचकर अक्सर दिल मेरा घबड़ायेगा
कत्ल करने से पहले तुमने कुछ सोचा नहीं
कातिल का पता कातिल खुद ही बतायेगा
सांसों का कारवां अगर यूं ही चलता रहा
धड़कनों में सिर्फ तेरा नाम लिखा जायेगा न
कोई है हमसफर दूजा कोई न आयेगा
दिल की वीरान गलियों में तू ही मँड़रायेगा
थाम लेना हमें इस भरी दुनिया की भीड़ में
टूटने से पहले मालूम
है तू पिघल जायेगा
है भरोसे की डोर
हाथ में मेरे दिलबर
गर छूटी डोर तो दम
मेरा निकल जायेगा

-- प्रीती श्रीवास्तव

बिखरे जज्बातों की झड़ी जिन्दगी
हर तरफ उलझनों से भरी जिन्दगी
भोर के तारे सी आसमां में सजी
पल गुजरते ही ओझल हुई जिन्दगी
चाहतों के लिबासों में लिपटी मिली
ढूंढने जब गई खोई सी जिन्दगी
आँखों में आँसू थे दिल में तन्हाईयां
भीड़ में भी अकेली मिली जिन्दगी
दौरे रुसवाईयों से वो घायल हुई
अनकही दास्तां बन गई जिन्दगी
तेज आँधी में दीपक सी जलती हुई
फड़फड़ाती हुई लौ सी जिन्दगी
दर्दे खामोशियों को समझ ना सके
अनबूझी सी पहेली बनी जिन्दगी
टूटे ख्वाबों की गठरी समेटे हुए
एक अधूरी कहानी बनी जिन्दगी

-- नीतू शर्मा

अब छोड़ो भी तकरार प्रिये
क्यों नोंक झोंक हर बार प्रिये
खुशियों की बारिश में भीगो
गम से हो क्यूँ बेजार प्रिये
ये धरती क्या ये अम्बर क्या
अपना सारा संसार प्रिये
औरों की बातें छोडो अब
जी लो अपना किरदार प्रिये
उम्मीदों की परवाज भरो
हर स्वप्न करो साकार प्रिये
हो त्याग समर्पण प्यार वफा
इस जीवन का आधार प्रिये
जैसी करनी वैसी भरनी
ये सत्य करो स्वीकार प्रिये

-- रमा प्रवीर वर्मा

जुस्तजू में प्यार की बैचैनी ओढ़ लेते हैं लोग
उम्र भर का रोग क्यों मोल ले लेते हैं लोग
ऐतबार का सिलसिला फना हो ही जाता है
बेरहम दिल से जब आईना तोड़ देते हैं लोग
शिकस्त कहो या इश्क की दीवानगी यारो
मौत से पहले ही कफन ओढ़ लेते हैं लोग
अहसास दर्द का मुश्किल है समझना यारो
नासूर को बनाकर अदा जीना सीख लेते हैं लोग
दिल्लगी है सिर्फ एक मजाक का पैमाना
इश्क को बगावत का
नाम दे देते हैं लोग
वो क्या जानेंगे इश्क
की गहराई यारो
मोहब्बत को मजाक का
नाम दे देते हैं लोग

-- वर्षा वार्ष्णेय

जिंदगी ने जिस तरह हैरान हमको कर रखा है
मन कभी करता है मेरा जिंदगी की जान ले लूँ
दिल लगाकर कब किसी को चैन यारो मिल सका है
पूजते पत्थर जहाँ में, मैं पत्थरों की शान ले लूँ
हसरतें पूरी हो जब तो खूब भाती जिंदगी है
ख्वाब दिल में पल रहे शख्स के अरमान ले लूँ
प्यार की बोली लगी है अब आज के इस दौर में
प्यार पाने के लिए क्या
कीमती सामान ले लूँ
हर कोई अपनी तरह से
यार जीवन जी रहा है
जानकर इसको 'मदन'
जिंदगी का गान ले लूँ

-- मदन मोहन सक्सेना

कविता

तुम... हमें वादों में उलझाकर
बेवकूफ बनाकर खुश होते हो
और इतराते हो अपने चहेतों के बीच
सीना फुलाते हो अपनी सियासी समझ पर
इस उमस भरी रात में अपने दुधमुँहे को लेकर
रात दो बजे तक बैठती हूँ छत पर लाइट के इंतजार में
दिन भर की थकी ऊँघती हुई
झलती हूँ हाथ वाला पंखा
इसलिए कि चैन से सोता रहे मेरा बच्चा
उधर एसी में ऐश करते हो
तुम और तुम्हारे बच्चे
मुझे याद है चुनाव के समय
तुमने की थीं विकास की बातें
बराबरी की बातें और समझाया था
कि बटन वही दबाना
जिसके सामने बना हो 'हाथ वाला पंखा'

-- प्रवीण श्रीवास्तव 'प्रसून'

तेजा

साली खुद को समझती क्या है। भाव पर भाव दिये जा रही है। पैसे पर बिकने वालों की कमी है क्या, जिसे जब और जहाँ चाहूँगा बुला लूँगा। दारु के नशे में तेजा बकता जा रहा था।

'गुरु किसकी बात कर रहे हो?'

'वही साली झूमरीतलैया वाली की।' 'क्या हुआ?'

'पिछले चार दिनों से चक्कर मार रहा हूँ, बात ही नहीं करती, इठलाती है और चली जाती है।' 'गुरु देर रात हो गईं, भाभी घर पर इंतजार कर रही होगी।'

'मुझे उसकी कोई परवाह नहीं। उसकी औकात ही क्या है। उठो कहूँगा उठेगी, बैठो कहूँगा बैठेगी। देहाती है साली। मुझे तो उसकी बोली तक नहीं भाती।'

'यह अच्छी बात नहीं गुरु, पीना-खाना अलग बात है। घर-परिवार भी तो कोई चीज होती है। तुम पूरे नशे में हो, अभी घर जाओ, सुबह देखा जाएगा।' पहलवान ने कहा और उसे रिक्शा पर बैठा दिया।

रात भर तेजा रिक्शा पर घुमता रहा किन्तु घर नहीं गया। इधर पत्नी उसकी चिंता से फटी जा रही थी। तेजा की हरकतों से उसकी पत्नी आजिज आ चुकी थी। उसे सूझ नहीं रहा था कि पति को रास्ते पर कैसे लाए।

'पैसा हर मर्ज की दवा है गुरु। जिस झुमरीतलैया वाली की बात तुम कर रहे थे, उसके दलाल से बात हो चुकी है, एडवांस भी दे दिया है। अब देखना कैसे लिपट जाती है तुमसे।' 'सच?'

'बिल्कुल सच' पहलवान की बात सुनकर तेजा प्रसन्न हो उठा, 'यार तुमने दोस्ती की लाज रख ली।'

'इधर गली में आज चाँद निकला' की मद्धिम आवाज से कोठे का मिजाज परवान चढ़ रहा था। झुमरी तलैया वाली के दरवाजे की ओर दस्तक देता हुआ तेजा जैसे-जैसे बढ़ता जा रहा था, उसकी उत्सुकता भी उसी अनुपात में बढ़ती जा रही थी। कमरे के बीचों-बीच साजो-श्रृंगार में दुल्हन बनी बैठी महिला उसका इंतजार

कर रही थी। बड़े सलीके से महिला का घूँघट वह उठाए जा रहा था। घूँघट उठाते ही 'तुम!' इतना ही कह सका और अचानक वह मूर्छित होकर गिर पड़ा।

-- अमरेन्द्र सुमन

गांव घर

चंद्रेश करीब बीस साल बाद अपने गांव लौटे थे। गांव में कदम रखते ही उन्हें एहसास हो गया कि अब बहुत कुछ बदल गया है। पहले की तरह किसी ने ना दुआ सलाम की और ना ही हाल चाल पूछा।

पिछले पंद्रह साल से वह विदेश में थे। लेकिन गांव घर अभी भी यादों में वैसा ही बसा था। लेकिन यहाँ आकर सारी छवि धूमिल पड़ गई।

घर पहुँचते ही देहरी को देख वह भाव विभोर हो गए। उन्होंने आगे कदम बढ़ाया ही था कि छोटे भाई ने टोक दिया।

'भइया उधर नहीं। वह मझले भइया का हिस्सा है। मेरा हिस्सा इधर है।' चंद्रेश का मन यह सुनकर खट्टा हो गया। अब गांव में कुछ भी अपना नहीं था।

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

आत्मग्लानि

'चप्पल घिस गयी बेटा, एक लेते आना। मैं थक गया हूँ, अब सोऊंगा।'

'पापा! दो साल से प्रमोशन रुका पड़ा है। दे दीजिये न बाबू को हजार रुपये। आपकी फाइल आगे बढ़ा देगा। बिना दाम के, कहीं काम होते हैं क्या?'

'बेटा, गाढ़े की कमाई है, ऐसे कैसे दे दूँ? और कोई गलत काम भी तो नहीं करा रहा हूँ!'

'अच्छा पापा, इन बातों में एक बात बताना भूल ही गया।' 'क्या बेटा ?'

'सरकारी कॉलेज में मेरा एडमिशन हो गया है। लेकिन वहां का बाबू तीस हजार रुपये मांग रहा था।'

'काहे के तीस हजार!' 'वह कह रहा था कि मैं तुम्हारे ही फॉर्म को जमा करने में दिन भर लगा रहा। थोड़ा तो मेहनताना देना ही पड़ेगा न।' 'मैंने मना किया, कहा पापा बड़े 'सिद्धांत वादी' है।'

'फिर...' 'हँसने लगा और कहा कि बबुआ, पिता सिद्धांतवादी है तब पढ़ना लिखना भूल ही जाओ। बिना दिए-लिए सरकारी कॉलेज में एडमिशन आसान नहीं है। जाओ, मूंगफली बेचो।'

'तुम्हारा तो हो गया है न!' 'हाँ, मैंने यही कहा उससे। उसने कईयों के नाम गिना दिए। कहा पिछले साल इन सबका भी हो गया था। लेकिन मिठाई का डिब्बा दिए बिना अधर में लटक गया।'

'अच्छा..!' लम्बी सांस छोड़ते हुए बोले।

'ठीक है, माँ से रूपये लेकर कल दे आना उसे।' ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा। 'आपके उसूल!'

'मैं तो अपना वर्तमान उसूलों में उलझाये रहा। अब तुम्हारा भविष्य बर्बाद होते कैसे देख सकता हूँ। आजकल सिद्धांतों की रस्सी पर डगमगाए बिना चलना

बहुत मुश्किल है।' बुदबुदाते हुए पलंग पर लेटे ही थे कि चिरनिद्रा ने उन्हें सम्मानपूर्वक आलिंगनबद्ध कर लिया।

-- सविता मिश्रा

सेल्फ मेड

'ये क्या लिख कर लाये हो अक्षत? ऐसे उत्तर तो तुम्हें नहीं लिखवाये थे मैंने।' शिक्षिका ने डांटते हुए कहा।

'जी... मैम... वो मैं बीमार जो रहा इतने दिनों से, मुझे अपनी कॉपी पूरी करनी थी।' अक्षत ने डरते हुए उत्तर दिया।

'हाँ तो तुम खुद को क्या समझते हो? ये बताओ तुमने इन प्रश्नों के उत्तर आखिर कहाँ से लिखे?'

'वो... मैंने खुद ने लिखे हैं मैम।' यह कहते हुए वह घबरा रहा था। शिक्षिका जी का क्लास में यह आदेश था कि जो उत्तर वो लिखवाती है, वही सबको लिखना होगा। अन्य उत्तर को वे गलत कर देंगी।

अक्षत एक होनहार बच्चा था, पढ़ने लिखने में उसकी रुचि थी, अक्सर वह कुछ न कुछ लिखता रहता था। शिक्षिका को यह फूटी आँख नही सुहाता था। क्लास के सारे बच्चे अक्षत को डाँट खाते हुए देख रहे थे, सुन रहे थे, अक्षत के लिखे हुए उत्तर क्लास में पढ़े

गए। सही उत्तर भी शिक्षिका के गले की हड्डी बन गए थे। सब आज्ञाकारियों के बीच इस हीरे को कैसे जगह मिल सकती थी।

-- कल्पना भट्ट

ध्यान

'अरे सुमन,तुम अपने बच्चों के प्रति कैसी लापरवाह हो, अभी कितने छोटे हैं और तुम उन पर ध्यान ही नहीं रख रही हो। मैं कब से देख रहा हूँ कि तुम्हारा लड़का उस उबड़-खाबड़ जमीन पर दो बार गिर चुका है और वह तुम्हारी लड़की झूले पर चढ़ने के प्रयास में गिर गई, लेकिन तुमने उन्हें उठाकर चुप कराना भी ठीक नहीं समझा। तुम बस अपने निकाई-गुड़ाई के काम में ही तल्लीन रही। क्या यह दो-तीन साल के बच्चों की परवरिश के लिहाज से उचित है।' मैंने लॉन में अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे ही बगीचे में काम कर रही सुमन से कहा।

'बाबूजी, बच्चे गिरेंगे-पड़ेंगे नहीं, तो मजबूत कैसे होंगे। उन्हें भी तो आगे जिन्दगी की लड़ाई लड़ने के लिए अपने बल पर ही तैयार होना होगा। मैं इस तरह ध्यान रखकर उन्हें कमजोर नहीं करना चाहती।' सुमन ने मेरी बात का जवाब दिया।

सुमन की बात ने मुझे सोचने पर विवश कर दिया क्योंकि अभी कुछ समय पूर्व ही तो बहू ने लगभग

चिल्लाते हुए कहा था कि क्या पापाजी आप अखबार पढ़ने में ऐसे खो जाते हैं और उधर रिंकू यदि कुर्सी से गिर जाता तो! क्या इतना भी ध्यान आप नहीं रख सकते?

-- डॉ प्रदीप उपाध्याय

रोहिंग्या समस्या : स्थायी हल जरूरी

मुकेश सिंह

हाल के दिनों में म्यांमार में चल रहे घमासान ने पूरे विश्व जगत को झकझोर रखा है। म्यांमार की सेना द्वारा चलाये जा रहे आतंकवाद विरोधी अभियान से डरकर म्यांमार के रखाइन प्रांत से लगातार रोहिंग्या मुसलमान अपनी जान बचाकर भाग रहे हैं। और इन अवैध रोहिंग्या मुसलमानों को भारत में शरण देने और न देने को लेकर हमारे देश में भी एक तरह से घमासान छिड़ा हुआ है। जहां हमारी सरकार और कुछ और लोग इन्हें देश की सुरक्षा के प्रति खतरा बता रहे हैं, तो वहीं कुछ लोग मानवता के नाम पर इन अवैध शरणार्थियों को भारत में शरण दिये जाने के समर्थन में खड़े हैं।

सरकार के समर्थन में खड़े लोगों के अनुसार देश की सुरक्षा के लिहाज से इन शरणार्थियों को बिना किसी शर्त के म्यांमार वापस भेज दिया जाना चाहिए। जबकि भारत के ५१ प्रसिद्ध लोगों ने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चिट्ठी लिखकर आग्रह किया है कि सरकार को दुनियाभर के सामने मानवता की मिसाल पेश करते हुये रोहिंग्या शरणार्थियों को वापस नहीं भेजना चाहिए और इन अवैध मुसलमानों को भारत में ही रहने की अनुमति दी जानी चाहिए। पर वहीं, केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू का साफ कहना है कि सरकार रोहिंग्या मुसलमानों को हर हाल में वापस भेजेगी और यह पूरी कार्रवाई कानूनी प्रक्रिया के तहत होगी।

इससे पहले केन्द्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में भी हलफनामा दाखिल कर कहा है कि अवैध रोहिंग्या शरणार्थी देश की सुरक्षा के लिए खतरा हैं और इन्हें हर हाल में वापस भेजा जायेगा। सरकार इस पूरे मामले को देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था के साथ जोड़कर देख रही है। इस हलफनामे में रोहिंग्या शरणार्थियों के पाकिस्तानी आतंकियों से कनेक्शन होने की बात भी कही गई है। म्यांमार सरकार के हवाले से भी रोहिंग्या चरमपंथियों के सऊदी अरब, पाकिस्तान और अफगानिस्तान से लिंक होने के सबूत दिये गए हैं। सुरक्षा बलों को मिली खुफिया रिपोर्टों के अनुसार पाकिस्तान, अफगानिस्तान और इंडोनेशिया जैसे मुस्लिम देशों के जिहादी इनकी फंडिंग करते हैं। इतना ही नहीं बल्कि इनमें से बहुत से लोगों के आईएस, हूजी, लश्कर और अल कायदा जैसे आतंकवादी संगठनों से संबंध हैं, जो भविष्य में भारत के लिए सुरक्षा की लिहाज से भयावह हो सकता है। यही वजह है कि हमारी सरकार इन अवैध मुसलमानों को भारत में शरण न देने के अपने फैसले पर अडिग नजर आ रही है।

अगर पूरे मामले पर नजर दौड़ाएँ तो यह मामला एक बहुत ही जटिल नजर आता है। वास्तव में २५ अगस्त को म्यांमार के सुरक्षा बलों पर रोहिंग्या मुसलमानों के साथ जुड़े अराकान रोहिंग्या सैलवेशन आर्मी ने म्यांमार के रखाइन प्रांत में हमला कर दिया था। इस हमले में ३० पुलिस चौकियों को निशाना बनाया गया था, जिसमें लगभग १० पुलिस अधिकारियों, एक सैनिक और एक इमिग्रेशन अधिकारी की मौत हो गई थी। इस हमले के बाद म्यांमार सरकार ने एआरएसए को आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया था। फिर इस संगठन के विरूद्ध 'क्लियरेंस ऑपरेशन' चलाया था, जिसके कारण करीब तीन लाख रोहिंग्या मुसलमानों को विस्थापित होना पड़ा। इनमें से प्रायः ४० हजार विस्थापित भारत में अवैध रूप से घुस आये हैं।

समुद्र के रास्ते नौकाओं से घुस आये इन अवैध नागरिकों ने भारत के जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, असम, तेलंगाना आदि जगहों पर शरण ले रखी है। भारत के लिए चिंता की बात यह है कि यहां पर वे धीरे-धीरे अन्य मुस्लिम समुदाय में घुल-मिलकर अपनी पहचान छिपाकर भारतीय बनने लगे हैं। इसके लिए उन्हें स्थानीय मुस्लिमों का सहयोग भी मिलने लगा है। कई लोगों का मानना है कि इससे भविष्य में गंभीर संकट पैदा हो सकता है, क्योंकि शरणार्थियों के कारण संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है और कानून व्यवस्था के लिए भी चुनौती उत्पन्न होती है। ऐसी स्थिति में सरकार के इस निर्णय का स्वागत किया जाना चाहिए जिससे देश की एकता और अखंडता बनी रह सके।

वहीं दूसरी ओर इन शरणार्थियों के समर्थकों की बातें भी विचारणीय हैं क्योंकि सिर्फ म्याँमार ही नहीं बल्कि तिब्बत के भी लगभग १,२०,००० शरणार्थी शांतिपूर्वक तरीके से देश के विभिन्न जगहों पर शरण लिये हुए हैं। यही नहीं भारत श्रीलंका, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे देशों से विस्थापित हुये सैकड़ों शरणार्थियों का घर भी है। और इस लिहाज से रोहिंग्या शरणार्थियों का समर्थन कर रहे बुद्धिजीवियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। पर यहां एक और बात याद रखनी होगी कि देशहित सर्वोपरि होता है और किसी भी कीमत पर इससे समझौता नहीं किया जा सकता। और साथ ही हमें इस बात पर ध्यान देना होगा कि रोहिंग्यायों के पीछे लगे मुसलमान शब्द को लेकर जो लोग भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा को भी नजर अंदाज कर सरकार को मानवता का पाठ पढ़ाने में लगे हैं मानवाधिकार के उन स्वयंभू ठेकेदारों ने कभी भी कश्मीरी पंडितों तथा पाकिस्तानी हिंदुओं के पलायन के संदर्भ में आज तक एक शब्द नहीं कहा है, जो इस देश के लिए काफी दुर्भाग्यपूर्ण है।

किंतु इस मामले पर रोहिंग्यायों के निर्वासन को लेकर शोर मचाने से पहले भी हमें इस बात पर गौर करना होगा कि रोहिंग्या मुसलमानों का वास्तविक निर्वासन सोचने जितना सरल नहीं है, क्योंकि यहाँ सरकार के समाने सबसे बड़ा सवाल यह है कि रोहिंग्याओं को म्यांमार वापस कैसे भेजा जाए? अर्थात् जब म्यांमार उन्हें अपने नागरिक के रूप में स्वीकार करने को तैयार ही नहीं है, तब वह उन्हें अपने सीमा में घुसने की अनुमति क्यों देगा? और रही बात बांग्लादेश की तो वह खुद ही लाखों रोहिंग्या शरणार्थियों का घर बना हुआ है, जहां वे नर्क की यंत्रणा भोगने को मजबूर हैं। दूसरी तरफ इस देश के बहुत से वामपंथी उनके हमदर्द बने बैठे हैं, जो उनके लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा तक खटखटा चुके हैं। और उनके हस्तक्षेप के कारण यह ममला अब सुप्रीम कोर्ट में लंबित है। इस तरह से रोहिंग्यायों के निर्वासन का मुद्दा एक जटिल विषय बन गया है। और अब इस समस्या के उचित समाधान के लिए हमारी सरकार को कोई बहुत ही कारगर कदम उठाने की आवश्यकता है जिससे ये समस्या जड़ से समाप्त हो सके।

इस समस्या के समाधान के मद्देनजर हमारी सरकार को सबसे पहले रोहिंग्या शरणार्थियों को आवश्यक सुविधाएं मुहैया करानी चाहिए। और साथ ही इस मामले में अपने रूख पर अटल रहते हुए म्यांमार की आंतरिक समस्या में उसके साथ खड़ा रहना चाहिए। भारत को रोहिंग्या बहुल इलाके के विकास के लिए म्यांमार को विशेष सहायता की पेशकश को आगे बढ़ाना चाहिए। साथ ही उसे बांग्लादेश में रह रहे शरणार्थियों को संभालने के लिए जरूरी आधारभूत संरचना तैयार करने में भी बांग्लादेश की मदद के अपने प्रस्ताव को अमली जामा पहनाने में देर नहीं करनी चाहिए।

हमें बड़ी गंभीरता के साथ यह याद रखना होगा कि भारत में शरणार्थियों को शरण देने की जो परंपरा रही है उसके अनुरूप उन शरणार्थियों ने कभी भारत की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था को बिगाड़ने का काम नहीं किया है। जबकि रोहिंग्याओं के मामले में ऐसा नहीं हो पाया है, क्योंकि प्रारंभिक स्तर पर भारत सरकार ने कुछ रोहिंग्याओं को शरण देने का प्रयास किया था। मगर इसके तुरंत बाद ही उन्होंने भारत में विरोध प्रदर्शन आरंभ कर दिये थे, जिससे हमारे देश में स्थितियां बिगड़ चली थीं। ऐसे में हमें अपनी सरकार पर भरोसा रखते हुये मानवता के नाम पर देश को समस्याओं का ढांचा बनने से बचाने की पहल करनी होगी। ■

(पृष्ठ २० का शेष) **कतार में जीवन**

लेकिन चैनलों पर महिमागान उनके बाप-दादाओं का हो रहा है। वैसे इसमें गलत भी क्या है। हमें उनका शुक्रगुजार होना चाहिए जिन्होंने इतने कीमती हीरे बॉलीवुड को दिए, वरना पता नहीं बालीवुड और देश का क्या होता। कई फिल्मों के करोड़ी क्लबों में शामिल होने और फिल्म अभिनेताओं और खिलाड़ियों की कमाई लगातार बढ़ते जाने की खबरें भी अमूमन हर अखबार में पढ़ने तो चैनलों पर देखने को मिल ही जाती है। निश्चय ही यह वर्ग आधार के आतंक से मुक्त है, तभी इतना जबरदस्त रचनात्मक विकास कर पा रहा है। ■

टूटी हुई गृहस्थी बसाने की बात कर
अब आपसी रियाज निभाने की बात कर
भाषण की आग में जले घर द्वार जिन्दगी
अब छोड़ सब तू आग बुझाने की बात कर
रोते बिलखते जीस्त में दुख दर्द है बहुत
मृतप्राय जिंदगी को हँसाने की बात कर
सब बातचीत और समाधान खत्म हो
अब शूरता, प्रताप दिखाने की बात कर
गीदड़ की धमकियों से न डरना, दिलेर तू
इस जंग में हमीं को जिताने की बात कर

-- कालीपद 'प्रसाद'

खटिया लुट गयी थी आज सेटी लुट गयी
गुजरात क्या गए इधर अमेठी लुट गयी
विधान सभाओं के संग निकाय लुट गए
पूरी ही पार्टी की अब कमेटी लुट गयी
हर हार पर वो छातियाँ को पीट के कहें
ई वी एम वाली ये मत पेटी लुट गयी
अभी तो मार्च माह में थी औंधे मुँह गिरी
निकाय के चुनाव में लेटी लेटी लुट गयी
युवराज को जो ताज देना चाहती थी वो
भारत में ब्याही इटली की बेटी लुट गयी

-- मनोज डागा मोजू

यहां हम डूबने को तैयार, बैठे हैं
वो साहिल पर लिये पतवार, बैठे हैं
हमारे दिल में क्या है कैसे कहें उनसे
जो अब तक लब पे ले इंकार, बैठे हैं
चलो सहरद है क्या तुमको बताऐं
वो हैं उस पार हम इस पार बैठे हैं
क्यूं अपना वोट दे हमने चुना उनको
थे सेवक सब बने सरदार, बैठे हैं
मिटाने क्यों नहीं अब आते दुष्टों को
न जाने अब कहां करतार, बैठे हैं
तुम्हारी राह में जय कबसे यहां हम
मुहब्बत का लिये संसार, बैठे हैं

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

यादें सहज अतीत मिली है
वीणा को संगीत मिली है
मन महफिल पहचान मिली
धूप खिली है शीत मिली है
वाह अनोखा है यह संगम
बहुत पुरानी प्रीत मिली है
कुछ न कहना कुछ नहीं सुनना
चाहत आज सभीत मिली है
ललक परखती आँख पुरानी
बिछड़े मौसम मीत मिली है
आओगे तुम एकबार क्या
सुनने मुझे प्रतीत मिली है
असमंजस में आया 'गौतम'
नयन भिगाती रीत मिली है

-- महातम मिश्र गौतम गोरखपुरी

यादों की जागीर हमारी, झांको जरा इधर भी
अलकों के साये में बसती, प्यारी एक लहर भी
मुस्कानों में पीर छुपी है, आशाऐं बलशाली
रात रात भर मैं क्या जागूँ, जागे यहां शहर भी
है सलाम भेजा चुपके से, अर्थ बड़े हैं गहरे
झेले झंझावात कई हैं, झेले कई कहर भी
अधर मौन हैं हंसी ठहरती, प्रश्न कई हैं उभरे
साये रातों के गहराते, चाहें ऐक सहर भी
मदमाते सपने आंखों में, अब विराम ना चाहें
मिला सुधारस पल दो पल को, पीया खूब जहर भी
कहीं खुशी जागी है थोड़ी, है कपोल पर लाली
मिला है सन्देशा आने का, थोड़ा समय ठहर भी

-- भगवती प्रसाद व्यास 'नीरद'

जिन्दगी मिल गई मुझको मगर जीना नहीं आया
सामने दरिया था मेरे मगर पीना नहीं आया
बहा डाला जिगर का खून जिन अपनो की खातिर
वही कहते रहे देखो उसे पसीना नहीं आया
बहुत भटका हूं दर बदर कभी इधर कभी उधर
सुकूं जो दिल को दे जाता वही महीना नहीं आया
राह थी पत्थर से भरपूर बदल सकता था अपना नूर
मगर जो भाग्यशाली हो वही नगीना नहीं आया

-- राजेश सिंह

हाँ सन्नाटा अच्छा लगता है
कम से कम कुछ सोच लेता हूँ
पुराने जख्म की पपडी को खरोंच लेता हूँ
अच्छा लगती है वो आहिस्ता से
निकलती खून की बूँद
इस सन्नाटे में महसूस करता हूँ
किसी को आँखे मूँद
हाँ ये सन्नाटा अच्छा लगता है
सुन लेता हूँ अंदर की चीख-पुकार
दबाये रखूँ या फिर हो कोई विचार
साँसों के साथ-साथ निकल आते हैं शिकवे-गिले
याद करूँ किसको इस सन्नाटे में?
जो छोड़ गये या मिले/हाँ ये सन्नाटा अच्छा लगता है
आया हालात अपनी फौज लिए
पहुँचाने मुझे श्मशान में
लो मैं भी आया टूटी-फूटी
आस लिए मैदान में
निहत्था ही मैं इनसे आज भिड़ जाऊं
आत्मसमर्पण या इस सन्नाटे में
आशावादी बन लड़ जाऊं
हाँ ये सन्नाटा अच्छा लगता है

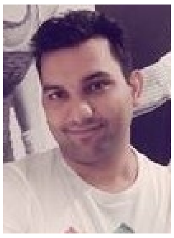

-- परवीन माटी

सूरज छिपा तो जब अँधेरा भी बढ़ाना आ गया
आभास होते ही लगा रोशन जमाना आ गया
जीवन सदा बीता लगा चाहत निशाना हो बना
अब कर रंज मन में लिया सा जो सुनाना आ गया
सरहद खड़े देखा डटें फोजी फसाना आ गया
मुश्किल लगी जाना सभी मन को बताना आ गया
हर कदम पे जो काज अजमा हो सुनाना आ गया
अब शस्त्र को बाजू उठा नीचा दिखाना आ गया
भुल से लगा अपमान जो झेला कभी क्या कायदा
हो फायदा सोचें सभी को अब जताना आ गया

-- रेखा मोहन

रोग जाता ही नहीं कितनी दवा ली हमने
माँ के कदमों में झुके और दुआ ली हमने
इस जमाने ने सताया भी बहुत है मुझको
आग ये सीने की अश्कों से बुझा ली हमने
जब नजर आई नहीं ख्वाब में माँ की सूरत
अपनी आँखों से हर इक नींद हटा ली हमनें
माँ के कदमों में ये सारा ही जहां दिखता है
बस तेरी याद में हस्ती भी मिटा ली हमने
खौफ था मुझको चरागों से ही घर जलने का
आग 'राज' घरों में ही लगा ली हमने

-- राज सिंह रघुवंशी

ओह, तुम लौट आये/मुझे यकीं था तुम जरूर आओगे
ज्यादा दिन न मेरे बिन तुम रह पाओगे
क्योंकि/मेरे प्यार की छाप बड़ी गहरी है!
ये फीका रंग नहीं कि पानी पड़े तो धुल जाये,
ये सूखा रंग नहीं कि आंधी चले तो उड़ जाये!
कर लो वादा अब लौटकर नहीं जाओगे!
सुख दुख के गीत मेरे साथ गाओगे
जिन्दगी-ए-सफर की कई राह होगी
हर राह पर चलोगे मेरा बाँह थामे
गाओगे वो गीत कि सोई शाम जागे
बाद मुद्दत के अब दिल मुस्कुराये
अच्छा हुआ जो तुम लौट आये!

-- अलका जैन 'अन्नू'

पिता बेटी की आँखों में देखता/सपने, कल्पनाएँ
अन्तरिक्ष में उड़ानों के/पंख संजोता सपनों में
मन ही मन बातें करता/मेरी बेटी का ध्यान रखना
जानता हूँ अन्तरिक्ष में
मानव नहीं होते
इसलिए हैवानियत का
प्रश्न नहीं उठता
पिता हूँ बीमार-बूढ़ा हूँ
फिक्र है मुझे बड़ी हो चुकी बेटी की

-- संजय वर्मा 'दृष्टि'

छात्र राजनीति देश की राजनीति का प्रयोगशाला

महेश तिवारी

मध्य प्रदेश के लगभग १५ जिलों के २५ महाविद्यालयों में १६२ आदिवासी छात्र प्रतिनिधियों ने छात्रसंघों में जीत का परचम लहराया, जिसमें मीडिया की खबरों के अनुसार पचास फीसदी स्थान लड़कियों ने कब्जाये। तो क्या इस जीत को सूबे में नए सवेरे के रूप में देखा जाना चाहिए, या फिर बने बनाये राजनीतिक ढर्रे पर होगा, वही ढाक के तीन पात। आज देश ही नहीं मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक बढ़ती बेरोजगारी है, जिससे निजात के लिए सूबे की सरकार प्रयासरत तो है, लेकिन शतप्रतिशत सफलता हासिल नहीं हो पा रही है। देश के साथ मध्यप्रदेश की विडंबना भी यही है कि युवाओं के मुद्दे को आवाज देने वाला कोई मसीहा उत्पन्न नहीं हो पा रहा। राजनीति के गलियारों में युवाओं को अधिकार दिलवाने की कितनी ही बात हो, लेकिन अमल होता दिखता नहीं। छात्रों के साथ जारी भेदभाव, छात्रावास, शिक्षा की गुणवत्ता और महाविद्यालय में शौचालयों की सुविधा आदि का विषय उठाने वाले इन छात्र नेताओं को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय फलक पर भी पहचान दिलानी होगी। तभी इन छात्रसंघ चुनावों का मकसद सफल हो पाएगा।

आज के दौर में जाति, धर्म की राजनीति को देश में चुनाव जीतने की रामबाण औषधि मान लिया गया है। आज देश की बात हो, या मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक शिक्षा का गिरता स्तर, बेरोजगारों की बढ़ती संख्या और सामाजिक असन्तुलन की स्थिति है। इन सबसे निजात का कोई इलाज हमारे राजनेताओं के पास दिखता नहीं। आज के दौर में मध्यप्रदेश में सबसे बड़ी तादाद आदिवासी समुदाय की है, जो अपने जीवन के अधिकार से वंचित दिखती है। एक सर्वे के अनुसार देश की वर्तमान संसद में वंशवादी सांसदों की संख्या में दो प्रतिशत और सरकार में ऐसे मंत्रियों की संख्या में १२ प्रतिशत की कमी आई है। पैट्रिक फ्रेंच ने २०१२ में अपनी एक किताब में देश के बारे में लिखा था, 'यदि वंशवाद की यही राजनीति चलती रही, तो भारत की दशा उन दिनों जैसी हो जाएगी जब यहां राजा महाराजाओं का शासन हुआ करता था।

आंकड़े के खेल में इस गतिशील संसद में वंशवाद की राजनीति में कुछ फीसदी का सुधार तो हुआ है। लेकिन क्या राजनीति ने युवाओं को स्वीकार करना शुरू कर दिया, उससे बड़ी विडंबना की बात यह है, राजनीति के चाणक्य देश की युवा शक्ति पर कितना भी इठला ले, लेकिन आज देश की वही लगभग ६५ फीसदी आबादी अपने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के लिए भटक रही है। ऐसे में सवाल यह जब देश, विदेशों का अंध अनुसरण संविधान निर्माण करते हुए नहीं चुका। फिर देश के युवाओं को राजनीतिक हक दिलवाने के मामले में विदेशों से कुछ सीख क्यों नहीं लेता? क्या राजनीति में आज के दौर में भी युवा कहलाने की प्रवृति ४५ वर्ष पहुँचने तक चलती रहेगी? विश्व में राजनीतिक दलों की औसत आयु ४३ वर्ष है।

लेकिन हमारे देश का युवा तो सड़कों पर डिग्री लेकर घूमने को विवश है। देश और प्रांतों में डिग्रियां बिक रही हैं, रोजगार नहीं। युवाओं पर नाज है, लेकिन राजनीति में उनका कोई स्थान नहीं। अब इस परम्परा को बंद करना होगा। युवाओं की समस्या युवा नेता अच्छे से समझ सकते हैं, इसलिए युवाओं को राजनीति में मौका मिलना चाहिए। इससे बड़ा सवाल तो यही है, जब छात्र राजनीति राजनीतिक दलों के लिए आपातकाल के बाद नेता उपलब्ध करवाने की प्रयोगशाला नहीं बन पा रही, फिर छात्रसंघ चुनावों का क्या अर्थ और उद्देश्य रह जाता है? यह देश के राजनीतिक नेताओं को सोचना होगा। ■

प्रदूषण का दानव

मनोज पाण्डेय 'होश'

यह सब समझ रहे हैं की दिल्ली की हवा क्यों आजकल ढीली है, पर लगता है कि संबंधित सरकारें या तो समझ नहीं रही हैं या न समझने का नाटक कर रही हैं। कल तक जो जाड़ों में बिस्तर को गर्म करने के काम आती थी, डंगर का चारा होती थी, वही पुवाल आज तीन-तीन प्रदेशों के लिये सिरदर्द बन गयी है।

खेती के अंधाधुंध यंत्रीकरण ने जहाँ जानवरों की उपयोगिता समाप्त प्रायः कर दी है वहीं गाँवों की बेरोजगारी भी बढ़ा दी है। इसलिये पुवाल का चारे में उपयोग कम हो गया। गाँव देहात में सम्पन्नता आई, तो मकान पक्के हो गये और बेड वार्मिंग का भी काम खत्म हो गया। थ्रैशर के इस्तेमाल से जो भुस बचती है वो चारे के काबिल नहीं रह जाती। फिर आप खुद सोचें कि किसान क्या करे इस पुवाल का !

अभी तो पंजाब और हरियाणा ही पुआल जला रहे हैं पर कल इस होलिका दहन में और भी प्रदेश सम्मलित हो जाएँगे, इसमें कोई संदेह नहीं। जाहिर सी बात है कि हमारी सरकारों को वैज्ञानिकों के साथ मिल कर इसके निवारण का हल ढूँढ़ना चाहिये। दुनिया में गेहूँ और धान, दोनों के पुवाल से कागज, दफ्ती और प्लाईवुड बनाने की कई तकनीकें उपलब्ध हैं, जिनके प्रयोग से इस समस्या का हल संभव है। देश में कागज और प्लाईवुड उद्योग पूर्णतया विकसित है एवं इनकी माँग भी खूब है, प्रचालन तंत्र अर्थात लॉजिस्टिक्स भी विकसित है जिससे पुवाल को खेतों से पेपर या प्लाईवुड मिल तक पहुँचाने में कोई समस्या नहीं आनी चाहिये। तो फिर हमारी सरकारें इस पर अमल क्यों नहीं करतीं?

यह सब होगा अवश्य, परंतु जब कुछ आम लोग दम घुटने से मर जाएंगे, तब। हमारे देश में समस्याओं के हल का यही प्रचलित तरीका है। लंदन में जब टेम्स नदी के प्रदूषण से लंदनवासियों का जीना हराम हो गया, यहाँ तक कि वहाँ की संसद, वेस्टमिनिस्टर एबी में, जो नदी पर ही स्थित है, साँसदों का बैठना मुश्किल हो गया और रानी ने संसद को तब तक संबोधित करने से साफ मना कर दिया जब तक की समस्या का निदान नहीं हो जाता, नदी को साफ करने की मुहिम को अंजाम मिला। हमें यह परिपाटी उन्हीं से तो मिली है।

दरअसल, हमारे नेता, जो हमारे बीच से ही उठते हैं पर सत्ता के वैभव में हमको तो क्या, अपने पुराने फटेहाल दिनों को भी भूल जाते हैं, उन्हें जगाना आसान नहीं होता। जब किसी वाकये के चलते सामाजिक भर्त्सना होने लगती है और हाथ से सत्ता सुख जाने की संभावनाएँ बनने लगती है, तभी समस्या हल की वास्तविक दौड़ भी शुरू होती है।

कहते हैं कि हर घूरे के दिन फिरते हैं, देखिये, घूरा बनी दिल्ली के दिन कब बहुरते हैं! फिलहाल मैंने भी यही सोच रखा है कि जब तक दिल्ली के वायु प्रदूषण की समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो जाता, तब तक उधर का रुख नहीं करूँगा। ■

(पृष्ठ १४ का शेष)

भाजपा क्यों लगने दे, यह कलंक?

का कहना है कि बच्चों की शिक्षा का माध्यम उनकी मातृभाषा ही होनी चाहिए। ऐसा होने पर उनकी मौलिकता बनी रहती है, स्मृति प्रखर रहती है, समय कम लगता है, आत्म-विश्वास बढ़ता है और विदेशी भाषा का माध्यम होने पर वे रट्टू तोते बन जाते हैं, उनकी बुद्धि कुंद हो जाती है, उनकी सीखने की क्षमता मंद पड़ जाती है और उनका आत्मविश्वास घट जाता है। अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई देश में लॉर्ड मैकाले की औलादों को पैदा करती है।

अंग्रेजी के चलते देश में करोड़ों बच्चे हर साल अनुत्तीर्ण होते हैं और वे पढ़ाई से मुंह मोड़ लेते हैं। भारत की शिक्षा व्यवस्था की दुश्मन अंग्रेजी की अनिवार्य पढ़ाई है और अंग्रेजी माध्यम की अनिवार्य पढ़ाई तो अत्यंत विनाशकारी है। स्वेच्छा से जितनी भी विदेशी भाषाएं सीखें, उतना अच्छा, लेकिन भाजपा के ये नगर निगम अपना मुंह काला करने पर उतारू हैं, तो इन्हें कौन रोक सकता है? भाजपा इस कलंक को कैसे धोएगी, वही जाने। वह इसे लगने ही क्यों दे? ■

ताजा खबर बनाम ब्रेकिंग न्यूज

विनय कुमार तिवारी

इधर क्या हो रहा है कि लिख नहीं पा रहा हूँ। लिखास तो लगती है, लेकिन लिखते समय मन में 'ब्रेकिंग न्यूज' सी कोई बात उठती है और लिखने से मन उचट जाता है। अब मन में जो चीज चल रही होती है उसमें रुचि कम हो जाती है। इससे मन से लिखास का भाव रफूचक्कर हो जाता है। 'ब्रेकिंग-न्यूज' सी बात में उलझे मन से मुझे क्या लिखना था यह बात दिमाग से निकल जाती है। पता नहीं ये 'ब्रेकिंग न्यूज' सी बातें दिमाग को जगाती हैं या सुलाती हैं।

एक बात और है, पहले क्या होता था कि कुल ले-देकर सुबह का अखबार ही हमें खबर से रूबरू कराता था। मुझे याद है, मेरे दादा जी पहले-पहल गाँव में अखबार मंगाना शुरू किए थे। हम भी प्रत्येक सुबह अखबार आने का बेसब्री से इंतजार किया करते। एक दूबे जी, जो वृद्धावस्था की ओर कदम बढ़ा रहे थे, वही हमारे यहाँ अखबार लाया करते। दूबे जी बाजार के चौराहे से अखबार लेकर बाँटने निकलते, हाँ हम अपने कस्बे को बाजार ही कहते हैं, तो डेढ़ किमी की दूरी खरामा-खरामा तय करते हुए हमारे गाँव तक पहुँचने में वे एक घंटा लगा देते। कभी-कभी ज्यादा देर होने या फिर दादा जी के यह कहने पर कि 'नन्हकवा, इतनी देर होइ गवा दूबे अबइ तक नाहीं आये!' तो हम अपने घर से सौ मीटर दूर गुजरती सड़क पर जाकर खड़े हो जाते और बेसब्री के साथ उनकी राह तकने लगते। खैर...!

दूबे जी के आते ही हम खुशी के साथ लपककर उनसे अखबार लेते और वे आगे बढ़ जाते। इसके बाद आगे उन्हें छह किमी दूर और जाना होता था। वैसे दूबे जी अखबार लेकर हमारे घर तक आते, अखबार देते और चाय पीकर आगे निकलते। हाँ, दूबे जी की एक विशेष बात पर हमने गौर किया था, हमारे घर की ओर अपनी साइकिल मोड़ते ही वे 'आज की ताजा खबर' के अंदाज में किसी समाचार-शीर्षक को बोलते हुए सुनाई पड़ते। लेकिन वह खबर हमारे अखबार की प्रमुख हेडिंग नहीं हुआ करती। हमारे यह पूछने पर यह किस अखबार की खबर है, तो वह अपने दूसरे हाथ में लिए अखबार को हमें दिखाते हुए कहते इसमें छपा है! फिर हम उस अखबार को पढ़ने लगते। इसी बीच दूबे जी चाय पी चुके होते। और कभी-कभी उनका वह अखबार भी बिक जाता। धीरे-धीरे हमने देखा कि हमारे गांव में ऐसे ही उनके कई ग्राहक हो गए थे।

वैसे अब 'ताजा खबर' वाला जुमला कम सुनाई पड़ता है, क्योंकि इधर चौबीसों घंटे चलने वाले समाचार चैनल आ गए हैं। इसीलिए अब ब्रेकिंग-न्यूज का जमाना आ गया है। अब तो प्रत्येक खबर ही ब्रेकिंग न्यूज बनकर आती है। जैसे, हम अब समाचारों की दुनिया में ही रहते हैं और किसी भी नई घटना को समाचारों की यह दुनिया लपकने के लिए तत्पर होती है। लपकने के दौरान ही यह घटना-अघटना जो भी हो, ब्रेकिंग न्यूज रहती है। बाद में, यह भी वैसे ही खबरों की दुनिया में खो जाती है। वैसे भी कोई न्यूज, न्यूज की दुनिया में प्रवेश करने के बाद न्यूज नहीं रह जाता और अगर आप उसे ही न्यूज समझ उसमें खोए रहते हैं तो ये न्यूज देने वाले आपके इस खोएपन को ब्रेकिंग-न्यूज के रूप में ब्रेक कर देते हैं। मतलब भाई, न्यूजों का महत्व केवल ब्रेकिंग भर का ही है और कुछ नहीं। किसी न्यूज में खोए नहीं कि आपके सामने अगला माल धर दिया जाता है।

हाँ, इसका भी अपना एक अर्थशास्त्र होता है, आखिर है तो मार्केटिंग का ही जमाना न। तो अखबार वाले दूबे जी इस बात को समझते थे। इसीलिए जिस अखबार को हमें देते थे, उसकी नहीं दूसरे अखबार के शीर्षक को 'ताजा खबर' के अंदाज में बोलते चले आते और इसे सुनकर कोई न कोई उनके अखबार को खरीद भी लेता।

हाँ, एकाध 'ब्रेकिंग न्यूज' या एकाध 'ताजा' हो तो चल जाता है, लेकिन प्रतिक्षण 'ब्रेकिंग न्यूज', प्रतिक्षण 'ताजा' की दुनिया मन-मस्तिष्क को एक अजीब सी हवालात में कैद कर देती है। फिर इससे बाहर आने का जी चाहने लगता है। ■

कतार में जीवन

तारकेश कुमार ओझा

आज कल मनःस्थिति कुछ ऐसी बन गई है कि यदि किसी को मुंह लटकाए चिंता में डूबा देखता हूं तो लगता है जरूर इसे अपने किसी खाते या दूसरी सुविधाओं को आधार कार्ड से लिंक कराने का फरमान मिला होगा। बेचारा इसी टेंशन में परेशान हैं। यह सच्चाई है कि देश में नागरिकों की औसत आयु का बड़ा हिस्सा कतार में खड़े रहकर मेज-कुर्सी लगाए बाबू तक पहुंचने में बीत जाता है। कभी राशन तो कभी केरोसिन की लाइन में खड़े रह कर अपनी बारी का इंतजार करने में। वहीं किसी को बल्लियों उछलता देखता हूं, तो लगता है आज इसने जरूर अपनी तमाम सुविधाओं का आधार कार्ड से लिंक करवाने में कामयाबी हासिल कर ली है तभी इतना खुश और बेफिक्र नजर आ रहा है, क्योंकि पिछले कई दिनों से मैं खुद इस आतंक से पीड़ित हूं।

अपनी पुरानी और खटारा मोबाइल को दीर्घायु बनाए रखने के लिए मैं रात में स्विच-आफ कर देता हूं। यह सोचकर कि इससे मोबाइल को भी दिन भर की माथा पच्ची से राहत मिलेगी और वह ज्यादा समय तक मेरा साथ निभा पाएगा। लेकिन सुबह उनींदे ही मोबाइल का मुंह खोलते ही मुझे डरावने संदेश मिलने लगे हैं। अमूमन हर संदेश में आधार का आतंक स्पष्ट रहता है। फलां तारीख तक इस सुविधा का आधार से लिंक नहीं कराया बच्चू, तो समझ लो जैसे वाक्य। आधार के इस आतंक के चलते मैसेज का टोन ही अब सिहरन पैदा करने लगा है। ऐसे में किसी को बेफिक्र देखकर मन में यह ख्याल आना स्वाभाविक ही है कि यह आधार को लिंक कराने के टेंशन से जरूर मुक्त है, तभी तो इतना निश्चिंत नजर आ रहा है।

रोजमर्रा की जिंदगी में भी तमाम लोग यही सवाल पूछते रहते हैं कि भैया यह आधार को अमुक-अमुक सुविधा से लिंक कराने का क्या चक्कर है? आपने करा लिया क्या? ऐसे सवालों से मुझे चिढ़ सी होने लगी है। सोचता हूं कि क्या देश में हर समस्या का एकमात्र यही हल है। हालांकि ऐसे आतंक मैं बचपन से झेलता आ रहा हूं। बचपन में अक्सर इस तरह के सरकारी फरमानों से पाला पड़ता रहा है।

मुझे कतार में खड़े होने से चिढ़ है। लेकिन तब किसी न किसी बहाने कतार में खड़े ही होना पड़ता था। कभी केरोसिन, तो कभी सरसों के तेल के लिए। अभिभावकों की साफ हिदायत होती थी कि फलां चीज की विकट किल्लत है। कनस्तर लेकर जाओ और आज हर हाल में वह चीज लेकर ही आना। यही नहीं बाल बनाने के लिए भी हजामत की दुकान के सामने घंटों इंतजार करना पड़ता था, क्योंकि घर वालों का फरमान होता था कि बाल बनेगा तो बस फलां दिन को ही। यहां भी ऑड-इवन का चक्कर। विषम दिन में बाल बनवा लिए तो घर में डांट-फटकार की खुराक तैयार रहती। कभी सुनता यह प्रमाण पत्र या कार्ड नहीं बनाया, तो समझो हो गए तुम समाज से बाहर वगैरह-वगैरह।

लेकिन दूसरी दुनिया में नजर डालने पर हैरान रह जाता हूं। एक खबर सुनी कि बुढ़ापे में बाप बनने वाले एक अभिनेता अपने नवजात बच्चे का पहला जन्मदिन मनाने का प्लान तैयार कर रहे हैं। इस कार्य में उनका समूचा परिवार लिप्त है। लोगों को सरप्राइज देने के लिए बर्थ डे सेलिब्रेशन के प्लान को गुप्त रखा जा रहा है। एक और खुशखुबरी कि यूरोप में हुए आतंकवादी हमले के दौरान हमारे बालीवुड की एक चर्चित अभिनेत्री बाल-बाल बच गई। वाकये के समय वह वहीं मौजूद थी, क्योंकि उसका एक मकान उस देश में भी है। वह इन दिनों यूरोप में छुट्टियां मना रही है। जिस समय हमला हुआ वह समुद्र से अठखेलियां कर रही थी, सो बच गई।

खुशखबरी की तश्तरियों में मुझे यह देख कर कोफ्त हुई कि जन्म दिन कुछ प्रौढ़ अभिनेताओं का है

(शेष पृष्ठ १७ पर)

मुलायम सिंह क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

मृत्युंजय दीक्षित

लगता है कि लोकसभा और विधानसभा चुनावों में ऐतिहासिक पराजय के गम से सपा मुखिया मुलायम सिंह यादव व उनका परिवार अभी तक उबर नहीं पाया है। मुलायम सिंह अपने बयानों से काफी निराशावादी व दिग्भ्रमित प्रतीत हो रहे हैं। वे बयानों से न तो समाजवादी लग रहे हैं और न ही धर्मनिरपेक्षतावादी। वे इस समय अपने बेटे के मोह से पीड़ित तो दिख ही रहे हैं, साथ ही उनके मन में देश का प्रधानमंत्री न बन पाने का दुख भी समा गया है तथा अब उन्हें लग रहा है कि यदि उप्र और केंद्र में योगी और मोदी की जोड़ी ने लम्बे समय तक शासन कर लिया तो उनके बेटे की भविष्य की रही-सही सभी संभावनायें भी समाप्त हो जायेंगी।

उप्र व देश की राजनीति में एक समय ऐसा था जबकि सपा मुखिया मुलायम सिंह की बातों का लोग सम्मान करते थे, लेकिन अब देश की राजनीति की गंगा में काफी पानी बह चुका है। अब हताशा व हाशिये पर पड़े मुलायम सिंह केवल मीडिया में चर्चा में बने रहने के लिए तथा अपने बेटे को भविष्य में राजनीति करने के गुण सिखा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर वह अपने बयानों से अपने कार्यकाल के दौरान किये गये हिंदुओं के नरसंहारों व उसके बाद पूरे उप्र में भड़के दंगों को बड़े ही गर्व के साथ सही ठहरा रहे हैं। सपा मुखिया के बयान मुस्लिम तुष्टीकरण की चरम सीमा को पार कर गये हैं। अभी हाल ही में उन्होंने अपनी कुंठित मानसिक विकृति का परिचय देते हुए कहा था कि भगवान राम के प्रति केवल उत्तर भारत में ही आस्था है तथा भगवान श्रीकृष्ण के प्रति पूरे भारत में आस्था है।

इस बयान की जितनी निंदा की जाये वह बेहद कम है। सपा मुखिया मुलायम सिंह इतने मूर्ख हैं यह उनके बयान से पता चल रहा है। उन्हें यह नहीं पता कि भगवान श्रीराम के प्रति पूरे देश में आस्था है। थाइलैंड, इंडोनेशिया, कंबोडिया, मलेशिया, श्रीलंका सहित विश्व के अधिकांश देशों में भव्य रामलीला का मंचन होता है। अभी मनीला में विश्व के नेताओं के सम्मुख रामायण का भव्य मनोहारी मंचन किया गया था, जिसे पीएम मोदी व अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी देखा था। रामायण लोगों को जीवन जीने का तरीका सिखाती है। यदि सपा मुखिया मुलायम सिंह भगवन श्रीकृष्ण के इतने बड़े भक्त हैं तो वह श्रीकृष्ण जन्मभूमि को आजाद करवाने का आंदोलन क्यों नहीं छेड़ रहे? भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत की लड़ाई व गीता में कहीं भी इस प्रकार के नरसंहार करने का समर्थन नहीं किया।

देश की राजनीति में सपा मुखिया मुलायम सिंह जैसा विकृत राजनीतिज्ञ संभवतः नहीं हुआ होगा, लेकिन उनकी श्रेणी में कुछ सीमा तक बिहार के लालू परिवार को रखा जा सकता है। सपा मुखिया का कहना है कि पहली बार सपा को केवल ४७ सीटें ही उपलब्ध हुई हैं। उनका यह भी कहना है कि अयोध्या में हिंदुओं पर गोली चलवाने के बाद भी उनको १०५ सीटें मिली थीं। वह हिंदुओं पर गोली चलाने की घटना पर वाहवाही लूटना चाहते हैं। वे मुसलमानों के बीच में यह संदेश देना चाहते हैं कि अब उनका बेटा अखिलेश उनके लिए काम करने आ रहा है। मुलायम सिंह बार-बार यह कह रहे हैं कि अयोध्या में यदि और हिन्दू मारे जाते तो क्या हो जाता। वे यह दावा कर रहे हैं कि उनके कारण ही अयोध्या में बाबरी मस्जिद सुरक्षित रही, इसलिए मुसलमानों के लिए सबसे अच्छा समाजवादी दल ही है। उन्होंने अपनी जन्मदिन पार्टी में यह भी कहा कि मुस्लिम समाज के लोग वोट डालने के लिए नहीं निकल रहे। अब समाजवादियों को इस बात पर ध्यान देना चाहिए ताकि समाजवादी दल की स्थिति मजबूत हो सके।

सपा मुखिया ने प्रदेश की राजनीति का पूरी तरह से सांप्रदायिक आधार पर विभाजन करने का प्रयास किया है। उनके बयानों के आधार पर समाजवादी दल के खिलाफ धर्म आधारित राजनीति करने का मुकदमा चलाया जा सकता है। २ जनवरी २०१७ को सर्वोच्च न्यायालय ने इस विषय पर एक बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय सुना रखा है। समाजवादी दल की मान्यता के खिलाफ अपील भी की जा सकती है। भारतीय जनता पार्टी का कहना है कि सपा मुखिया के बयान मुस्लिम तुष्टीकरण का अंतिम प्रयास हैं। वे कारसेवकों पर गोलियां चलवाने की बात कहकर हिंदु तथा हिंदुत्व पर प्रहार करने का काम करते हैं। वर्ग विशेष के वोटों का मोह पुत्रमोह से जुड़कर सांस्कृतिक द्रोह तक पहुंच गया हैं। अब समय आ गया है कि वह रामभक्तों पर गोलियां चलवाने के मामले में मीडिया के माध्यम से अपना अपराध स्वीकार करते हुए माफी मांगे। सपा मुखिया के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका पहुंच भी गयी है। समाजवादियों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि जब-जब उप्र में उनकी पराजय हुई है उसका सबसे बड़ा और प्रमुख कारण अंधाधुंध मुस्लिम तुष्टीकरण ही रहा है। समाजवादी सरकार में सबसे खराब कानून व्यवस्था रहती है। जब-जब सपा सरकार प्रदेश में आती है अपराध बेतहाशा बढ़ जाते हैं। अखिलेश की सरकार में भू माफिया व खनन माफिया का जबर्दस्त बोलबाला हो गया था। महिलाओं पर अत्याचार व बलात्कार आदि की वारदातें आम हो गयी थी।

आज प्रदेश में एक कर्मठ व ईमानदार मुख्यमंत्री की सरकार बनी है तब से समाजवादियों व उनकी सरपरस्ती में पनपने वाले अपराधियों व गुंडों के बुरे दिन आरम्भ हो चुके हैं। समाजवादी सरकार में धन की लूट मची हुई थी तथा कोई भी विभाग ऐसा नजर नहीं आ रहा जहां घोटाले दर घोटाले न हुए हों। प्रदेश में समाजवादियों की जमीन अब खिसकती जा रही है तथा निकाय चुनावों के बाद सपा की हालत और बुरी हो सकती है। यह बात अलग है कि कालेधन और बेनामी संपत्तियों के बल पर समाजवादी अभी एक दो चुनाव बड़े आराम से लड़ सकते हैं।

आज की तारीख में सपा मुखिया ने जिस प्रकार से हिंदुओं की हत्या करवाकर अपने आप को बेहद गौरवान्वित महसूस किया है उससे उनकी छवि को गहरा आघात लगा है। सपा मुखिया के बयानों से मुस्लिम समाज भी हतप्रभ व असहज हो रहा है। मुस्लिम समाज भी अब अपने आपको इन दलों के बंधनों से मुक्ति चाह रहा है जो केवल उसको अपना वोटबैंक मानकर बंधक बनाकर रखना चाहते हैं। अब समय आ गया है कि सपा मुखिया यदि अपने बेटे का भविष्य बचाना चाहते हैं तो धैर्यपूर्वक शांत रहें तथा अब शांति के साथ अपना जीवनयापन करें और जनता को भी करने दें। इसी में समाजवादियों की भलाई है। अब देश व प्रदेश की राजनीति में सपा मुखिया की भूमिका व महत्व का अवसान हो चुका है। कोई भी उनकी बात को गंभीरता से नहीं ले रहा। ■

आत्महत्या! नहीं, कभी नहीं

जय प्रकाश भाटिया

बहुत से लोग सोचते हैं कि आत्महत्या का प्रयास स्वार्थी चाल है क्योंकि उस व्यक्ति को पीछे छोड़ने वाले अपने लोगों की परवाह नहीं है। मैं आपको बता सकता हूं कि जब कोई व्यक्ति उस मानसिक दशा पर जाता है, तो वे वास्तव में मानते हैं कि उनके प्रियजनों ने उनके साथ बहुत अच्छा किया होगा, पर उस क्षणिक आवेश में अनर्थ हो जाता है, यह मानसिक बीमारी है, वह स्वार्थी नहीं है।

सच्चाई कभी कभी एक भयानक मानसिक बीमारी बन जाती है, और जो इसका सामना करने में अपने को पूर्णयता अयोग्य समझने लगते हैं, ऐसा दुर्भाग्यपूर्ण कदम उठा लेते हैं। हममें से बहुत से इस किनारे के नजदीक रहे हैं, या संकट में परिवार के सदस्यों के साथ निपटे हैं, और कुछ ने मित्र और प्रियजनों को खो दिया है। आइए एक दूसरे के लिए बात को समझें और इस मानसिक बीमारी को रोकने का प्रयास करें. मैंने ऐसे कई हताश लोगों को अपना समझकर उनकी मानसिक धारा को बदला है, और वे जो मरने-मारने की भाषा बोलने लग गए थे , उन्हें भी प्रेम भाव से जीना सिखा दिया है। ऐसा हम सबको मिल-जुलकर ही करना होगा।

मैं एक आत्महत्या का प्रयास करने वाले व्यक्ति

(शेष पृष्ठ २३ पर)

मुक्ति

लीना खत्री

'तुम सुधीर भैया से बात क्यूं नहीं करते हो विनय, मैं तो तंग आ चुकी हूं सविता भाभी के रोज रोज के झगड़ों से!' मेघना परेशान होकर अपने पति विनय से कह रही थी।

'तुम तो जानती हो सुधीर भैया कितना स्नेह रखते हैं मुझपे, सोचता हूं कहीं मेरी बात उनका दिल न दुखा दे, इसलिए चुप रहता हूं। फिर तुम पढ़ी लिखी हो अपने हक अच्छी तरह जानती हो, इस घर पर जितना हक उनका है उतना ही तुम्हारा भी है। सविता भाभी चाहे जो कर ले, वो हमें इस घर से नहीं निकाल सकती।'' विनय ने कहा।

सुधीर और विनय की उम्र में ज्यादा फर्क नहीं था इसलिए दोनों में खूब बनती थी और साझा बिजनेस होने के कारण उन दोनों ने मिलकर बड़े अरमानों से घर बनवाया था पर अब इस घर को लेकर सुधीर की पत्नी सविता के मन में लालच आ गया था। उसे लगता था कि बड़ी होने के कारण पहला हक उसका है और वो जब चाहे अपनी देवरानी को घर से निकाल सकती है। सारे दिन मोहल्ले की औरतों के बीच बैठकर अपनी देवरानी की बुराइयां करना और फिर घर आकर झगड़ा करना बस यही काम था उसका और मोहल्ले की औरतें भी कम नहीं थी वो सब उसे उकसाती थी कि अपनी देवरानी को घर से निकाल दो।

दिन पर दिन वो और झगड़ालू होती जा रही थी। जब तक वो बाहर रहती घर में शांति रहती, पर घर आते ही वही झगड़ा करना, मेघना के हर काम में मीनमेख निकालना और किसी न किसी तरह उसे परेशान करना शुरु कर देती। उसे लगता था मेघना परेशान होकर चली जाएगी पर पढ़ी-लिखी मेघना अच्छी तरह जानती थी कि जितना हक जेठानी का है घर पर उतना ही उसका भी है। एक दिन तो सविता ने उसे खुलेआम धमकी भी दे डाली कि वो जल्द ही उसे चोटी पकड़कर घर से निकाल देगी इस पर मेघना ने भी कह दिया कि 'भाभी, आप चाहे जो कर लो, मैं आपकी इन गीदड़ भभकियों से डरने वाली नहीं। माना कि मेरा साथ कोई नहीं देगा, पर आपके लिए मैं अकेली काफी हूं और सुनो, मुझे आपकी ये चुनौती स्वीकार है। अब तो किसी भी कीमत पर मैं यहां से जाने वाली नहीं'।

उसके ऐसा कहने पर सविता को लगा अब तो ये उल्टा जवाब भी देने लगी है उसे उसकी सत्ता छिनती हुई सी लगी। वैसे सविता के इस कर्कश और हिटलरी स्वभाव के पीछे उसकी सास विमला और ससुर आलोकनाथ का बहुत बड़ा हाथ था। उन लोगों ने हमेशा से सिर्फ सविता की ही सुनी थी और मेघना से कभी नहीं पूछा कि सच क्या है क्योंकि सविता चापलूसी और में भी आती है पर अगर कोई जानबूझकर अपनी आंख पर पट्टी बांध ले, तो उसे क्या कहें। विनय अपने भात्र प्रेम के कारण चुप रहते और मेघना को जोर-जोर से चिल्लाना आता नहीं था। इसलिए जब भी सविता झगड़ा करने लगती, वो बिट्टू को लेकर अपने कमरे में चली जाती। एक दिन तो सविता ने हद ही कर दी। मेघना ने बिट्टू की दूध की बोतल उबालकर रखी थी और दूध ठंडा करने रखा तो सविता ने वो दूध फेंक दिया और दूध का भगोना ले जाकर अपने कमरे में रख दिया।

मेघना तिलमिला कर रह गई। आखिर सहनशक्ति की भी एक हद होती है। इस बार वार उसके बच्चे पर था, इसलिए मेघना ने सोचा अब तो सामना करना ही होगा। वो जोर-जोर से सविता के कमरे का दरवाजा पीटने लगी। जब सविता ने दरवाजा खोला, मेघना कमरे में जाकर दूध का भगोना उठाने लगी, तो सविता ने ठोकर मारकर सारा दूध गिरा दिया और बोली 'जब तक तू यहां से नहीं जाएगी, यही सब चलेगा अगर अपनी खैर चाहती है तो चली जा यहां से।' 'तो फिर भाभी आप भी सुन लो। आपकी ये हरकतें एक दिन आपके लिए ही दुखदाई बन जाएंगी, क्योंकि अब मैं चुप नहीं रहूंगी।' मेघना की आखें अब अंगारे बरसा रही थीं जिसे देखकर एकबारगी सविता भी चकरा गई। 'अरे अपनी नहीं तो अपने बच्चे की फिक्र कर, तेरी वजह से वो भूखा मरेगा।' सविता तुनककर बोली। 'उसकी चिंता आप मत करो भाभी! अभी उसकी मां जिंदा है और मेरे होते हुए मेरा बच्चा कभी भूखा नहीं मरेगा।'

दोनों भाइयों के घर आते ही सविता जोर-जोर से चिल्लाने लगी 'अरे कोई मुझे इस चुड़ैल से बचाओ! देखो आज इसने मेरे कमरे में दूध फैलाया है कल न जाने क्या करेगी। कहीं मुझे और मेरे बच्चों को ही न मार डाले। इस कलमुंही से कह दो यहां से चली जाए, नहीं तो अच्छा नहीं होगा।' सविता इतनी जोर जोर से चिल्ला रही थी कि घर के बाहर लोग आकर खड़े हो गए। सुधीर और विनय अच्छी तरह जानते थे कि ये सब सविता का किया धरा है और रोज रोज के झगड़ों से दोनो भाई तंग आ चुके थे, इसलिए बड़े होने के नाते सुधीर ने ये फैसला लिया कि मेघना की कोई गलती नहीं, इसलिए वो ही अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कहीं किराए के मकान में चले जाऐंगे।

उनके इस फैसले पर सविता कुढ़कर रह गई, पर पति के खिलाफ बोलने पर उसने जो सास ससुर के सामने सती सावित्री वाली छवि बनाई थी, वो बिगड़ जाएगी, इसलिए चुपचाप जाने को राजी हो गई। पर जाते-जाते भी अपनी विद्रूप मानसिकता की छाप छोड़ कर गई। वो इस शर्त पर जाने को राजी हुई कि उसका कुछ सामान उसके कमरे में रहेगा और वो उस कमरे का ताला लगाकर चाबी अपने पास रखेगी। वो अच्छी तरह जानती थी कि इस तरीके से वो जाने के बाद भी मेघना को परेशान कर सकेगी क्योंकि घर के पीछे वाली गैलरी का दरवाजा उसके कमरे से खुलता था और छत की नाली गैलरी मैं आती थी ओर अगर गैलरी की सफाई न हो तो नाली के मुंह पर कचरा फंस जाने की वजह से बारिश का सारा पानी घर में घुस जाता था और तेज बारिश में ज्यादा परेशानी होती थी सारा घर पानी से भर जाता था। सविता ने एक बार भी नहीं सोचा कि ऐसी स्थिति में मेघना अपने छोटे से बच्चे को लेकर कितनी परेशान होगी पर उसकी जिंदगी का मकसद ही मेघना को परेशान करना था।

घर छोड़ने के बाद सविता ने सारे रिश्तेदारों में ये बात फैला दी कि उसकी देवरानी ने उसे घर से निकाल दिया। अब तो वो सास ससुर की नजरों में देवी बन चुकी थी और सारे रिश्तेदारों में मेघना बदनाम हो चुकी थी, इसलिए जब भी वो किसी समारोह में जाती लोग उसे ताने मारने लगते इसलिए उसने किसी भी समारोह में जाना बंद कर दिया। उस दिन मेघना बिट्टू को सुलाकर किचन में खाना बनाने गई तो उसी वक्त तेज बारिश शुरू हो गई और देखते ही देखते तेजी से घर में पानी घुसना शुरू हो गया। ऐसे में मेघना क्या करती? पानी तो बहुत तेजी से अंदर आ रहा था, उसने जमीन पर बिछे गद्दे को सोफे पर पटका और जल्दी जल्दी जैसे तैसे खाना बनाकर वो बिट्टू के पास पलंग पर चढ़कर बैठ गई और बारिश के बंद होने तक वहीं बैठी रही।

जब बारिश बंद हुई तब धीरे धीरे घर की बाकी नालियों से पानी अपने आप बाहर जाने लगा। विनय घर पहुंचे तो सारा माजरा समझ गए उन्होने मेघना से कहा 'तुम चिंता मत करो कल भैया से कहकर कमरे की चाबियां ले आउंगा सफाई होने के बाद पानी भीतर नहीं आ सकेगा।' 'ठीक है विनय' मेघना बिट्टू के मुंह में दूध की बोतल देते हुए बोली। पर सविता जैसी बदमाश औरत से चाबी निकलवाना इतना भी आसान नहीं था जब सुधीर ने उससे चाबी मांगी तो वो तुनककर बोली- 'तुम क्या चाहते हो ये चाबी लेकर वो सारे घर की मालकिन बन जाए और मैं हाथ पर हाथ धरे बैठी रहूं?'

'ये कैसी बातें कर रही हो तुम? तुम्हें अच्छी तरह पता है कि बारिश में नाली की सफाई न हो तो सारा पानी अंदर आ जाता है। तुम ऐसा करो, चाबी दे दो, मैं अपने सामने सफाई करवाकर चाबी वापस ले आऊंगा।' पर सविता को समझाना भैंस के आगे बीन बजाने जैसा था। उसने चाबी सुधीर को देने के बजाए बाहर ले जाकर घर से लगे कुएं में फेंक दी और सुधीर देखते ही रह गए। अगले दिन विनय ने चाबी मांगी तो सुधीर ने उससे माफी मांगते हुए उसे सारा किस्सा सुनाया 'विनय मुझे माफ कर दे भाई मैं चाबी नहीं ला सका।' 'कोई बात नहीं भैया आप क्यूं दुखी होते हो अब मुझे कोई और उपाय करना होगा।' विनय ने कहा।

आज भी आकाश बादलों से घिरा हुआ था और कभी भी तेज बारिश शुरू हो सकती थी, विनय सोच में

(शेष पृष्ठ ३० पर)

सही समाज का मूल : मित्रता

कादम्बरी मेहरा, लंदन

अपनी बात कहने के लिए समय और स्थान कभी भी पूरे नहीं पड़ेंगे। कम से कम इस जीवन में तो नहीं। अधिकांश जीवन बीत गया है अनुभवों को समेटते और इन अनुभवों में सबसे अधिक कोलाहल करता है विवाहित स्त्री के लिए मित्रता का अभाव। एक बार पिता का घर छोड़ा तो बस वह अकेली रह गयी। उम्र चाहे जो हो पिता-माता उसे दुनिया के झंझटों से बचा-बचाकर पालते हैं। दुनियादारी की पेंचीदगियों से वह अनभिज्ञ रखी जाती है। हर कोई एक 'भोली भाली' सरल स्वभाव लड़की चाहता है। शिक्षा दी जाती है कि जवाब मत देना, खिलाकर खाना, कहना मानना। उसकी इन्हीं शिक्षाओं का नाजायज फायदा ससुराल वाले उठाते हैं। लाख पढ़ी लिखी हो, अपने धर्म की मान्यताओं से हारी रहती है।

उदाहरण के लिए कहा जाता है कि स्त्री को अपने पति को भोजन कराने के बाद खाना चाहिए। ठीक है, पर यह क्या बात हुई कि ऐसा न करनेवाली स्त्री अगले जन्म में सुअरी बनेगी। कहाँ लिखा है ऐसा? कौन से हिन्दू शास्त्र में? अब हमारे चीनू भाई इसी बात को लेकर झगड़ लिए पत्नी से। बेचारी दिन भर फैक्ट्री में एक टांग से खड़ी पुर्जों की बेल्ट पर छँटाई का काम करती थी। उसकी आय के बिना चीनू भाई गुजारा नहीं चला पाते थे। अगर वह भूखी थी और उसने आते ही खाना खा लिया तो थाली फेंककर क्लेश करना क्या सभ्यता थी? मुझे याद है चाचा के एक दोस्त ने उनको शादी के पहले सीख दी थी, 'यार बीबी पर शुरू में रौब जमाना बहुत जरूरी है। बाद में चाहे जो करो। पहली बार थाली फेंक दो, चाय का प्याला तोड़ दो, कहो ये क्या लाई है वगैरह। बस वह सारी जिन्दगी तुमसे डरकर चलेगी।' चाचा जी ने ऐसा किया या नहीं मगर चाची जैसी शांत, स्निग्ध नारी नहीं देखी।

यह मित्रता का अभाव भारतीयों के आम व्यवहार में भी देखा जा सकता है। इसमे स्त्रियां और पुरुष समान रूप से अपराधी पाए जाएंगे। रेल के डिब्बे में हमारा कूपे आरक्षित था। गाड़ी अमृतसर से आ रही थी। दिल्ली में जब हम चढ़े तो एक साहिबा हमारी सीट पर गत्ते के डिब्बे, कागज की प्लेटें आदि पसारकर बच्चे को खाना आदि खिला रही थीं। स्वयं भी खाया होगा पति-पत्नी ने। उठीं तो सब गन्दगी वहीं छोड़कर चलती बनी। उम्र तीस की या इससे भी कम। मेरे पति ने अनायास कहा, 'और यह सब कौन उठाएगा?' लड़की धृष्टता से पलटी और हाथ उठाकर बोली- 'हाउ डेयर यू टॉक लाइक दिस। यू वांट मी तो स्लैप यू?'

अपने से दुगुनी उम्र के व्यक्ति से अंग्रेजी में उलटा चोर कोतवाल को डाँटे। अगर मैं बीच में न आती तो वह शायद मार भी देती। मैंने शराफत से पूछा- 'क्या यह सीट आपकी है? उत्तर में वह बोली कि खाली पडी थी। ठीक मगर अपनी झूठी प्लेटें झूठन आदि वहीं छोड़कर जाना क्या ठीक था। उसका उत्तर था- अटेंडेंट को बुलाओ। अटेंडेंट खुद को अफसर समझनेवाला एक कम उम्र के छोकरे को सर पर टीप मारकर काम करने ले आया। सफाईवाले उस बालक को पैसे हमने दिए।

प्लेटफार्म पर एक अधेड़ उम्र का आदमी, साफ सुथरी शक्ल, पैंट कमीज पहने, झाड़ू लगा रहा था। जगह एकदम साफ कर दी कूड़ेदान खाली कर दिया। एक सजा-बजा युवक अपनी माता जी, पत्नी और दो नन्हे बालकों के संग एक बेंच पर जमा हुआ था। एक कागज को उसने पढ़ा और पुर्जे-पुर्जे करके वहीं फर्श पर फेंक दिया। उसने नहीं देखा कि यह जगह अभी अभी साफ की गयी है। उसने नहीं देखा कि कूड़ेदान सिर्फ दो गज पर रखा हुआ है।

मल्टीप्लेक्स में पिक्चर देखने गए हम। हमारे सामने एक नया जोड़ा भी क्यू में टिकट ले रहा था। लड़की के हाथ में चूड़ा था मगर वह पेट से थी। जीन्स और टॉप पहने थी। शौचालय जाना था मुझे। टिकट आदि से निपटकर मैं उस तरफ गयी तो वही लड़की बाहर आई। मैं उसके बाद ही अंदर घुसी तो देखा उसने चेन नहीं खींची थी। मैंने कहा उँह ऊँ। पर वह अंग्रेजी में बोली- आंटी पुश दी ब्लैक बटन टु फ्लश। अरे भली औरत अंग्रेजी की टांग तोड़नी सीख ली, अंग्रेजों के जैसा व्यवहार भी तो सीख। कल को बाल बच्चों को क्या सिखाएगी? अंग्रेज औरतें पहले बच्चे को सही तरीके से टॉयलेट इस्तेमाल करना सिखाती हैं। किसी गैर को बच्चे को धुलाने नहीं देतीं। यहां बच्चा होते ही आया की उम्मीद रखती हैं। कभी गंदे लंगोट नहीं धोतीं। इसे अपनी जात और शान के खिलाफ समझती हैं।

ऐसे सैकड़ों किस्से मेरी नजरों से गुजरते हैं जब मैं भारत जाती हूँ। इन सबका अंडर करंट एक ही है। मित्रता का अभाव। अपनी चमड़ी से आगे न सोचना, दूसरे को कमतर समझना, दूसरे की उपेक्षा। स्वार्थी हमेशा डरा हुआ रहता है, इसीलिए सदा मारने को तत्पर। अपना काम खुद न करने की आदत के पीछे भी यही मित्रता का अभाव है। इंग्लैंड में मैंने देखा एक नारा है, 'आई विल नॉट पे ए डाइम फॉर व्हाट आई कैन डू माइसेल्फ।' (जो काम मैं खुद कर सकता हूँ उसके लिए मैं किसी को एक पैसा ना दूँ।) यहां नौकर को भी हेल्पर कहा जाता है। और पैसे देने के साथ साथ थैंक यू भी बोलना जरूरी है। दूकानदार से सामान खरीदते समय भी प्लीज और थैंक यू कहना जरूरी है। भिखारी भी दान लेकर थैंक्यू बोलता है।

समय आ गया है हम खुद को जांचें। ध्यान दें कि हम कितने लोगों के उपकार में रहते हैं। किस-किसका अतिक्रमण करते हैं। किस-किसका अहसान लेते हैं। किस-किसकी उपेक्षा करते हैं। क्या उनके बिना हमारा काम चल पायेगा। यदि यह आत्म परीक्षण हमारे अंदर जागेगा तभी हम सफल रिश्ते कायम कर पाएंगे और अपने आगेवाले नागरिकों को संस्कार दे पाएंगे। तभी हम विवाह जैसी आवश्यक संस्था के काबिल बन पाएंगे। यह सोचना गलत है कि विवाह जरूरी नहीं। समाज की इकाई परिवार ही थी, है, और रहेगी। ■

(पृष्ठ २१ का शेष)

आत्महत्या! नहीं, कभी नहीं!

को जानता हूं और वह हमेशा उस घड़ी का पछतावा करता है, जब उसने ऐसा किया पर प्रभु की कृपा से जान बच गयी। पति पत्नी की जरा सी बात ने विकराल रूप ले लिया था, पर आज भी उस घटना के लगभग ४० वर्ष बीतने पर वह एक बहुत ही प्रिय पति-पत्नी युगल, प्रेम भाव से जी रहे हैं। मेरा एक अन्य मित्र इतना सौभाग्यशाली नहीं था, अनर्थ जो होना था हो गया। इन दोनों ही दुखद घटनाओं का विश्लेषण किया जाये तो पता चलता है कि पति-पत्नी के बीच बस छोटी सी बात दिल को लग गई और अनहोनी हो गई, जबकि दिल में प्यार की कोई कमी नहीं थी. कितना दुर्भाग्यपूर्ण और कष्टदायक है यह सब!

आत्महत्या यह एक स्वार्थी चाल नहीं है, लेकिन थोड़े समय की स्थिति है जहां एक व्यक्ति को इतनी हताशा है, कि वह इस चरम कदम को उठा रहा है ताकि लोगों को पता चले कि वह कितना बुरा महसूस कर रहा है, और उसको न्याय से इनकार किया गया है, अगर किसी भी तरह से इस स्तिथि को गुजर जाने दिया जाये तो अनहोनी रुक सकती है, यह कम समय की स्थिति पारित करने की वजह बन जाये , तो चीजें सामान्य हो सकती हैं, हमें क्रोध, जीवन में नकारात्मकता से बचना चाहिए और अगर हमें लगता है कि कोई व्यक्ति भड़काऊ है और स्थिति खराब से भी बदतर हो सकती है तो हमें दमकल के रूप में कार्य करना चाहिए।

मान लीजिये कोई हताश व्यक्ति एकांत पाकर फांसी का फंदा लगाने की तैयारी कर रहा है, वह फंदा गले में डालने ही वाला है, पर उसी समय कोई मित्र मिलने के लिए आ जाता है। कुछ देर सामान्य बातें होती है, चाय अदि पीते हैं और मित्र चला जाता है। क्या मरने वाला व्यक्ति मित्र के जाने का इंतजार कर रहा था कि वह जो 'जरूरी' काम कर रहा था अब उसे निपटा ले? कदापि नहीं, वह तो उस घड़ी को याद करेगा कि वह क्या करने जा रहा था और प्रभु ने ऐन मोके पर मित्र को भेजकर उसकी जान बचा ली. वह घड़ी टल गयी।

हर कोई एक अकेला व्यक्ति नहीं है, परिवार, समाज, संगठन या समूह का एक हिस्सा है। हम सभी का जीवन भगवान का एक उपहार है, हम भगवान के द्वारा निर्मित सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ हैं सबसे अच्छा हैं, हम ऐसी स्थिति में प्रभु को याद करें और निर्णय भगवान पर छोड़ दें।

इसलिए अभी नहीं और कभी नहीं! कोई आत्महत्या कभी नहीं! ■

बाल गीत

हठ कर बैठी गुड़िया रानी, चाँद मुझे दिलवा दो
दादी बाबा नाना नानी, चाँद मुझे दिलवा दो
छोड़ दिया है दाना पानी, चाँद मुझे दिलवा दो
करती रहती आनाकानी, चाँद मुझे दिलवा दो
चाँद गगन में दूर बहुत है, समझो गुड़िया रानी
आते आते धरती पर हो, जाये सुबह सुहानी
खाओ पहले एक चपाती, पीलो थोड़ा पानी
नींद अभी भर लो आंखों में, करो नही मनमानी
ममता की बाहों में घिरकर, सोई गुड़िया रानी
सपन सलोने आये फिर तो, खोई गुड़िया रानी
मिलने आये नील गगन से, चन्दा मामा प्यारे
किन्तु शिकायत करती गुड़िया, लाए नही सितारे
भूल गया मैं माफी दे दो, गुड़िया रानी प्यारी
लेकर के मैं आऊँगा कल, तारों भरी सवारी
बढ़ती जाती देख मांग को, चंदा भी घबराया
नील गगन पर ही था अच्छा, क्यूँ सपने में आया
रूठी मटकी बोली माँ से, गुड़िया सुबह सवेरे
चन्दा झगड़ा करता अच्छे
खेल खिलौने मेरे
भूल गयी थी अपनी जिद
को, भूली सब मनमानी
चहक रही थी घर आँगन
में, अब तो गुड़िया रानी

-- अनहद गुंजन

शिशु गीत

मेले चाचू की है छाटी,
जाऊंगा मैं तो बालाती
चाचू संग चढूंगा घोड़ी,
मस्ती करूंगा आज थोड़ी
ओ भाई तुम भी साथ चलो,
जरा मेले चाचू से मिलो
बने हैं आज ये तो दूल्हा,
मुखड़ा इनका है खिला-खिला

-- मेराज रजा

बाल कविता

नन्हें-नन्हें बालक हो, उपवन सा सलोने हो
आँगन की फुलवारी हो, मीठी सी मुस्कान हो
सबको मीठे बोल सुनाते
माता-पिता के आँख के तारे
बागों में खिले फूल हो
सबमें महक बिखेरे हो
इनके बिन सूना जग सारा
हैं ये तो जग प्यारा-प्यारा

-- बिजया लक्ष्मी

बाल कविताएं

सपनीले रंगों वाले हम, सपनों में खोए रहते।
सदा सजाए रखना सपने, प्रभु से हम हरदम कहते
प्रभु ने अच्छा मन दे डाला, सुमन हमारा नाम पड़ा।
हे प्रभु मन अच्छा ही रखना, होगा यह उपकार बड़ा
हम कोमल हैं रंगबिरंगे, हमसे ही दुनिया रंगीन
देते हम संदेश जगत को,
रहे न कोई भी गमगीन
हम ही तो सबको सिखलाते,
महक-महक जग को महकाओ
अनुशासित रह, परिश्रम करके,
धैर्य से जीवन में जय पाओ

-- लीला तिवानी

बड़का भैया गए मेला सज-धज तैयार
संग-संग भाभी जी हैं लेगी एक हार
छोटकू रह गया घर ही, पापा लिए नहीं साथ
रो-रो कर हाल बुरा है, हुई घर में बरसात
दादीजी खूब समझाए दे बहुत दुलार
छोटकू तो छोटकू है, करने लगा झमेला
ले चलो दादी मुझे देखूंगा मैं मेला
हुई हर बार दादी की कोशिश बेकार।

-- मेराज रजा

बाल कहानी

मिलावटखोर को सबक

कुमार गौरव अजीतेन्दु

गुटपुट खरगोश के दफ्तर में आज छुट्टी थी। वह घर में लेटा-लेटा बोर हो रहा था सो उसका मन कुछ बढ़िया खाने का हुआ। अपनी बीवी गप्पी से पूछा 'अजी, खीर बना सकती हो?' गप्पी प्यार से मुस्कुरा के बोली 'लो, बना क्यों नहीं सकती? बस चावल ले आओ खीर वाले, वही घर में नहीं हैं।'

बस फिर क्या था, गुटपुट ने झोला उठाया और चल पड़ा। पास में ही हुलहुल तोते की पंसारी की दुकान थी, वह वहाँ पहुँचा। 'भैया हुलहुल, आधे किलो चावल देना बासमती बढ़िया, खीर बनानी है।'

हुलहुल चहक उठा लो भई, अभी लो। उसने तुरंत तराजू पर चावल चढ़ाये और तौल-ताल के गुटपुट को पकड़ा दिया 'ये लो गुटपुट भाई अपने चावल, अस्सी रुपये किलो के हिसाब से चालीस रुपये हुए।'

गुटपुट ने चावल की पोटली ली और थैली में रखने लगा कि तभी उसे चावल में कुछ मिला हुआ दिखायी दिया। उसने जब पोटली खोल कर देखा तो समझ गया कि इस हुलहुल ने बेईमानी से उसमें कंकड़-पत्थर चावल के ही मिलते-जुलते रंग से रँग कर मिलावट कर रखी हैं पैसे ज्यादा कमाने के लिए। वह सोचने लगा कि इस बदमाश को सबक कैसे सिखाया जाये। तभी उसे अपनी जेब में रखे नकली नोटों की याद आयी जो उसने अपने बेटे मटका के खेलने के लिए खरीदे थे। उसकी आँखों में चमक आ गयी। उसने तुरंत उसमें से दस का एक नकली नोट निकाला और उनके साथ असली के तीस रुपये मिलाकर हुलहुल को दे दिये।

नोट हाथों में लेते ही हुलहुल पहचान गया कि एक दस का नोट नकली है क्योंकि वह एक तरफ से ही छपा था। उसने गुस्से में भर के गुटपुट को वह नोट लौटा दिया और बोला कि असली नोट दो भाई वर्ना थाने में शिकायत कर दूँगा, हाँ। गुटपुट ने तुरंत पोटली में से एक मुठ्ठी चावल निकाला और उसे दिखा के ठंडे मन से बोला 'हुलहुल जी, आपने मुझे असली और नकली चावल मिला कर दिये सो मैंने भी आपको असली और नकली नोट मिला के दे दिया, हिसाब बराबर, इसमें थाने जाने की क्या जरूरत? हाँ अगर जाना ही है तो आप थाने जायें और मैं उपभोक्ता अदालत में जाता हूँ आपकी शिकायत करने।'

इतना सुनते ही हुलहुल की तो हालत खराब हो गयी। वह समझ गया कि बच्चों के खिलौने वाले नकली नोटों के आधार पर गुटपुट तो जेल जाने से रहा लेकिन मिलावटी अनाज बेचने के अपराध में मैं जरूर अंदर हो जाऊँगा सो हाथ-पैर जोड़ने लगा- 'माफ कर दो भाई, अब दुबारा ऐसा नहीं करूँगा, बस इस बार छोड़ दो।'

गुटपुट बोला- 'ठीक है, अगर तुम्हें अपनी गलती का भान हो गया है तो क्षमा करता हूँ, लाओ अच्छे चावल अब मुझे।' 'हाँ-हाँ भाई, ये लो' कहकर हुलहुल ने तुरंत साफ नये चावल उसे तौलकर दे दिये। गुटपुट ने उसे पैसे दिये और हँसता हुआ अपने घर को लौट पड़ा, ताकि जल्द-से-जल्द वह खीर का आनंद उठा सके। ■

(पृष्ठ २७ का शेष) **धर्म अफीम है!**

में नहीं जायेंगे, ताकि उनको नशा न चढ़ जाये।

लेकिन बुरा हो राजनीति का। जब केवल रोजा अफ्तारों में भाग लेने से उनको जीतने लायक वोट नहीं मिले और बार-बार हारने लगे, तो वोट के लिए उन्हें झख मारकर जालीदार टोपी उतारकर फेंकनी पड़ी और मन्दिर-मन्दिर भटकना पड़ा। पहले वे जालीदार टोपी पहनकर एक समुदाय को मूर्ख बनाकर वोट लिया करते थे, अब मन्दिर-मन्दिर जाकर दूसरे समुदाय को मूर्ख बनाकर वोट बटोरना चाहते हैं। कोई आश्चर्य नहीं होगा यदि वह समुदाय मूर्ख बन भी जाये। इसका मतलब यह नहीं है कि अब धर्म अफीम नहीं रहा। इसका मतलब बस इतना है कि जब तक वोट मिल रहे हैं तब तक धर्म अफीम नहीं माना जाएगा, और जब वोट मिलना बन्द हो जायेंगे, तो वे फिर धर्म को अफीम मानने लगेंगे।

अब यह पूछकर बच्चों जैसी बात मत कीजिए कि वे किस धर्म को मानते हैं। सब जानते हैं कि वे केवल एक ही धर्म को मानते हैं, जिसका नाम है कुर्सी। इस कुर्सी के लिए वे सिर पर जालीदार टोपी पहनने से लेकर कोट के ऊपर जनेऊ लटकाने तक को तैयार हैं। गंगा गये तो गंगादास और जमुना गये तो जमुनादास! यही उनके लिए धर्मनिरपेक्षता का पैमाना है। अब आप इसे उनकी शर्मनिरपेक्षता कहते हैं, तो आपकी मर्जी। ■

बाल कहानी

वाणी पर संयम

आनन्द विश्वास

उस दिन देवम की कक्षा में टीचर पढ़ा रहीं थीं, कोई गम्भीर विषय चल रहा था। लेकिन पीछे दो छात्र आपस में बात करने में इतने तल्लीन थे कि वे भूल ही गये कि वे कक्षा में बैठे हैं। लगातार बातें करने के कारण पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न हो रहा था। एक दो बार टीचर ने उन्हें टोका भी, पर उनका वार्तालाप थोड़ी देर के लिए रुका और फिर चालू हो गया।

टीचर से न रहा गया, उन्होंने उन दोनों छात्रों को इंगित करते हुये कहा- 'बच्चो! आज मैं मानव शरीर के उन तीन अंगों के विषय में बताती हूँ, जो शिक्षा प्रक्रिया के आदान-प्रदान के मुख्य माध्यम होते हैं। यानि कि वे मानव अंग जो ज्ञान के आदान-प्रदान में काम आते हैं।'

उन्होंने बताया कि ईश्वर ने हमें तीन अंग दिये हैं जिनके माध्यम से हम ज्ञान प्राप्त करते हैं अथवा ज्ञान देते हैं और वे हैं, आँख, कान और मुँह।

भगवान ने हमें दो आँखें दी हैं और उनका काम केवल देखना है यानि कि चीजें दो और काम एक। और यदि आँखों में कुछ कमी हो तो उसकी सहायता के लिए चश्मे भी। दूसरा अंग है कान। कान दो और काम एक। सुनना और केवल सुनना। और यदि कुछ कमी हो तो सहायता के लिए वैज्ञानिक उपकरण भी।

और तीसरा अंग है मुँह, जिसकी सहायता के लिए न तो कोई वैज्ञानिक उपकरण है और न कोई दूसरा विकल्प। मुँह, एक और केवल एक, और काम दो। बोलना और खाना खाना। उसमें भी बोलने का काम जीभ करती है जिस पर ईश्वर ने बत्तीस पहरेदार बैठाये हुये हैं वे भी पत्थर के कठोर। बेचारी कोमल जीभ और पहरेदार पत्थर के। अगर जरा सा भी उल्टा-सीधा बोला तो समझो खैर नहीं।

यानी देखने और सुनने पर कोई अंकुश नहीं, जितना चाहो उतना देखो और सुनो। पर बोलने पर अंकुश। अर्थात् वाणी पर संयम। बहुत सोच समझकर बोलो। कुछ भी बोलने से पहले सौ-सौ बार सोचो और फिर बोलो। क्योंकि शब्द-बाण एक बार मुँह में से निकलने के बाद फिर कभी वापस नहीं आता। अर्थात् बिना सोचे समझे बोलना, विपत्ति-निमंत्रण और मूर्खता से कम नहीं। जीभ पर जब कोई घाव हो जाता है तो वह बहुत जल्दी ठीक हो जाता है। पर ध्यान रहे जीभ के द्वारा शब्दों से जो घाव होता है तो वह कभी भी नहीं भर पाता है।

आदमी मर जाता है लेकिन शब्द कभी भी नहीं मरता। शब्द सदैव आकाश में ही विद्यमान रहता है। और शब्द-बाण से आहत मन का घाव कभी भी नहीं भर पाता है। जीवन पर्यन्त नहीं।

बुद्धिमान व्यक्ति बोलने से पहले दस बार सोचते हैं, बोलने के बाद नहीं। और मूर्ख व्यक्ति पहले बोलते हैं और फिर सोचते हैं, अरे, मैंने यह क्या बोल दिया। पर बाद में अफसोस से क्या फायदा? अब आपको ही निर्णय करना है कि आप कौन हैं? बुद्धिमान या मूर्ख।

गाँधी जी ने भी तो इन्हीं तीन अंगों के कार्यों और महत्व को तीन बन्दरों के माध्यम से समझाया है। उनके अनुसार- बुरा न देखो, बुरा न सुनो और ना ही बुरा बोलो। यानि आँख, कान और मुँह। देखना, सुनना और बोलना। इन तीनों अंगों का सही उपयोग तो यही है कि अच्छा देखना, अच्छा सुनना और अच्छा बोलना।

आँख और कान के माध्यम से हम बाहर की वस्तुओं और शब्दों को देखते और सुनते हैं। जिनका मंथन मन में होता है। जिनका प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। जिनसे हमें जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। और बोलने से अन्दर की जानकारियाँ बाहर जाती हैं। आप जो जानते हैं वही बोल सकते हैं।

मैं आप से ही पूछती हूँ- आप क्या बोल सकते हैं? आप केवल वही बोल सकते हैं जो आप जानते हैं। यानि आप जो जानते हैं वो यहाँ बताने आते हैं या कुछ जानने और सीखने के लिए आते हैं?

और जानने का काम तो आँख और कान करते हैं। और इन्हीं दो अंगों के माध्यम से आदमी ज्ञान प्राप्त करता है। अतरू विद्यार्थियों को तो आँख और कान का ही अधिक उपयोग करना चाहिये। बोलने से ज्ञान प्राप्त नहीं होता। बोलने से तो आप अपना ज्ञान दूसरों को दे सकते हैं, प्राप्त नहीं कर सकते।

विशेषकर तो जो लोग कुछ सीखना या जानना चाहते हैं उन्हें तो कम से कम या ना के बराबर ही बोलना चाहिये। और जब छात्र कक्षा में बैठकर पढ़ाई के समय में बोले, बात-चीत करे, तो उसका क्या करना चाहिये? इससे तो वह न केवल अपना नुकसान कर रहा है वल्कि उसके कारण पूरी कक्षा की पढ़ाई का नुकसान होता है। क्या ऐसे छात्र दण्ड के अधिकारी नही हैं? क्यों न उन्हें कुछ दण्ड मिलना चाहिये?

टीचर इतना ही कह पाई थी कि घंटी बज गई। टीचर ने कहा- 'आगे मैं कल बताऊँगी।' और इतना कहकर टीचर अपना पर्स लेकर, दूसरी कक्षा में चली गईं। टीचर के जाते ही पूरी कक्षा में एक सन्नाटा छा गया। फिर कुछ छात्रों ने उन बातें करने वाले छात्रों को गलत बताया। और कहा कि कक्षा में इस प्रकार बात करने से सभी की पढाई का नुकसान होता है।

देवम ने भी उन दोनों छात्रों को कक्षा के बाहर बुलाकर समझाया और कहा कि यदि तुम अपना मन पढ़ने में नहीं लगाओगे और व्यर्थ की बातों में अपना समय बरबाद करोगे, तो तुम फेल भी हो सकते हो और तुम्हें स्कूल से निकाला भी जा सकता है। अपने भविष्य को बिगाड़कर तुम्हें कुछ नही मिलने वाला। इस कार्य के लिए तुम्हें टीचर से क्षमा माँगनी चाहिये। और अपना मन केवल पढने में लगाना चाहिये।

देवम की बात उन शैतान, बातूनी छात्रों को भी पसंद आई और उन्होंने कहा कि कल टीचर के कक्षा में आने पर क्षमा माँगेंगे और भविष्य में हम कभी भी कक्षा में बात नहीं करेंगे। और साथ ही यह भी कहा कि भविष्य में हम कभी भी कोई ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे अन्य छात्रों की पढ़ाई में कोई नुकसान हो।

दूसरे दिन तो बस सबका एक ही इंतजार था कि कब सातवाँ पीरियड आये और दोनों छात्र टीचर से माफी मागें। पर टीचर के आने पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ बल्कि टीचर ने आगे पढ़ाना शुरू कर दिया। सभी छात्र हैरान थे। सभी छात्र तो ये सोच रहे थे कि आज टीचर उन छात्रों को जरूर ही सजा देगी। सब छात्र एक दूसरे से पूछते। पर क्या हुआ, यह रहस्य ही बना रहा।

और फिर कुछ दिनों के बाद, पता नहीं कैसे, कहाँ से, जब छात्रों को असलियत का पता चला तो छात्रों के मन में देवम के प्रति अपार सम्मान उत्पन्न हो गया। सभी ने देवम के विवेक पूर्ण निर्णय की खूब प्रशंसा की।

हुआ यह कि जब दोनों छात्रों ने देवम के समझाने पर अपनी गलती को स्वीकार कर लिया तो देवम ने अकेले में टीचर से बात की और सारी घटना को बताया और कहा कि दौनों छात्रों ने अपनी गलती को मान लिया है। तो टीचर ने देवम से कहा- 'ठीक है, अब मैं कक्षा में किसी भी प्रकार की कोई चर्चा नहीं करूँगी और तुम उन छात्रों को समझा देना। और छात्रों को कह देना कि भविष्य में यदि इस प्रकार की कोई उद्दण्डता उन्होंने की तो उन्हें अवश्य दण्ड दिया जायेगा।'

इस प्रकार देवम ने उन छात्रों को सभी के सामने अपमानित होने से बचाया। और टीचर के द्वारा भी जब इस घटना की पुष्टि कर दी गई तो सभी छात्रों के मन में देवम के प्रति अपार श्रद्धा उत्पन्न हो गई। देवम के इस विवेकपूर्ण कार्य की सभी ने खूब प्रशंसा की। ■

लघुकथा

वृद्धाश्रम

उस घर से आये दिन सास बहू के जोर जोर से झगड़ने की आवाजें आती थी। बहू अपनी मां की सीख के मुताबिक सास को घर से बाहर निकलवाने पर आमादा थी। अंततः सास बहू के रोज रोज के झगड़े से आजिज आ चुके बेटे ने बहू की जिद्द के आगे हथियार डालते हुए माँ को वृद्धाश्रम में रहने के लिए मना लिया। माताजी के वृद्धाश्रम चले जाने के बाद उत्साहित बहू यह खुशखबरी अपनी माताजी को देने मैके जा पहुंची। घर में प्रवेश करते ही अपनी नाक सिकोड़ते हुए उसकी भाभी ने उसका स्वागत किया। उसकी तरफ ध्यान न देते हुए बहू ने पुछा 'भाभी! माँ कहाँ है? नहीं दिख रही हैं।'

भाभी ने कहा 'तुम्हारे भैया ने तुम्हें बताया नहीं? वो तो पिछले सप्ताह से ही वृद्धाश्रम में रहती हैं।'

-- राजकुमार कांदु

मूर्तिपूजा पर ऋषि दयानन्द का काशी शास्त्रार्थ

मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में जो महान् कार्य किए उनमें से एक काशी के दुर्गाकुण्ड स्थित आनन्द बाग में लगभग ५०-६० हजार लोगों की उपस्थिति में 'मूर्तिपूजा वेदसम्मत नहीं है' विषय पर उनका शास्त्रार्थ भी था जिसमें स्वामी जी विजयी हुए थे। यह शास्त्रार्थ आज से १४८ वर्ष पूर्व १६ नवम्बर, १८६९ को हुआ था। इस शास्त्रार्थ में दर्शकों में दो पादरी भी उपस्थित थे। जिले के अंग्रेज कलेक्टर शास्त्रार्थ का आयोजन रविवार को कराने के इच्छुक थे जिससे वह भी इस शास्त्रार्थ में उपस्थित रह सके। किन्तु उनके आने से पण्डित कानून हाथ में लेकर अव्यवस्था व मनमानी नहीं कर सकते थे, अतः काशी नरेश श्री ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह ने इसे मंगलवार को आयोजित किया था।

काशी के सनातनी पौराणिक पण्डितों को यद्यपि इस शास्त्रार्थ में मूर्तिपूजा को वेदसम्मत सिद्ध करना था परन्तु पौराणिकों की वेद में गति न होने और मूर्तिपूजा का वेदों में कहीं विधान न होने के कारण वह शास्त्रार्थ में वेदों व प्रमाणिक ग्रन्थों का कोई प्रमाण नहीं दे सके थे। वह विषय को बदलते हुए विषयान्तर की बातें करते रहे। यह शास्त्रार्थ सायं ४ से ७ बजे तक लगभग ३ घंटे हुआ था। इतिहास में ऐसा उदाहरण नहीं मिलता कि स्वामी दयानन्द ने पूर्व कभी किसी विद्वान ने मूर्तिपूजा के वेद सम्मत न होने पर शंका वा विश्वास किया हो। महाभारत काल के बाद वह पहले व्यक्ति ही थे जिन्होंने मूर्तिपूजा का खण्डन करने के साथ उसे वेद विरुद्ध घोषित किया था। स्वामी शंकराचार्य जी की पुस्तक विवेक चूड़ामणि में भी ईश्वर के सर्वव्यापक व निराकार स्वरूप का वर्णन किया गया है परन्तु उसमें मूर्तिपूजा के वेदसम्मत होने या न होने पर शंका नहीं की गई है और न किसी को शास्त्रार्थ की चुनौती ही दी गई है।

ऋषि दयानन्द को परमात्मा से अति उच्च कोटि की परिमार्जित दिव्य बुद्धि व विवेक प्राप्त हुआ था। उन्होंने न केवल मूर्तिपूजा को अवैदिक घोषित कर उसका खण्डन किया अपितु देश की उन्नति में सर्वाधिक बाधक, देश के पराभव, पराधीनता एवं सभी बुराईयों का कारण मूर्तिपूजा को ही माना है। उनके अनुसार ईश्वर पूजा के स्थान पर मूर्तिपूजा ईश्वर प्राप्ति का साधन नहीं है अपितु यह एक ऐसी गहरी खाई है कि जिसमें मूर्तिपूजक गिरकर नष्ट हो जाता है। यह ज्ञातव्य है कि कोई भी कार्य यदि विधि पूर्वक न किया जाये और साधक को इष्ट देव का सच्चा स्वरूप व प्राप्ति की विधि ज्ञात न हो तो वह कभी ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता।

यह आश्चर्य की बात है कि भारत में उपासना के लिए योग और सांख्य दर्शन जैसे ग्रन्थ होते हुए काशी के शीर्ष विद्वान भी मूर्तिपूजा का समर्थन करते थे और स्वयं भी ईश्वर के यथार्थ गुणों के आधार पर यम-नियम का पालन तथा धारणा एव ध्यान न करते हुए पाषाण व धातुओं की बनी हुई मूर्तियों को धूप व नैवेद्य देकर ईश्वर पूजा की इतिश्री समझते थे। यह उनकी घोर अविद्या थी। आज भी हमारे पौराणिक भाई मूर्तिपूजा करते हैं। उनके विवेकहीन अनुयायी भी उनका अनुकरण करते हुए विधिहीन तरीके से पूजा करके ईश्वर के पास जाने के स्थान पर उससे दूर हो जाते हैं जिसकी हानि उन्हें इस जन्म व भावी जन्मों में उठानी पड़ती है। जो भी मनुष्य मूर्तिपूजा करेगा वह भी इससे होने वाली हानियों को उठायेगा। इसका उल्लेख ऋषि दयानन्द ने अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में मूर्तिपूजा में सोलह प्रकार के दोषों को सप्रमाण व तर्क के साथ किया है।

मूर्तिपूजा पर स्वामी दयानन्द जी के कुछ विचारों की चर्चा भी कर लेते हैं। उनके अनुसार मूर्तिपूजा का आरम्भ जैन मत से हुआ। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं कि जैनियों ने मूर्तिपूजा अपनी मूर्खता से चलाई। जैनियों की ओर से वह एक कल्पित प्रश्न प्रस्तुत करते हैं कि शान्त ध्यानावस्थित बैठी हुई मूर्ति देखकर अपने जीव वा आत्मा का भी शुभ परिणाम वैसा ही होता है। इसका उत्तर देते हुए स्वामी दयानन्द जी कहते हैं कि आत्मा वा जीव चेतन और मूर्ति जड़ गुण वाली है। क्या मूर्ति की पूजा करने से जीवात्मा भी अपने ज्ञान आदि गुणों से क्षीण व शून्य होकर जड़ हो जायेगा? स्वामी जी कहते हैं कि मूर्तिपूजा केवल पाखण्ड मत है तथा मूर्तिपूजा जैनियों ने चलाई है। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में चौदह समुल्लास लिखे हैं। बारहवां समुल्लास जैन मत की मान्यताओं की समीक्षा पर लिखा है। उस समुल्लास में भी स्वामीजी ने जैन मत की मूर्तिपूजा विषयक मान्यताओं का सप्रमाण खण्डन किया है।

मूर्तिपूजा का खण्डन करते हुए स्वामीजी अनेक प्रबल तर्क देते हैं। वह कहते हैं कि जब परमेश्वर निराकार, सर्वव्यापक है तब उस की मूर्ति ही नहीं बन सकती और जो मूर्ति के दर्शनमात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर के बनाये पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ, जिन में ईश्वर ने अद्भुत रचना की है, क्या ऐसी रचनायुक्त पृथिवी, पहाड़ आदि परमेश्वर रचित महामूर्तियां कि जिन पहाड़ आदि से वे मनुष्यकृत मूर्तियां बनती हैं, उन को देखकर परमेश्वर का स्मरण नहीं हो सकता? जो मूर्तिपूजक कहते हैं कि मूर्ति के दखने से परमेश्वर का स्मरण होता है, उनका यह कथन सर्वथा मिथ्या है, इसलिए कि जब वह मूर्ति उनके सामने न होगी तो परमेश्वर के स्मरण न होने से वह मनुष्य एकान्त पाकर चोरी, जारी आदि कुकर्म करने में प्रवृत्त भी हो सकते हैं। क्योंकि वह जानते हैं कि इस समय यहां उन्हें कोई नहीं देखता। इसलिए मूर्तिपूजक अनर्थ करे बिना नहीं चूकता। ऐसे अनेक दोष पाषाणादि मूर्तिपूजा करने से सिद्ध होते हैं।

यह भी बता दें कि काशी शास्त्रार्थ से पूर्व वहां के शीर्ष विद्वान पण्डितों ने अपने शिष्य व विद्वानों को स्वामी दयानन्द जी की विद्या की परीक्षा वा जानकारी लेने के लिए गुप्त रूप से उनके पास भेजा था। यह विद्वान थे रामशास्त्री, दामोदर शास्त्री, बालशास्त्री और पं. राजाराम शास्त्री आदि। ये विद्वान स्वामी जी के पास उनका शास्त्रीय ज्ञान का स्तर जानने के लिए आये थे। काशी के पण्डित अपने पक्ष की निर्बलता को जानते थे। इसलिए वे राजा ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह के कहने पर भी शास्त्रार्थ के लिए उत्साहित नहीं हो रहे थे। इस कारण राजा ने उन्हें प्रत्यक्ष रूप से स्वामी दयानन्द जी से शास्त्रार्थ करने के निर्देश व आज्ञा दी थी। राजा जी ने मूर्तिपूजा से उन्हें प्राप्त होने वाली सुख सुविधाओं व धन वैभव का भी हवाला भी दिया था।

यह भी ज्ञातव्य है कि स्वामी जी के वेद प्रचार व मूर्तिपूजा के खण्डन से काशी के लोग बड़ी संख्या में प्रभावित हो रहे थे और मूर्तिपूजा करना छोड़ रहे थे। इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी काशी नरेश व पण्डितों पर पड़ रहा था परन्तु मूर्तिपूजा के पक्ष में शास्त्रीय प्रमाण न होने के कारण वे किंकर्तव्यविमूढ़ बने हुए थे। काशी के प्रमुख पण्डित पं. बाल शास्त्री आदि ने अपने शिष्यों पं. शालिग्राम शास्त्री, पं. ढुंढिराज शास्त्री धर्माधिकारी, पं. दामोदर शास्त्री तथा पं. रामकृष्ण शास्त्री आदि को स्वामी जी के निकट भेजकर स्वामी जी द्वारा मान्य प्रमाणिक ग्रन्थों की सूची लाने के लिए भेजा था। बाद में काशी नरेश ने अनुरोध किया और पुलिस कोतवाल पं. रघुनाथ प्रसाद ने मध्यस्थता की तो स्वामी जी ने अपने द्वारा मान्य प्रामाणिक ग्रन्थों की सूची स्वहस्ताक्षर सहित उन्हें दे दी। उनके द्वारा उस समय जो २१ शास्त्र प्रमाण कोटि में स्वीकार किये गये वे थे चार वेद संहिताएं, चार उपवेद, वेदों के ६ अंग, ६ उपांग तथा प्रक्षिप्त श्लोकों को छोड़कर मनुस्मृति।

शास्त्रार्थ के दिन स्वामी दयानन्द जी के एक भक्त पं. बलदेव प्रसाद शुक्ल ने स्वामी जी से कहा कि महाराज, यह काशी नगरी गुणों का घर है। यदि यह शास्त्रार्थ फर्रूखाबाद में होता तो वहां आपके दस बीस भक्त और अनुयायी सामने आते परन्तु यहां काशी में तो आपको शत्रुओं के शिविर में जाकर रण कौशल दिखाना होगा। दृढ़ व अपूर्व ईश्वर विश्वासी स्वामी दयानन्द का पं. बलदेव जी को उत्तर था- बलदेव! डर क्या है? एक ईश्वर है, एक मैं हूं, एक धर्म है, और कौन है? सत्य का सूर्य प्रबल अज्ञान और अविद्या के अंधकार पर अकेला ही विजयी होता है। अपने अटल ईश्वरविश्वास के बल पर ही दयानन्द जी ने जड़ उपासना के प्रतीक दृढ़ दुर्ग काशी को अकेले ही भेदने का निश्चय किया था।

शास्त्रार्थ के दिन स्वामी जी ने क्षौर कर्म कराया था, उसके बाद स्नान किया, शरीर पर मृत्तिका धारण की, इसके बाद पद्मासन लगाकर देर तक परमेश्वर का ध्यान किया। इसके बाद उन्होंने भोजन किया। भोजन के

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

(दूसरा और अंतिम भाग)

आसमान भी रोता होगा

कल्पना रामानी

'देखो सुविधा मर्द ना तो बच्चे को गर्भ में रखता है, ना ही दूध पिलाता है, वह शारीरिक रूप से भी औरत की अपेक्षा अधिक मजबूत होता है, तो यदि वह बाहर के काम या नौकरी करे, तो यहाँ किसी गुलामी या जुल्म की बात कहाँ से आ जाएगी. यह तो पति-पत्नी के बीच आपसी समझौता है, जिसका पालन करके दोनों पारिवारिक सुख का अनुभव करते हुई सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं.

'पर सुधीर, यहाँ सब नौकरीपेशा माँ-पिता के बच्चे बेबी केयर सेंटर में पल रहे है, हम भी सुजान को वहीं भरती कर देंगे. वह सेंटर मेरी कालेज के दिनों की मित्र तारा द्विवेदी का है. मैंने पूरी तरह जाँच-पड़ताल कर ली है. सुजान की वह अपने बच्चे जैसी ही देखभाल करेगी.

'जब मातृत्व ही मतलब परस्त हो तो पितृत्व कर भी क्या सकता है लेकिन एक दिन तुम जरूर पछताओगी.' सुधीर ने उसके जवाब से आहत होकर सुविधा के आगे हथियार डाल दिए थे.

अब तो परिस्थिति ही ऐसी बन गई थी कि सुविधा के पास अपनी हार मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था. उसने सुधीर को अपने आने की सूचना देकर इंदौर से मुंबई जाने वाली गाड़ी दुरंतो के तत्काल कोटे में अपना आरक्षण करवाया और मुम्बई पहुँच गई. उस दिन रविवार था तो सुधीर उसे लेने स्टेशन पर आ गया था. सुविधा को गुमसुम और उदास देखकर सुजान को अपनी गोद में लेकर प्यार करते हुए सुधीर ने पूछ लिया- 'क्या बात है सुविधा, कुछ परेशान लग रही हो?'

'मैं सचमुच बहुत परेशान हूँ सुधीर, घर चलकर सब बताती हूँ.' घर पहुँचकर सुधीर ने फिर वही सवाल किया तो सुविधा की आँखों से आँसू झरने लगे. उसने बुझे-बुझे शब्दों में सारी बातें विस्तार से बताकर कहा- 'सुधीर प्लीज अब मुझे और शर्मिंदा मत करना, मैं अपनी गलती स्वीकार करती हूँ, मैं नौकरी से इस्तीफा दे दूँगी. अब हमें इस सिटिंग सेंटर के खिलाफ रिपोर्ट लिखवानी होगी, वहाँ कोई भी बच्चा सुरक्षित नहीं है. तारा ने मेरे साथ विश्वासघात किया है, मैं उसे कभी माफ नहीं करूँगी.'

'सुविधा, तुमने शायद कल शाम का और आज का अखबार नहीं पढ़ा होगा, लो पढ़ो, तब तक मैं तुम्हारे लिए चाय बनाता हूँ. कहते हुए सुधीर ने दोनों दिन के अखबार उसके आगे रख दिये और किचन में चला गया.

कल वाले अखबार के मुखपृष्ठ की सुर्खियों पर नजर पड़ते ही सुविधा के तो जैसे प्राण ही सूख गए, एक सदमे से अभी उभरी भी नहीं थी कि फिर यह झटका.

वह पथराई आँखों से समाचार पढ़ने लगी. लिखा था- 'तारा देवी बेबी सिटिंग सेंटर की मालकिन तारा देवी के दो वर्षीय पुत्र की देर रात को संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु. बच्चे को कल रात गहन चिकित्सा कक्ष में भर्ती किया गया था. बच्चे का शव पोस्ट मार्टम के लिए भेज दिया गया है.'

सुविधा ने काँपते हाथों से दूसरा अखबार खोला और पढ़ा तो उसकी जैसे साँसें ही थम गईं. लिखा था- 'शिशु की पोस्ट मार्टम रिपोर्ट में उसके रक्त में नशे की दवा पाई गई. तारादेवी का बयान नहीं लिया जा सका. वे बेटे की दर्दनाक मृत्यु का सदमा बर्दाश्त न कर सकने के कारण अपना मानसिक संतुलन खो बैठी हैं. सिटिंग सेंटर पर ताला लगा हुआ देखकर पुलिस ने आसपास के लोगों से जानकारी लेकर तारादेवी की पार्टनर अल्पना रावत से उसके घर पर संपर्क किया.

पूछताछ में उसने दुखी मन से बताया- 'परसों दोपहर लगभग एक बजे तारा उसे अपना बच्चा यह कहकर सौंप गई थी कि उसे एक जरूरी मीटिंग में जाना है, वहाँ दो तीन घंटे लग सकते हैं, तब तक शिशु को बहलाते रहना है, सुलाना नहीं है. सेंटर के बाकी बच्चों को नियमानुसार इस समय सुला दिया जाता है, पर तारा अपने बच्चे को उनके जागने पर ही सुलाती है ताकि वह अपने बच्चे के साथ समय बिता सके. उनके जाते ही मेरे घर से अचानक फोन आ गया कि मेरी सासू माँ पैर फिसलने से अचानक गिर गई हैं, पैर में मोच आ जाने के कारण उन्हें ससुर जी को अस्पताल लेकर जाना पड़ेगा, अतः बच्चे को सँभालने के लिए शीघ्र घर आ जाओ. मेरी यहाँ भी जवाबदारी थी, अतः मैंने अपने बच्चे को यहीं लेकर आना उचित समझा.

उस समय सेंटर में काम करने वाली लड़कियाँ भी भोजन के लिए घर जा चुकी थीं और वहाँ केवल ऊपर के काम सँभालने वाली महिला विमला बाई ही थी, अतः एक घंटे में वापस आने और तब तक शिशु को न सुलाने की हिदायत देकर मैंने बच्चा उसे सौंप दिया. घर से वापस आई तो देखा, बच्चा गहरी नींद सो चुका था. मैंने घबराकर कठोरता से विमला बाई से निर्देश का पालन न करने का कारण पूछा, तो उसने बताया- 'क्या करती बीबीजी, बच्चा आपके जाने के बाद एकदम रोने लगा और उसे चुप न होते देखकर मुझे याद आया कि तारा बीबीजी बच्चों को शहद चटाकर सुलाती हैं, तो मैंने भी उसे शहद चटाकर सुला दिया.'

फिर जब शिशु सभी बच्चों के जागने के बाद भी नहीं जागा और उसे जगाने की मेरी सारी कोशिश व्यर्थ गई तो तारा को फोन पर सूचित कर दिया. तारा तुरंत मीटिंग छोड़कर आ गई और सेंटर के डॉक्टर को बुला लाई. डॉक्टर ने शिशु की हालत गंभीर बताकर तुरंत अस्पताल ले जाने को कहा. इसके बाद जो हुआ आप जानते ही हैं. कहते हुए अल्पना अपने गीले नेत्र पोंछने लगी.

उसके बाद पुलिस ने विमला बाई से संपर्क करके उसका बयान लिया तो उसने भी वही सारी बातें दोहराईं. पुलिस दोनों को लेकर सेंटर पहुँची और अल्पना से सेंटर का ताला खुलवाकर वह शहद की शीशी जब्त करके जाँच के लिए भेज दी. जाँच की रिपोर्ट से स्पष्ट हो गया कि शहद में नशे की दवा मिली हुई है. शायद अधिक मात्रा में देने से ही शिशु की जान चली गई. इसके बाद सेंटर को सील कर दिया गया है और पुलिस को तारादेवी के सामान्य स्थिति में आने का इंतजार है, ताकि उसका बयान लिया जा सके.

सुविधा ने साँस रोककर यह दिल दहला देने वाला समाचार पढ़ा और खोई नजरों से शून्य में ताकने लगी. सुधीर चाय ले आया था और उसे तसल्ली देकर पीने के लिए कहा, 'यह तो गजब हो गया सुधीर, बच्चे का क्या दोष था जो उसके साथ ऐसा हुआ?'

'यह तारा को उसके किये की सजा मिली है सुविधा, यह बच्चा किसी का भी हो सकता था, हमारा भी. हाँ शिशु की मौत का मुझे गहरा अफसोस है.'

आसमान से टूटकर गिरते विलुप्त होते सितारों को देखकर इंसान का मन चाहे द्रवित न भी होता हो, लेकिन इंसानों की गोद में इस तरह दम तोड़ते सितारों के हश्र पर आसमान भी रोता होगा. अगर फिर भी ऐसी दुर्घटनाओं से सबक लेकर कामकाजी महिलाओं में जागरूकता नहीं आई, तो इस देश के सितारे इसी तरह टूटते, बिखरते और दम तोड़ते रहेंगे. (समाप्त)

खट्टा-मीठा

धर्म अफीम है!

बीजू ब्रजवासी

बाबा कार्ल मार्क्स बहुत पहले लिखकर रख गये हैं कि धर्म अफीम है। हमारे कामरेड भाई इस मंत्र को दिन में दस बार दोहराते रहते हैं। यह बात अलग है कि दोहराने के साथ ही इसका अर्थ भूल जाते हैं और फिर जालीदार टोपी पहनकर रोजा अफ्तार करने चल देते हैं। कई कामरेड तो इस मंत्र का जाप करते हुए हज करने भी जा चुके हैं।

लेकिन वे मन्दिरों में नहीं जाते यह पक्का है। इसके दो कारण हैं- एक तो यह कि हिन्दू धर्म की अफीम का नशा अधिक गहरा होता है। दूसरा यह कि उनको लड़की नहीं छेड़नी है, क्योंकि हिन्दू मंदिरों में लोग लड़की छेड़ने ही जाते हैं।

लड़की छेड़ने का यह ज्ञान हमें राहुल बाबा ने दिया था। इसलिए उन्होंने कसम खा रखी थी कि जालीदार टोपी भले ही पहन लेंगे, लेकिन कभी मन्दिरों

(शेष पृष्ठ २४ पर)

विंडो सीट

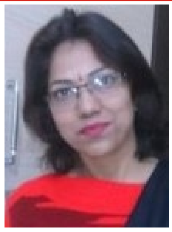

अंजु गुप्ता

गर्मियों की छुट्टियों के समय कन्फर्म सीट मिलना कोई आसान बात न थी। भतीजी की सगाई एकदम से तय हो गयी थी, सो जाना भी जरूरी था। विनय को ऑफिस से छुट्टी न मिल पायी थी। एक-दो दिन में आने का वायदा करके उसने सुरभि को जयपुर से चलने वाली जयपुर-चेन्नई एक्सप्रेस में बिठाया और साथ ही हिदायतों का पिटारा भी खोल दिया- 'ध्यान से जाना। रास्ते में किसी से अनावश्यक बात न करना। अपना ख्याल रखना। कोई भी दिक्कत हो तो फोन कर देना! वगैरा-वगैरा...।'

शादी के बाद सुरभि इससे पहले कभी भी अकेली नहीं गयी थी। जहाँ भी जाना होता था दोनों साथ ही जाते थे, इसलिए अपनी जगह विनय की चिंता भी जायज थी। ट्रेन चलने के समय तक वो सुरभि को हिदायतें देता रहा। उसका प्यार उसकी हिदायतों में पूरी तरह से झलक रहा था। गाड़ी चलने पर, सुरभि भी खिड़की में से बच्चों की तरह तब तक उसे देखती रही जब तक कि विनय आँखों से ओझल नहीं हो गया।

ट्रेन चलने के साथ ही सुरभि ने आसपास का जायका लिया। इक्का-दुक्का सीटों को छोड़, सारी सीटें भरी हुई थीं। उसके साथ वाली सीट अभी खाली थी। शायद वो सहयात्री अगले स्टेशन से चढ़ने वाला था। हमेशा की तरह, वो किताब खोलकर बैठ गयी। आसपास के लोग भी अपने सामान लगाने, गप्पें मारने इत्यादि में व्यस्त हो गये थे। जल्दी ही अगला स्टेशन आ गया था। 'दुर्गापुरा' में गाड़ी सिर्फ दो मिनट ही रुकती है। इसलिए ट्रेन पकड़ने की आपाधापी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।

'आप शायद मेरी सीट पर बैठी हैं।' इस आवाज और वाक्यांश को सुनकर उसका दिल धक से रह गया। घबराते हुए उसने नजरें उठा कर देखा तो आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा। सामने समीर था... वो समीर, जो कभी उसकी जिंदगी था, जिससे कभी उसने बेइंतहा प्यार किया था और फिर बेइंतहा नफरत भी, आज फिर उसके सामने था। आज भी वही दिलकश आवाज और वैसा ही व्यक्तित्व। 'तुम' सुरभि के मुँह से अनायास ही निकला गया। दिल लगभग दस वर्ष पीछे पहुँच गया। मानो कल की ही बात हो

समीर से उसकी पहली मुलाकात ट्रेन में ही हुई थी। वह सहेली की शादी में शामिल होने चंडीगढ़ जा रही थी और समीर छुट्टियाँ काटकर वापिस अम्बाला अपनी ड्यूटी जॉइन करने। दिल्ली-चंडीगढ़ शताब्दी की विंडो सीट पर बैठ, किताब खोलकर बैठी ही थी कि इक बेहद आकर्षक आवाज सुनाई दी- 'आप मेरी सीट पर बैठीं हैं। क्या आप...।' नजर मिलते ही देखा इक खूबसूरत सा नवयुवक सामने खड़ा था। आवाज के साथ-साथ उसका मोहक व्यक्तित्व और विंडो सीट का लालच... सुरभि को समझ ही नहीं आया कि क्या बोले। उसकी उलझन समझ वो हँसकर बोला 'विंडो सीट पर बैठना है? चलिए, मैं आपकी सीट पर बैठ जाता हूँ।' उसके बाद उसने जो बोलना शुरू किया... अम्बाला तक का सफर कब कट गया, पता ही न चला। स्टेशन पर उतरने से पहले उसने उसे अपना नंबर दिया और बहुत ही आत्मविश्वास से 'जल्दी ही मिलने आऊँगा' कहकर विदा ली। सुरभि ने भी हँसकर कहा- 'बिन फोन नम्बर और अड्रेस के ढूँढ़कर दिखाओ तो मान जायेंगे।' समीर की बातें, उसका चेहरा, मोहक मुस्कान सुरभि का दिल तो मानो उसके पास ही रह गया था। उस हसीन मुलाकात को याद करके, हर पल उसका मन करता था कि समीर को फोन करे, पर अपना ही दिया हुआ चेलेंज भी याद आ जाता था कि 'बिन मेरे फोन नम्बर और अड्रेस के ढूँढ़कर दिखाओ तो मान जायेंगे।'

टेक्नोलॉजी की इस दुनिया में कुछ भी नामुमकिन नहीं है और वो तो आर्मी का स्मार्ट ऑफीसर था। तीसरे ही दिन फेसबुक पर फ्रेंड रिक्वेस्ट आयी हुई थी, जिसे देखकर सुरभि के अधरों पर मुस्कान फैल गयी जैसे कि मन की मुराद पूरी हो गयी हो। फोन पर बातों का सिलसिला कब शुरू हुआ, पता ही न चला। जब भी मुमकिन होता, समीर उससे मिलने दिल्ली आ जाता था। बातों में पूरा दिन कब गुजर जाता था, पता ही न चलता था। बातों-मुलाकातों के साथ-साथ वादों का दौर भी शुरू हो चुका था। समीर के घर वाले थोड़े पुराने विचारों के थे और इस बात से सुरभि को थोड़ा डर भी लगता था। इस पर वो अक्सर कहता था- 'अगर घर वाले न माने, तो भगाकर ले जाऊँगा।' इस बात पर शरमाकर सुरभि हर बार यही बात कहती- 'आऊँगी तो डोली में चढ़कर ही' और इस बात पर वो दोनों हँस पड़ते थे। लगभग दो साल का वक्त यूँ ही कट गया।

समीर की अगली पोस्टिंग चेन्नई हो गई थी। वहाँ जाकर शुरू में तो उन दोनों में लगभग रोज ही बात होती थी। पर वक्त के साथ मुलाकातों का सफर तो रुक ही गया था, साथ ही बातें भी कम होने लगीं थीं। रोजाना होने वालीं बातें, पहले हफ्तों में, फिर महीनों में बदल गयीं। बात होती भी थी तो सुरभि को लगता था कि कुछ तो है जो समीर छुपा रहा है। कॉलों और मेसेज का जबाब न देना तो जैसे उसकी आदत बन गयी थी। हर बार यही कहता कि काम की अधिकता की वजह से वो परेशान है। मन में अजब सी बेचैनी रहती थी, दिमाग उसकी बातों पर यकीन न करने को कहता। पर दिल... दिल के आगे तो दिमाग कमजोर पड़ ही जाता है। फिर काफी महीनों के अंतराल के बाद उसे समीर का एक मैसेज मिला, जिसने सुरभि की पूरी जिंदगी ही बदल दी। उसमें लिखा था- 'सुरभि, हो सके तो मुझे भूल जाना। तुम एक बहुत ही अच्छी लड़की हो। पर शायद हमारा सफर इतना ही था। मुझे फोन न करना। मैंने सुमन से शादी कर ली है।'

सुमन, समीर के कॉलेज की दोस्त थी जो उससे इकतरफा प्यार करती थी। उसे उन दोनों के रिश्ते के बारे में सबकुछ पता था और वो कई बार दोनों से मिली भी थी। सुरभि को यकीन ही न हुआ कि एक लड़की दूसरी लड़की के साथ ऐसा कैसे कर सकती है? पर वो सुमन को क्या दोष देती, उसने तो अपना प्यार पा लिया था। जिस इंसान से सुरभि ने प्यार किया था और जिससे वह लगभग तीन सालों से प्यार के बँधन में बंध चुकी थी, वो ऐसा कैसे कर सकता था। न कोई लड़ाई, न शिकवा, न शिकायत, बस इक फैसला सुना दिया गया और एक ऐसा फैसला जिसके खिलाफ कोई सुनवाई नहीं। समीर ने ऐसा क्यों किया, ये जानने की अब उसकी इच्छा भी न थी। चलो इतना तो था कि समीर ने उसे हकीकत बता दी थी, वरना न जाने कब तक इक झूठी उम्मीद का दामन थामे वो उसका इंतजार करती। शादी तो समीर ने भागकर ही की थी। बस लड़की बदल गयी थी।

सुरभि का दिल पूरी तरह से टूट चुका था। दिल के घाव भरने के लिए उसने सारा ध्यान पढ़ाई में लगा दिया। धीरे-धीरे समय के साथ समझौता भी कर लिया। जब विनय का रिश्ता आया तो उसे इनकार करने की कोई वजह न थी। धीरे-धीरे कब विनय के प्यार, घर की जिम्मेदारियों तले ये सब बातें भूल ही गयी, उसे खुद भी पता ही न चला।

आज वही समीर फिर आँखों के सामने था। सुरभि को समझ ही न आ रहा था कि क्या बोले, बात करे भी या न करे। शुरुआत फिर समीर ने ही की- 'लगता है तुम्हें आज भी विंडो सीट उतनी ही प्यारी है। यकीन ही नहीं हो रहा था कि इतने सालों बाद हम उसी तरह मिले हैं।' और हँस दिया।

सुरभि की आँखों में अजनबीपन देख कर बोला- 'अरे... पहचाना नहीं। मैं वही... तुम्हारा समीर। दस सालों में सब भूल गयी क्या? वैसे मेरा व्यक्तित्व ऐसा नहीं कि कोई मुझे भूल सके।' उसकी गर्वमिश्रित, आत्ममुग्ध आवाज में, हावभाव में, किसी भी तरह का पछतावा नहीं था।

इससे पहले कि सुरभि कुछ जबाब दे पाती, उसी समय मोबाइल पर विनय का फोन आ गया। विनय को शायद अभी भी सुरभि की फिक्र हो रही थी। उसे समझाते हुए और अपना आत्मविश्वास वापिस पाते हुए सुरभि बस इतना ही बोली- 'जानू, फिक्र न करो। ध्यान है मुझे, किसी भी अजनबी से बात नहीं करूँगी।' फिर कुछ इधर-उधर की बातें करके उसने फोन रख दिया।

शायद अब शिकवे-शिकायत का वक्त गुजर चुका था। इससे पहले समीर कुछ और कहता आवाज को

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

(चौथी किस्त)

छोटी अम्मा की बेटी

सुधीर मौर्य

संजीवन काका मेरी मनोस्थिति समझ रहे थे इसलिए मेरे बिना किसी सवाल के कहा- 'बेटा तपस्वी, तुम्हारे पिताजी गुड़िया की वजह से बहुत परेशान हैं।'

'कौन गुड़िया?' गुड़िया नाम से मेरा सवाल बिल्कुल जायज था क्योंकि मैं जानता था मेरे पूरे खानदान और रिश्तेदारी में किसी भी लड़की का असली या प्यार का नाम गुड़िया नहीं था।

'तुम्हारी छोटी अम्मा की बेटी।' काका के उत्तर ने धमनियों में बहते मेरे रक्त का प्रवाह तेज कर दिया था।

और फिर संजीवन काका ने मुझे जो बताया उसे सुनकर मुझे लगा मानो, मेरे पांव के नीचे की जमीन खिसक गई हो। उनकी कोठरी से थके पाँव चलकर अपने कमरे में मैं यूँ लेट गया मानो मै महीनों से बीमार रहा हूँ। पिताजी के परेशान रहने का राज मेरे दिमाग के सामने खुल गया था। यह राज जानकर जब मैं इतना छटपटा रहा था तो पिताजी कितने छटपटाते होंगे, यह सोचकर मेरा सर फटने लगा था।

छोटी अम्मा की बेटी अब जवान होने की राह पर थी। भले ही छोटी अम्मा तवायफ हो पर पिताजी ने उनसे सच्चा प्रेम किया था। गुड़िया उसी प्रेम की निशानी थी। पिताजी नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी कोठे पर नाचे गाये। कोई भी पिता नहीं चाहेगा उसकी बेटी ऐसा काम करे। पिताजी की परेशानी का सबब यही था। छोटी अम्मा अपनी बेटी के साथ कोठे पे रहती थी और बहुत जल्द ही उस कोठे के नियमों के अनुसार उनकी बेटी के पाँव में घुंघरू बंधने वाले थे।

छोटी अम्मा ने खुद से और गुड़िया से मिलने से पिताजी को रोका नहीं था, पर वह पिताजी से कहती थी कि तुम्हारी हवेली और कथित सभ्य समाज से यह कोठा बेहतर है। यहाँ फिर भी हमारी कोई इज्जत है, पर इसके बाहर तुम्हारा समाज हमें गालियां देकर जीने नहीं देगा। पिताजी ने जब छोटी अम्मा से कहा कि वह गुड़िया को कोठे की जिंदगी से दूर कर दे, तो छोटी अम्मा ने हंसकर कहा- 'उससे क्या होगा ठाकुर साहेब, तुम्हारे सभ्य समाज का कोई भी आदमी गुड़िया को जीवन संगिनी बनाना नहीं चाहेगा।'

संजीवन काका ने बताया कि तब से ही जमींदार साहेब अपने हर दोस्त और जानने वाले से प्रार्थना कर रहे हैं कि वह अपने घर के किसी लड़के की शादी गुड़िया से करने को तैयार हो जाये। और बदले में वह सारे शख्स पिताजी का मखौल उड़ाकर कहते थे कि 'ठाकुर साहेब, नाचने वाली की लड़कियां नाच देखने के लिए ही ठीक हैं, शादी वादी की बात छोड़ो।'

हमारे रिवाज में बुआ के लड़के से किसी लड़की की शादी जायज मानी जाती है। इसलिए आज पिताजी बुआ के लड़के के सामने इसलिए गिड़गिड़ा रहे थे कि वह गुड़िया से शादी कर ले, पर बुआ ले लड़के ने भी पिताजी से यही कहा कि अगर वह चाहे तो गुड़िया का पहला मुजरा देख सकते हैं, पर उससे शादी, यह तो उनके ठाकुर रक्त के लिए एक गाली है।

मेरे लाख सोचने के बाद पिताजी की परेशानी दूर करने का एक ही उपाय नजर आया कि मैं छोटी अम्मा और गुड़िया से मिलूँ और गुड़िया को उस कोठे के दलदल से निकालने का कोई उपाय करूँ। अगर गुड़िया को कोठे की गन्दी जिंदगी से दूर करने का एक मात्र उपाय उसकी किसी अच्छे लड़के से शादी करना ही है तो मैंने मन ही मन सोचा कि अपने दोस्तों से बात करूँगा, शायद उनमें से कोई गुड़िया को तवायफ की बेटी होने के भंवर से निकालकर उसका हाथ थाम ले।

संजीवन काका से कोठे का पता और छोटी अम्मा की एक फोटो लेकर मैं शहर आ गया। यह फोटो काका ने पिताजी के एक पुराने अल्बम से निकालकर दी थी। फोटो में पिताजी और छोटी अम्मा साथ खड़े थे। पिताजी की गोद में एक तीन-चार महीने की बच्ची थी। यकीनन ये गुड़िया थी। फोटो काफी पहले की थी, पर मुझे इसके आधार पर ही उस कोठे पर पहुँचकर छोटी अम्मा को पहचानना था।

मैं क्लास अटेंड करने के बाद किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में था, जिससे मैं बिना हिचक उस कोठे का पता पूछ सकूँ, जहाँ छोटी अम्मा और उनकी बेटी रहती थी। तभी मैंने देखा सँजोत मेरे पास आकर खड़ी हो गई थी। आज उसकी संगीत की स्पेशल क्लास थी, इसलिए वह थोड़ा लेट आई थी, नहीं तो प्रायः मेरी और उसकी क्लास छूटने का टाइम लगभग एक ही था।

'वह आज देर से क्यों आई' यह मेरे पूछने से पहले ही उसने बता दिया था कि आज उसकी एक विशेष क्लास थी। फिर मेरी गांव की विजिट और पिताजी की परेशानी के बारे में उसने पूछा था। अपने पिताजी की परेशानी की हकीकत मैं सँजोत को बताकर उसे परेशान नहीं करना चाहता था। सँजोत अभी एक कमसिन टीनएज थी, शायद इन बातों से उसके दिल को झटका लगेगा, यही सोचकर मैंने विषय बदल के उसके बारे में पूछा था।

'तपस्वी मुझे कुछ खरीदना है, पर मै खरीद नहीं पा रही। क्या आप मेरे लिए लाके दोगे?'

'हाँ हाँ क्यों नहीं, बोलो क्या चाहिए तुम्हें?' मेरी आवाज में गजब का उत्साह था। मेरी आवाज में उत्साह का होना लाजिमी था आखिर सँजोत वह लड़की थी जो मुझे प्यार करती थी। प्रेयसी ने प्रेयस से पहली बार कुछ माँगा था। प्रेयसी प्रेयस से कुछ मांगे, मुहब्बत में ये पल प्रेयस के लिए अनमोल होता है।

'पर उसके पैसे मैं दूंगी।'

'पैसे में दूँ या तुम, क्या फर्क पड़ता है सँजोत।'

'नहीं तपस्वी, मैं तभी लूंगी जब आप उसके पैसे लेंगे, और हाँ ये मेरी शर्त है।' हालाँकि प्रेयसी की इस बात ने प्रेयस का उत्साह तनिक कम किया था, पर फिर भी प्रेयस हाँ कह दी। 'तपस्वी अब तक मैंने कभी ब्रा नहीं बाँधी है, कमीज ही पहनती आई हूँ। क्या आप..?' बात अधूरी छोड़कर सँजोत ने आँखें झुका ली थीं।

मैंने उसके गालो पर शर्म की लाली छलकते हुए महसूस की थी। मैं और सँजोत दोनों एक-दूसरे से बेपनाह प्यार करते थे। अब तक हमने हमने एक दूसरे को कई बार गले लगाया था एक दूसरे को चुम्बन दिए थे। घंटों एक-दूसरे का हाथ थामे हमने बातें की थी।

इन बातों में अंतरंग बातों की भी हिस्सेदारी थी, पर हम दोनों अब तक पवित्र थे। अब तक मैने सँजोत को बेलिबास नहीं देखा था। हमने एक-दूसरे से जो अंतरंग बातें की थी, उसके असर से सँजोत मुझसे अपने लिए ब्रा लाने की बात कह पाई थी। उसके गुलाबी होते गालों को अपनी ऊँगली से छूकर मैने कहा- 'मेरी भी एक शर्त है।'

'क्या?' उसने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें उठाकर मुझे देखते हुए पूछा।

'मुझे पहन के दिखाओगी।' मैंने अपने होठों पर हास्य लाते हुए कहा।

'धत्त!' कहकर उसने वापस सर झुका लिया। मैंने महसूस किया कि मेरी बात सुनकर उसके गालों का गुलाबीपन और बढ़ गया है। जब मैंने शरारत से उससे पूछा- 'तो पक्का न!' तो वह शर्म की ताब न ला सकी और वहां से तेज कदमों से लगभग भागते हुए हुए अपनी क्लास की ओर चली गई।

वह शाम जो रात की काली चादर ओढ़ चुकी थी और शहर की चमकती बिजली उसकी देह पर सितारों की तरह झिलमलाने लगी थी, मैंने उस शाम अपनी प्रेयसी के लिए ब्रा खरीदी थी। उसके गुलाबी गालों के रंग सी। उसकी क्लास छूटने पे उससे मिला और ब्रा का पैकेट उसकी और बढ़ा दिया, जिसे उसने होले से लेकर अपने बैग में रख दिया। हमने साथ में चाय पी और फिर वह चली गई।

उस शाम फिर मैने ब्रा को लेकर सँजोत को छेड़ा नहीं था। मै नहीं चाहता था मेरी प्रेमिका मेरी किसी बात से ओड फील करे। आखिर उसने मुझसे ब्रा खरीदने की बात इसलिए ही कही होगी, क्योंकि मैं उसके लिए सबसे सुरक्षित लगा हूँगा। मैं उसके विश्वास को खंडित नहीं करना चाहता था।

सँजोत के जाने के बाद मैने दुआ मांगी कि ये रात जल्दी ढले और मैं कल दिन के उजाले में अपनी छोटी माँ से मिल सकूँ। छोटी अम्मा जिस कोठे पे थी उसका पता चल गया था। शाम को सँजोत जब अपनी क्लास में चली गई थी, तो मैंने अपना समय सिर्फ दो कामों में लगाया था- एक तो सँजोत के लिए ब्रा खरीदने में और दूसरा छोटी अम्मा का पता मालूम करने में।

(अगले अंक में जारी)

रात में जागती आँखें

जयति जैन 'नूतन'

रात को बच्चे वह देख लेते हैं जो उन्हें नहीं देखना चाहिए! सोनल यानी चिंटू अब ५ साल का हो गया था, बच्चे आज कल अंग्रेजी माध्यम में पढ़ते हैं इसलिए पहली कक्षा में वह ५ साल के पहले नहीं आ पाते। आजकल बच्चे वैसे भी बहुत होशियार पैदा हो रहे हैं जिन्हें पैदाइश मोबाइल की समझ होती है, दूसरों के सामने आप उन्हें डांट नहीं सकते उनकी बेइज्जती हो जाती है, जबकि हम जब बच्चे थे तो मोहल्ले भर के सामने पीटते थे घरवाले दिखा-दिखाकर। चिंटू को उसके माँ बाप ने सारी सुविधाएं देकर रखी थीं, बच्चे को छोटा समझकर मिस्टर चौधरी और उनकी पत्नी उसे अपने पास ही सुलाते थे, जैसा अक्सर हर माँ बाप करते हैं। एक रोज मिस डिसूजा ने चिंटू के माँ बाप को स्कूल बुलाया और उनपर गुस्साई कि क्या सिखा रहे हैं आप लोग अपने बच्चे को? आप जानते भी हैं वह कैसी हरकतें करता है?

अपनी परवरिश पर दोनों को बहुत यकीं था, चिंटू में था भी नहीं कोई ऐब। वह तो वही बोलता-करता था जैसा वह घर पर देखता था। और उसके माँ बाप ने घर का माहौल स्वच्छ और शांत बनाकर रखा था। इसके बाद भी प्रिंसिपल की नाराजगी? आखिर हुआ क्या था? स्कूल २ बजे खत्म होता था और स्कूल के पास ही ढाई बजे से चिंटू की कोचिंग शुरू होती थी, रमेश चौधरी और सीमा जी को मिस डिसूजा ने २ बजे अपने घर बुलाया, दोनों बहुत परेशान कि आखिर चिंटू ने किया क्या है और मिस ने स्कूल में कुछ न बताकर घर बुलाया। ठीक २ बजे चिंताग्रस्त माँ-बाप मिस डिसूजा के घर पहुंचे, लेकिन मिस स्कूल से दस मिनट लेट आयीं और सॉरी बोलकर दोनों को छत पर लेकर गयी, जहाँ से चिंटू की कोचिंग साफ-साफ दिखाई देती थी, मिस डिसूजा के घर के ठीक ३ घर बाद वह कोचिंग थी. कुछ मिनट बाद चिंटू अपनी दोस्त के साथ छत पर आया और उसकी हरकतों को जब मिस के साथ उसके माँ-बाप ने देखा तो शर्मशार हो गए. डूब मरने के लिए चुल्लू भर पानी भी बहुत था उनके लिए।

उस वक्त चिंटू अपनी क्लासमेट पूर्वी के साथ छत पर आया और दोनों छत के एक छायादार कोने में बैठ गए, धीरे-धीरे नजदीकियां शुरू हुई। पहले हाथ पकड़ा फिर किस किया. चेहरे, होंठ, गर्दन... फिर आगे वह सब जो एक पति पत्नी के बीच सम्बन्ध बनते हैं, यानी शारीरिक सम्बन्ध बनाने की पुरजोर कोशिश। पीछे से कोचिंग टीचर ने छुपकर आवाज दी सोनल... यह आवाज मिस डिसूजा के इशारे पर दी गयी थी। क्योंकि मिस डिसूजा ने यह बात सोनल-पूर्वी की कोचिंग टीचर को बता दी थी ये कोचिंग टीचर उसी स्कूल की थीं जहाँ दोनों पढ़ते थे।

आवाज सुनकर सोनल पूर्वी घबरा गए और तुरंत अपने कपडे पहनकर नीचे चले गए, ऐसा नहीं था कि सिर्फ सोनल ही ये बातें सीखा था, पूर्वी भी कहीं ना कहीं रात के अँधेरे में होने वाली घटनाओं को देख रही थी, इसलिए वह सोनल के साथ बिलकुल सहज थी। मिस डिसूजा ने पूर्वी के माँ-बाप को नहीं बुलाया था क्योंकि वह जानती थी कि यदि पूर्वी के माँ-बाप आये तो वह ये कभी नहीं मानेंगे कि दोनों बच्चे इसमें बराबरी के हकदार हैं, दोनों जिम्मेदार हैं। वह सोनल को दोषी ठहराएंगे और कोई कड़ी कार्यवाही भी कर सकते हैं। मिस डिसूजा नहीं चाहती थी कि सोनल और पूर्वी के माँ-बाप आमने-सामने आएं क्योंकि इस स्थिति में दोषारोपण पहले होगा और समस्या वहीं की वहीं रहेगी। इसलिए कोचिंग टीचर की छत पर मिस डिसूजा ने कैमरा लगवा दिया और वीडियो रिकॉर्ड हो गयी, जिसे दूसरे दिन पूर्वी के माँ बाप को दिखानी थी।

रमेश और सीमा जी ने जब यह सब अपनी आँखों से देखा तो पैरों तले की जमीं खिसक गयी कि उनके दिमाग में यह कैसे नहीं आया कि उनके रात के सम्बन्ध उनके बच्चे से नहीं छुप सकते, खासतौर पर जब बच्चे माँ बाप के साथ एक ही कमरे में रहते हों। कभी न कभी रात को बच्चे की आँख खुल ही जाती है

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

(पृष्ठ २१ का शेष)

कहानी : मुक्ति

डूबा था उसे मेघना और बिट्टू की चिंता हो रही थी उसे चिंता से घिरा देख कर सुधीर ने उसे कहा 'विनय यूं सोचने से कुछ नहीं होगा। बेहतर है तुम अभी घर जाओ और कुछ उपाय करो देखो बादल कितने चढ़े हैं जो बारिश शुरू हुई तो मेघना और बिट्टू परेशान होंगे।' 'आप सही कह रहे हो भैया मैं अभी जाता हूं' कहकर उसने अपनी बाइक उठाई और तेजी से घर की ओर रवाना हो गया।

रास्ते में ही बूंदा बांदी शुरू हो गई थी वो जल्दी जल्दी घर पहुंचा, घर पहुचते ही मेघना ने कहा, 'अच्छा हुआ तुम चाबी लेकर आ गए विनय। देखे कैसा बरसात चढ़ी है अब जल्दी से मुझे चाबी दो तो मैं ताला खोलकर सफाई कर दूं।' 'चाबी? कहां है चाबी तो मेघना सविता भाभी ने कूंए में फेंक दी।' विनय हताश होते हुए बोला 'पर तुम चिंता मत करो मैं तुम्हें कभी परेशान नहीं होने दूंगा।' ये कहकर विनय छत पर गया और छत से नीचे आने वाली नाली के मुंह पर एक ईंट लगाकर आ गया फिर नीचे आकर बारिश का इंतजार करने लगा जब बारिश शुरू हुई तो ईंट लगी होने की वजह से नीचे आने वाले पानी का बहाव कम था और धीरे-धीरे आने की वजह से पानी घर में नहीं घुस रहा था। ये समस्या तो सतही तौर पर ही सही पर सुलझ गई थी। बारिश का मौसम भी चला गया और हल्की हल्की सर्दी की शुरुआत हो गई थी।

कुछ दिनों से मेघना को लग रहा था कि सविता के कमरे से कुछ खटरपटर की आवाजें आ रही हैं। उसने विनय को ये बात बताई तो एकबार उसे यकीन नहीं हुआ पर सर्दियों के दिनों में पंखे बंद होने की वजह से हल्की सी आवाजें भी सुनाई देती हैं। उस रात विनय ने भी दूसरे कमरे से आती हुई आवाज सुनी और उसने अनुमान लगाया कि बंद कमरे में चूहों के सिवाय और कोई नहीं घुस सकता। उसने ये बात सुधीर को बताई और उसने सविता को, गांव से आलोकनाथजी और विमला भी आ गए। विमला ने कहा 'कहां है चाबी दरवाजा खोलो जल्दी।' 'चाबी तो आपकी लाडली बहू ने कूंए में फेंक दी मां!' सुधीर ने सविता की ओर गुस्से से देखते हुए कहा और फिर कमरे का ताला तोड़ा गया तो सारे कमरे में चूहों की लींडियां पड़ी थीं और सविता को दहेज में मिली अलमारी और ड्रेसिंग टेबल कमरे में जो भी समान था सब चूहों ने गंदा कर दिया था।

ये सब देखकर सविता की चीख निकल गई। वो चीखते हुए बोली 'हे भगवान सत्यानाश जाए इन मरे चूहों का मेरा सारा सामान खराब कर दिया। जरूर इस चुड़ैल ने कोई टोना टोटका किया होगा, नहीं तो ये चूहे भीतर केसे आते?' 'बस करो सविता बहू! आज तक हम सब तुम्हारी मनमानियों और ज्यादतियों को देखकर भी चुप रहे ये हमारी गलती थी कि हमने कभी मेघना का साथ नहीं दिया। पर जिसका कोई नहीं होता उस पर भगवान की कृपा होती है। तुम अच्छी तरह से जानती थीं तुम्हारे जाने के बाद बारिश में मेघना बहू को परेशानी होगी, फिर भी तुमने चाबी नहीं दी और तो और चाबी कूएं में फेंक दी। तुम्हारी सास की वजह से मैं भी चुप रहा, पर जिसके मददगार भगवान हों उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ये देखो चूहे पहले वाशबेसिन के पाइप को काटकर बाथरुम में घुसे, फिर बाथरुम के दरवाजे में छेद करके कमरे में आ गए।' आलोकनाथ जी ने कहा।

'ये तो एक तरह से चमत्कार ही है सचमुच मेघना बहू पर ईश्वर की कृपा है।' विमला ने मेघना के सर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा ओर बिट्टू को गोद में लेकर प्यार करने लगी। सविता का ढोंग और चापलूसी का साम्राज्य अब ध्वस्त हो चुका था, इसलिए उसने अपना बाकी बचा हुआ सारा सामान समेटा और कमरा पूरी तरह खाली कर दिया।

सबके जाने के बाद विनय ने मेघना से कहा 'छोटे छोटे चूहों ने कमाल कर दिया मेघना अब तुम्हें कभी बारिश में परेशान नहीं होना पड़ेगा।'

'वो तो ठीक है विनय पर ये क्या अच्छा लगता है भैया भाभी किराए के मकान में रहें और हम घर के मकान में?' 'हमने उन्हें कभी घर से जाने के लिए नहीं कहा मेघना और फिर भाभी के दिल में तुम्हारे लिए जलन और नफरत के सिवा कुछ नहीं है, इसलिए उनके लिए दिल छोटा मत करो।' ■

प्रदूषण के साथ सेल्फी

देवेन्द्र राज सुथार

देश की राजधानी में इन दिनों फोग चल रहा है। दिल्ली ठंड के साथ प्रदूषण के कारण भी कांप रही है। प्रदूषण काल बनकर दिल्ली की सड़कों पर नंगा नाच कर रहा है। इस बीच दिल्ली में एक नये अभियान का शुभारंभ हो गया है। इस अभियान का नाम 'सेल्फी विद डॉटर' की तर्ज पर 'सेल्फी विद प्रदूषण' रखा गया है। जनसेवक बारी-बारी से अपनी महंगी कार से उतरकर प्रदूषण के साथ सेल्फी खींचकर दुःख जता रहे हैं। कुछ जनसेवक तो ऐसे भी जिन्होंने अपना बोरियां बिस्तर पहले ही पैक कर लिया है। न जाने कब जान बचाकर भागना पड़े। इनसे ज्यादा सच्चा जनसेवक ओर कौन होगा? बेचारी आम पब्लिक का जीना दूभर हो रहा है। कुछ लोगों का कहना है कि इससे तो अच्छी गुलामी थी, खुलकर सांस तो ले सकते थे। आज तो प्रदूषण के मारे वो भी लेना हाथ की बात नहीं रही। दिल्ली में प्रदूषण इतना क्यों बढ रहा है? क्योंकि प्रदूषण मुक्त भारत का वायदा किसी पार्टी के मेनिफेस्टो में शामिल नहीं है।

दरअसल, नेता भी प्रदूषण के लिए कम जिम्मेदार नहीं है। जितना प्रदूषण वाहन के धुएं से नहीं होता, उतना तो प्रदूषण नेताओं के भाषणों से होता है। कितना चिल्लाते हैं ये लोग। इस ध्वनि प्रदूषण से ही दिल्ली जरा ऊंचा सुनती है। प्रदूषण पर आरोप-प्रत्यारोप का खेल शुरु हो गया है। खबरिया चैनलों पर एयर कंडीशनर चैंबरों में बैठे पार्टी के प्रचारक अपने को और अपनी पार्टी को सबसे बडा पर्यावरण प्रेमी बताने में ऐड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं। बीजेपी वाले कह रहे हैं- प्रदूषण तो कांग्रेस के समय से फैलता आ रहा है। हमारे मोदी जी तो विदेशों में थे, जब दिल्ली में प्रदूषण बढ़ रहा था। तो वहीं कांग्रेस वाले कह रहे हैं- प्रदूषण तो बीजेपी वालों की ही देन है। हमने तो इस बार पटाखे भी नहीं फोडे, फिर भी सारा दोष हम पर मढ़ा जा रहा है।

वहीं दो बिल्लियों के बीच बंदर का काम करने वाली आम आदमी पार्टी दोनों को आपस में लड़ाकर प्रदूषण मुक्त भारत का दम भर रही है। क्योंकि ऑड इवन के जनक तो ये ही हैं। इन्द्रप्रस्थ नरेश अरविंद केजरीवाल इस गंभीर समस्या पर इतने गंभीर है कि उन्होंने प्रदूषण के बढ़ते कहर को देखकर अपने गले के मफलर को मुंह पर बांध दिया है। 'अपना काम बनता, भाड में जाएं जनता' का नारा इन्होंने ही तो दिया है। प्रदूषण के बढ़ने के कारण बाबा रामदेव भी व्यथित दिख रहे हैं। बाबा जल्द ही पतंजलि खिचड़ी के साथ प्रदूषण मुक्त वाहन पतंजलि कार को मार्केट में लांच कर देंगे, जो पेट्रोल-डीजल से नहीं चलकर गंगाजल से चलेगी।

खैर! आपने एक बात नोटिस की क्या? आखिर दिल्ली में ही बार-बार प्रदूषण पेट्रोल और डीजल के भावों की तरह क्यों उछाल मार रहा है? क्योंकि दिल्ली में पाप बढ़ रहा है। दिल्ली पापियों की धरती हो चुकी है। यह प्रदूषण तभी मिटेगा जब पापियों की संख्या कम होंगी। इन पापियों की संख्या कम कौन करेगा? क्या बाजार में इनके लिए भी कोई डी.डी.टी का छिडकाव उपलब्ध है? इनका इलाज तो जनता ही कर सकती है। यदि जनता को अपनी जान बचानी है तो अगले चुनाव में ऐसे नेता को वोट दे जो प्रदूषण मुक्त का वायदा करे। जो सेल्फी प्रेमी न होकर असल मायनों में प्रकृति प्रेमी हो। जिस ताजी हवा ने आपको प्रसन्नचित्त किया। आपकी प्रेमिका की जुल्फें उड़ाई और उन्हें उड़ती जुल्फों को देखकर आप शायर बने, आज वही हवा आपके लिए फांसी का फंदा बनती जा रही है, क्योंकि आप भी इसके लिए कम दोषी नहीं है। आपने भी सुबह-सुबह लोटा लेकर खेत की मेंढ़ पर मृदा की उर्वरक क्षमता बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। ■

(पृष्ठ ४ का शेष)

सहिष्णुता

धर्मों ने भी यहाँ धर्मान्तरण का खेल खेला और हम सहिष्णु बने रहे। लेकिन क्या कोई कमजोर व्यक्ति, समाज राष्ट्र स्वयं सहिष्णु कहलाने का अधिकारी है? नहीं। सहिष्णु केवल वह हो सकता है जो सक्षम तो है मगर दूसरे की गलती पर क्षमा करने की प्रवृति रखता है। आप ताकतवर हैं किन्तु आक्रांता नहीं हैं, आपका सिद्धांत हो खुद भी जियो और जीने दो, आप तभी सहिष्णु कहलाने के अधिकारी हैं। कविवर रामधारी सिंह दिनकर की निम्न पंक्तियाँ यहाँ पूर्णतया प्रासंगिक हैं-

क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो,
उसको क्या जो दन्तहीन, विषरहित, विनीत सरल हो।

(पृष्ठ २८ का शेष)

कहानी : विंडो सीट

संयत कर, उसने समीर से बस इतना ही कहा- 'वो समीर मर गया जिससे मैं प्यार करती थी और अजनबियों से बात करना अब मैंने छोड़ दिया है।' इतना कहकर उसने समीर की सीट खाली कर दी। बाकी का सफर, साथ-साथ पर अजनबियों की तरह कटा। कई बार लगा समीर कनखियों से उसकी तरफ देख रहा है, पर बात करने की हिम्मत न जुटा पाया।

समीर को नागपुर उतरना था। स्टेशन पर उतरकर समीर ने इक बार फिर सुरभि की तरफ देखा तो सुरभि भी हल्के से मुस्कुरा दी। ट्रेन ने फिर से गति पकड़ ली थी। खिड़की के शीशे से सुरभि समीर को जाते हुए देख रही थी। दिल ही दिल में उससे फिर कभी न मिलने की दुआ करते हुए। ■

(पृष्ठ ३० का शेष)

कहानी : रात में जागती आँखें

और सोनल-पूर्वी की हरकते साफ इशारा कर रही थी कि एक-दो बार ही नहीं कई बार उन्होंने अपने माँ बाप को ऐसे देखा था, तभी उन्हें शुरुआत से लेकर आखिर तक सब याद था। उन्हें ये पता था कि ऐसा-ऐसा होता है, लेकिन दोनों इस बात से अंजान कि यह सब है क्या? क्यों है?

शर्मिंदगी का चोला ओढ़कर रमेश-सीमा जी घर पहुंचे, लेकिन जाने से पहले मिस डिसूजा ने दोनों को हिदायत दी कि बच्चे से कुछ बोलना या उसे मारना कोई विकल्प नहीं है उसे सुधारने का। उसके लिए एक छोटा सा कमरा तैयार करवाइये, जहाँ उसकी पसंद की सारी चीजें हों, मोबाइल-लेपटॉप से दूर रखिये। जिंदगी जीने के सही तरीके और मायने समझाइये। बच्चा शुरुआत में परेशान जरूर करेगा अलग सोने के लिए खासतौर पर जब, वह रात में सारी चीजें होते हुए देखता है। उसे उसके कमरे में सुलाइये फिर अपने कमरे में आइये। जरूरत है तो बच्चे के बिस्तर के पास एक घंटी लगा दीजिए, जो आपके कमरे में बजे, इससे फायदा ये होगा यदि वह जागेगा या डरेगा तो तुरंत आपको बता देगा घंटी बजाकर।

दूसरे दिन पूर्वी के माँ बाप को स्कूल बुलाया गया, लेकिन वह इस बात पर यकीं करने को तैयार नहीं हुए कि पूर्वी भी इसमें बराबरी की जिम्मेदार थी। पहले से ही यह शंका थी मिस डिसूजा को इसीलिए अलग-अलग दिन दोनों के माँ बाप को बुलाया उन्होंने। उन्हें वीडियो दिखाया गया, मिस डिसूजा और कोचिंग टीचर के समझाने और सख्त रवैया अपनाने के बाद पूर्वी के माँ बाप समझे। उन्हें भी मिस डिसूजा ने वही समझाया जो रमेश-सीमा जी को समझाया था।

साथ ही मिस डिसूजा ने एक दिन बाद ही सारे टीचर, डायरेक्टर से बात करके लड़के-लड़कियों के अलग-अलग सेक्शन बना दिए। अब एक क्लास में लड़के और दूसरी क्लास में लड़कियां पढ़ेंगी। दूसरी ओर सच जानकर तनाव में डूबे दोनों के माँ बाप ने घर पर एक-एक अलग कमरों की व्यवस्था कर दी ताकि आगे से बच्चे वह न देखें, जो उनके लिए नहीं है! ■

(पृष्ठ २६ का शेष)

काशी शास्त्रार्थ

बाद वे शास्त्रार्थ स्थल आनन्दबाग में शास्त्रार्थ आरम्भ होने के समय ४ बजे से पूर्व पहुंच गये थे।

यह लेख पर्याप्त विस्तृत हो गया है। हम इस लेख में स्वामी दयानन्द जी के विपक्षी विद्वानों से हुए प्रश्नोत्तर भी देना चाहते थे परन्तु विस्तार भय से नहीं दे रहे हैं। इतना ही महत्वपूर्ण है कि काशी के पण्डितों ने वेदों से मूर्तिपूजा का कोई प्रमाण न देकर विषयान्तर करके भटकाने का प्रयत्न किया। स्वामी जी के सभी प्रश्नों, धर्म व अधर्म मनुस्मृति के अनुरूप लक्षण या उत्तर भी वे न बता पाये। शास्त्रार्थ चल ही रहा था कि पं. विशुद्धानन्द शास्त्री जी ने अपनी विजय घोषित कर दी और शास्त्रार्थ स्थल से अपने अनुयायियों की भीड़ के साथ ढोल-बाजे बजाते हुए चले गये। पराजय में भी उत्सव मनाना हमारे पौराणिक विद्वानों को आता है। ■

डॉ रमा द्विवेदी को मिला 'महादेवी वर्मा सम्मान'

नई दिल्ली। युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच (न्यास) का चतुर्थ अ.भा. साहित्य महोत्सव दि १६ नवम्बर को रेलवे अधिकारी क्लब, नई दिल्ली-१ के सभागार में संपन्न हुआ। श्री जितेंद्र निर्मोही (वरिष्ठ साहित्यकार, कोटा) की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ इंदु शेखर तत्पुरुष (अध्यक्ष, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर), प्रमुख अतिथि प्रो सरन घई (अध्यक्ष, विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा) एवं विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार एवं समाजसेवी डॉ अशोक मैत्रेय, श्री हरिसुमन विष्ट (सचिव, भोजपुरी अकादमी, दिल्ली), डॉ देवनारायण शर्मा (अध्यक्ष देशज हिंदी समिति) डॉ रमा द्विवेदी (वरिष्ठ साहित्यकार, हैदराबाद) डॉ रामकुमार चतुर्वेदी (कवि-व्यंग्यकार, मध्य प्रदेश) मंचासीन हुए। अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की पूजा अर्चना एवं दीप प्रज्ज्वलन से तथा मंजू वशिष्ठ की सरस्वती वंदना से समारोह का शुभारम्भ हुआ।

अध्यक्ष राम किशोर उपाध्याय द्वारा अतिथियों के स्वागत के पश्चात महासचिव् ओमप्रकाश शुक्ल ने संस्था की गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा मंच की स्मारिका और श्री ओमप्रकाश शुक्ल रचित काव्य संग्रह 'गांधी और उनके बाद' का विमोचन सभी अतिथियों द्वारा किया गया। समारोह में 'महादेवी वर्मा श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान- २०१७' वरिष्ठ साहित्यकार डॉ रमा द्विवेदी को दिया गया। अन्य कई साहित्यकारों को भी विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। ■

श्री सत्यनारायण गोयल स्मृति कवि सम्मेलन

आगरा। छविरत्न श्री सत्यनारायण गोयल स्मृति कवि सम्मेलन का आयोजन आलोक सभा द्वारा ५ नवम्बर को विद्यारानी सभागार पंचकुइयां आगरा पर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ द्वीप प्रज्ज्वलन कर विश्व विख्यात कवि बाबा सत्यनायण मौर्य व कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे आदरणीय सोम ठाकुर ने किया। कार्यक्रम में आगरा शहर के ४३ उदीयमान कवियों व कवित्रियों ने भाग लिया। इन कवियों की कविताओं ने निर्णायक मंडल को बहुत प्रभावित किया।

इस अवसर पर पधारे बाबा सत्यनारायण ने कहा कि आगरा के कवियो ने बहुत प्रभावित किया उन्होंने उदयीमान कवियों को बताया कि अकेले कविता के दम से ही आगे नहीं बढ़ा जा सकता कविता की प्रस्तुति, हिम्मत और समर्पण से ही आगे बढ़ा जा सकता है। कविवर सोम ठाकुर ने कहा कि सत्यनारायण जी की याद में इस प्रकार के आयोजन से नयी प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिलेगा।

कवि रामेन्द्र त्रिपाठी जी ने कहा-

वक्त और किस्मत पर जो सवार होते हैं
उनके चाहने वाले एक नहीं हजार होते हैं

कार्यक्रम में डॉक्टर ज्योत्सना शर्मा, संजय गोयल, राजेश अग्रवाल, अशोक अग्रवाल, रवि धर, विजय गोयल, धीरज गोयल, राधा बल्लभ अग्रवाल, व्यास चतुर्वेदी आदि बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सुशील सरित ने किया। कार्यक्रम में कवियित्री आंश्वना सक्सेना, आराधना भास्कर और कवि राकेश निर्मल को पुरस्कृत किया गया। ■

कवि-शायर डॉ डी एम मिश्र को दो सम्मान

लखनऊ। प्रख्यात कवि-शायर डी एम मिश्र को एक ही सप्ताह में दो सम्मानों से नवाजा गया। उन्हें १६ नवम्बर १७ को प्रेसक्लब हजरतगंज लखनऊ में अति विशिष्ट सृजन सम्मान-२०१७ से नवाजा गया। सृजन सम्मान उन्हें प्रेस क्लब के सचिव जेपी तिवारी की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में प्रदान किया गया। इस अवसर पर अनेक ख्यातलब्ध साहित्यकार, कवि, लेखक व प्रत्रकार उपस्थित थे।

सृजन के संस्थापक व जाने-माने हास्य कवि सर्वेश अस्थाना, वरिष्ठ गीतकार डॉ. सुरेश, भोलानाथ अधीर एवं मुकुल महान ने अंगवस्त्र व स्मृतिचिह्न देकर उन्हें सम्मानित किया। फिर चर्चित युवा कवि अभय सिंह निर्भीक के संयोजन एवं सौरभ शशि के सूंचालन में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया गया जिसमें सर्वेश अस्थाना, डॉ सुरेश, मुकुल महान, अशोक झंझटी, संध्या सिंह, साहिल लखनवी, संतोष सिंह, देवकीनन्दन मिश्र, सुभाष चन्द्र रसिया, अमन चांदपुरी, हरि फैजाबादी, अभय निर्भीक, अशोक अवस्थी, क्षितिज श्रीवास्तव, अनुराग मिश्र जैसे कवियों ने काव्यपाठ किया। डॉ डी एम मिश्र की कविताओं और

गजलों को काफी देर तक श्रोताओं नें सुना और सराहा।

इससे पहले ११ नवंबर को मुस्तकीम इंटर कालेज ज्ञानीपुर की ओर से क्षत्रिय भवन सुलतानपुर के सभागार में डॉ डी एम मिश्र को उनकी उर्दू अदब की सेवा के लिए में परस्तामराने उर्दू की ओर से मोहसिन-ए-अदब फिराक गोरखपुरी एवार्ड से सम्मानित किया गया। यह एवार्ड प्रो डॉ वजहुल कमर के कर कमलों से दिलाया गया। इस अवसर पर डॉ अंजुम लखनवी की किताब शिकवा जवाबे शिकवा का विमोचन भी हुआ। ■

कार्टून -- श्याम जगोता

जय विजय मासिक
कार्यालय- ए-१०७, इलाहाबाद बैंक अधिकारी आवास, हजरतगंज चौराहा, लखनऊ-२२६००१ (उप्र)
मोबाइल-9919997596; **ई-मेल-**jayvijaymail@gmail.com; **वेबसाइट-**www.jayvijay.co
सम्पादक- विजय कुमार सिंघल
'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।